कंचनजंगा पर्वत

परम अंतरा

ज़मीन और आसमान की कहानी

हेमांगन अमदावादिआ

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Hemangan Amdavadia 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-799-5

Cover design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: August 2026

यह परम अंतरा कहानी लेखक के दिलोदिमाग से निकली एक सोच है, जिसे कुछ काल्पनिक और वास्तविक बातो को मिलाकर लिखा गया है। इसका विषय रहस्यमयी है। परम अंतरा कहानी थीयरी के रूप में नहीं, बल्कि अलग-अलग सीन के रूप में लिखी गई है जो एक से लेकर अट्ठासी सीन तक लिखे गए हैं, ताकि पढ़ने वालों को पढ़ते समय थकान महसूस न हो। लेखक ने इस परम अंतरा कहानी को एक नए तरीके से लिखने की कोशिश की है, जिसे आप स्क्रिप्ट भी कह सकते हैं।

हमें उम्मीद है। "परम अंतरा" कहानी हर पढ़ने वाले को एक नए रोमांचक और रहस्यमयी सफ़र की ओर ले जाऐगी।

नमस्ते

।। श्री गणेशाय नम ।।

स्क्रिप्ट
कहानी
परम अंतरा
लेखक का नाम
हेमांगन अमदावादिआ

यह कहानी दो लोगो की है । एक परम और दुसरी अंतरा । जमीन और आसमान की प्रेमकहानी जो प्यार की एक अलग परिभाषा दिखाती और सिखाती है । अनेक रहस्य से परिपूर्ण ये कहानी आज के मनुष्य को नेक और दिलो-दिमाग से सुंदर बनाती है ।

क्रम	नाम	आयु	पात्रो
1	परम	25	नायक
2	अंतरा	22	नायिका
3	डेविड जोन	30	विदेशी पर्यटक
4	पठान अवतारसिंह	28	कस्बे का रहेवासी
5	बुजुर्ग रतनसिंह	90	कंचनजंगा के बारे मे जानकार
6	अमरसिंह ठाकुर	40	कस्बे का मुखिया
7	गोविंद आहुजा	30	डोक्टर
8	ग्याराह लोगो की टीम	28-35	रिसर्च की टीम
9	रीटा चौधरी	22	पाठशाला की शिक्षिका
10	मोना शर्मा	24	पाठशाला की शिक्षिका
11	कोमल त्रिपाठी	25	पाठशाला की शिक्षिका
12	रविन्द्र शुक्ला	28	पाठशाला के शिक्षक
13	निरव जोशी	22	पाठशाला के शिक्षक
14	विमल उपाध्याय	30	पाठशाला के शिक्षक
15	गोविंदराय माथुर	46	विधाधन चेरीटेबल चेरमेन अध्यापक
16	किशन पहेलवान	27	कंचनजंगा के टेडेमेडे रास्तो के जानकार
17	अब्दुल शेख	33	कंचनजंगा के टेडेमेडे रास्तो के जानकार
18	अमन	11	बालपात्रो
19	नैना	09	बालपात्रो
20	रोशन	15	बालपात्रो
21	तमन्ना	12	बालपात्रो
22	पाठशाला के बच्चे	1-16	सौ
23	भीमा	22	चाय की दुकानवाला
24	योगी महाराज	55	कंचनजंगा और हिमशीला के जानकार
25	व्यापारीगण	30-36	कंचनजंगा के नीचे कस्बे के छोटे-बडे दुकानदार

देशकाल और वातावरण (लोकेशन)

1. कंचनजंगा - हिमआच्छादित पर्वतीय विस्तार
2. क्सबा - दौसो तीनसो लोगो का
3. एक बडा सा वटवृक्ष - कस्बे के थोडे बहार (कुदरती)
4. चाय की दुकान - कस्बे के थोडे दुर औऱ कंचनजंगा के नीचे ठीक वटवृक्ष के सामने
5. पाठशाला - कक्षा 1 से लेकर कक्षा साँत तक
6. गहरा हुआ - आधा पानी से भरा
7. छोटी बडी दुकाने - कस्बे मे रहेनेवाले छोटेबडे व्यापारीओ की
8. एक बडी सी टेडी-मेडी चट्टान- जिस पर रस्सी के सहारे चढा जा सके (कुदरती)
9. एक बडी सी हिमशीला - कुदरती
10. एक छोटा सा अस्पताल
11. एक भव्य सेट - आसमान के परियो का देश
    - एक बडासा दरवाजा
    - सुंदर फुलो का खिला बाग, फुलो का झुला
    - दो हँसो का जोडा
    - एक सुंदर कमल के फुलो से खिला सरोवर
    - शिव का मंदिर
12. विनस (शुक्र ग्रह का सेट)
    - एक सुंदर सा तालाब
    - सात सुंदर से बडे कमल पुष्प

अनुक्रमणिका

सीन-1 आउटडोर लोकेशन कुदरत टाईम-सुबह एकशन 1
सीन-2 आउटडोर, लोकेशन-कंचनजंगा, टाईम, सुबह 2
सीन-3 आउटडोर, लोकेशन चाय की दुकान, टाईम सुबह-एकशन 3
सीन-4 ईनडोर-लोकेशन रतनसिंह का घर, टाईम-शाम 5
सीन-5 आउटडोर, लोकेशन कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष टाईम-सुबह.................. 6
संक्षिप्त :सीन-6 आउटडोर, लोकेशन कंचनजंगा-टाईम -: रात 8
सीन-7 ईनडोर-लोकेशन :रतनसिंह का घर, टाईम दोपहर 9
सीन-8 आउटडोर-लोकेशन-पाछशाला, टाईम सुबह..12
सीन-9 ईनडोर, लोकेशन पाठशाला, टाईम दोपहर (बारँह से पाँच) 13
सीन-10 आउटडोर, लोकेशन पाठशाला, टाईम सुबह (सात से नव) 14
सीन-11 ईनडोर, लोकेशन मुखिया का घर, टाईम-शाम 16
सीन-12 ईनडोर, लोकेशन पाठशाला, टाईम दोपहर...18
सीन-13 आउटडोर-लोकेशन-पाठशाला के बहार-टाईम-सुबह 20
सीन-14 आउटडोर-लोकेशन-कस्बे के मंदिर के बहार गहरा कुँआ)
आधा पानी से भरा (टाईम-सुबह 22
सीन-15 आउटडोर-लोकेशन पाठशाला के बहार छोटा स्टेज-टाईम-दोपहर 25
सीन-16 ईनडोर-लोकेशन मुखिया का घर, टाईम-शाम...27
सीन-17 ईनडोर-लोकेशन-रतनसिंह का घर टाईम-शाम 31
सीन-18 आउटडोर-लोकेशन-कस्बा-टाईम-दोपहर 33
सीन-19 आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा-टाईम-सुबह...35
सीन-20 आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा, टाईम-रात 38
सीन-21 आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा-टाईम-सुबह...40
सीन–22 आउटडोर लोकेशन -कंचनजंगा - टाईम-रात..42

सीन-23 ईनडोर-लोकेसन-कस्बा-टाईम-दोपहर 44
सीन-24 आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा-टाईम-सुबह..46
सीन-25 आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा-टाईम-रात..49
सीन-26 आउटडोर-लोकेशन-हिमशीला-टाईम-सुबह..51
सीन-27 आउटडोर-लोकेशन-हिमशीला-टाइम-रात...52
सीन-28 आउटडोर-लोकेशन-आसमान की परियों का देश-टाईम-सुबह 54
सीन-29 आउटडोर-लोकेशन-आसमान की परियो का देश-टाईम-सुबह 56
सीन-30 आउटडोर-लोकेशन-आसमान की परियो का देश-टाईम-सुबह 58
सीन-31 ईनडोर-लोकेशन-पाठशाला-टाईम-दोपहर 60
सीन-32 आउटडोर-लोकेशन-आसमान की परियो का देश-टाईम-सुबह 62
सीन-33 आउटडोर-लोकेशन आसमान की परीयों का देश-टाईम-शाम............65
सीन-34 आउटडोर लोकेशन आसमान की परियो का देश-टाईम-रात 69
सीन-35 आउटडोर-लोकेशन-परियो का देश-टाईम-सुबह..................................72
सीन-36 आउटडोर-लोकेशन-आसमान की परियो का देश टाईम-शाम............75
सीन-37 आउटडोर-लोकेशन-कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष टाईम-सुबह.............78
सीन-38 ईनडोर-लोकेशन अस्पताल-टाईम-सुबह 80
सीन-39 ईनडोर-लोकेशन अस्पताल-टाईम-दोपहर..82
सीन-40 आउटडोर-लोकेशन-कस्बा टाईम-सुबह...85
सीन-41 आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा-टाईम दोपहर 87
सीन-42 आउटडोर-लोकेशन परम के धर की छत, टाईम-रात)
(चाँदनी रात)...89
परम अंतरा 2 –...93
सीन-43 आउटडोर. लोकेशन, बस स्टोप, टाईम, सुबह...94
सीन-44 ईनडोर , लोकेशन, पाठशाला की ओफिस , टाईम-दोपहर 96
सीन-45 ईनडोर,लोकेशन, बुजुर्ग रतनसिंह का घर टाईम-शाम 98
सीन-46 आउटडोर, लोकेशन, पाठशाला का मैदान, टाईम – सुबह................. 100

सीन-47-ईनडोर, लोकेशन, म्युजीयम, टाईम-सुबह.. 101
सीन-48 ईनडोर, लोकेशन-परम का घर, टाईम-शाम.. 104
सीन-49 ईनडोर-लोकेशन होटल का रुम-रात.. 106
सीन-50 आउटडोर, लोकेशन, अखाडा, टाईम-सुबह.. 107
सीन-51 आउटडोर,लोकेशन परम के घर की छत-टाईम शाम........................ 109
सीन-52 ईनडोर, लोकेशन – परम का धर - टाईम-सुबह................................. 112
सीन-53 आउटडोर, लोकेशन-कस्बा, टाईम-सुबह 113
सीन-54 ईनडोर-लोकेशन-परम का घर, टाईम-शाम 115
सीन-55 आउटडोर, लोकेशन-अखाडा, टाईम-सुबह.. 118
सीन-56 ईनडोर-लोकेशन-अंधेरा कमरा, टाईम-शाम ।................................... 120
सीन-57 ईनडोर-लोकेशन, शंशाक का घर-टाईम – सुबह................................ 122
सीन-58 लोकेशन-वाई न्युझ चैनल का औफिस, टाईम-सुबह ।....................... 123
सीन-59 आउटडोक. लोकेशन –बस स्टोप(बेस्ट)टाईम – दोपहर य़................. 124
सीन-60 ईनंदोर, लोकेशन-होटल का रुम-टाईम-सुबह ।................................. 126
सीन-61 ईनडोर, लोकेशन- एक कमरा, टाईम-शाम 130
सीन-62 आउटडोर-लोकेशन-वटवृक्ष, टाईम-सुबह 132
सीन-63 आउटडोर, लोकेशन- परम के घर की छत, टाईम-शाम.................... 134
सीन-64 ईनडोर, लोकेशन-पाठशाला की ओफिस, टाईम-सुबह...................... 137
सीन-65 ईनडोर, लोकेशन– मुंबई (होटल), टाईम – शाम................................. 140
सीन-66 ईनडोर-लोकेशन-पाठशाला की क्लासरुम, टाईम-सुबह.................... 144
सीन-67 ईनडोर-लोकेशन-पाठशाला का मीटींगरुम,
टाईम –दुसरे दिन सुबह.. 146
सीन-68 आउटडोर, लोकेशन-संमुन्दर(जुहु), टाईम-शाम................................. 149
सीन-69 ईनडोर, लोकेशन-परम का घर, टाईम-दोपहर ।................................. 152
सीन-70 आउटडोर ,लोकेशन-कस्बे का वटवृक्ष ,टाईम-शाम ।........................ 154
सीन-71 आउटडोर, लोकेशन-परम के घर की छत, टाईम-रात....................... 155

सीन-72 ईनडोर-लोकेशन-पठान अवतारसिंह का घर, टाईम-दोपहर ।........... 157

सीन-73 आउटडोर ,लोकेशन-कस्बे का गहरा कुँआ-समय– शाम.................. 159

सीन-74 ईनडोर-लोकेशन-पाठशाला (मीटींग रुम), टाईम – सुबह ।.............. 161

सीन-75 आउटडोर, लोकेशन, कस्बे मे मेला, टाईम- सुबह से शाम ।............. 163

सीन-76 ईनडोर, लोकेशन-पुरानी ईमारत के अंदर, टाईम-शाम ।................... 167

सीन-77, आउटडोर , लोकेशन, हाईवे से जंगल मे
पुरानी ईमारत तक टाईम-सुबह ।.. 169

सीन-78 ईनडोर, लोकेशन (अस्पताल) टाईम-सुबह.. 171

सीन-79 ईनडोर, लोकेशन, गोविंदमाथुर का घर, टाईम-दोपहर ।.................... 173

सीन-80 आउटडोर, लोकेशन-पाठशाला, टाईम-शाम ।.................................. 175

सीन-81 आउटडोर, लोकेशन-मुखिँया, अमरसिंह के
घर के बहास समय –रात ।.. 178

सीन-82 आउटडोर, लोकेशन परम के घर की छत, समय आधीरात ।............ 181

सीन-83 ईनडोर, लोकेशन, पाठशाला, टाईम-सुबह ।.................................... 184

सीन-84 आउटडोर, लोकेशन, पाठशाला के बहार, टाईम-दोपहर ।................ 187

सीन-85 ईनडोर, लोकेसन-एक बडा सा कमरा
(होल-पाठशाला), टाईम-शाम ।.. 190

सीन-86 आउटडोर ,लोकेशन-पाठशाला के बहार ,टाईम-शाम ।.................... 193

सीन-87 ईनडोर ,लोकेशन-बडा सा होल ,समय– शाम ।................................ 196

सीन-88 लोकेशन –परम के घर की छत, टाईम-चाँदनी रात ।.......................... 200

सीन-1
आउटडोर लोकेशन कुदरत टाईमसुबह एकशन-

(जिसका भी वर्णन या बाते की जा रही है। उसका परदे पे दिखाना)
हमारी पूरी दुनिया मे कई-कई जगह पे नदिँया, सरोवर, महासागर और पर्वतीय श्रृंखला आई है। रहस्यमय गुफाए, सुंरगे आदि-आदि कई ऐसी जगह है।
ईस विश्व में सूरज का उगना
उसका शाम को अस्त होना
रात में तारोका पूरे आसमान में
टिमटिमाना कुछ रहस्य लगता है ।
ऐसी कौन सी दिव्यशकि है ।
जो ईन सब पर अपना नियंत्रण रखती है।
एक अलौकिक शक्ति है।
जिसे लोग ईश्वर कहेते है ।
उस ईश्वर ने कई-कई बाते, रहस्यमय जगह अपने तक सीमीत रखी है।
जो आज के वैज्ञानिक युग में भी जान पाना मुश्किल है ।
मनुष्य चाहे कितनी भी कोशीश कर ले पर उस सत्य को उस रहस्य को जान नही पायेगा ।
ऐसी एक कहानी मे आप को पढाना और दिखाना चाहता हुँ ।
मेरी नजर से ..

सीन-2

आउटडोर, लोकेशन-कंचनजंगा, टाईम, सुबह

(कंचनजंगा की प्रमुख जानकारी परदे पे दिखाना)

कंचनजंगा

जो हिमालय ऐव भारत-नेपाल तक फैला हुआ पर्वत है।
जिसकी उँचाई ८५९८ है।
हर साल कई देश-विदेश के लोग यहाँ आते है ।
उसको देखने, उसकी आस-पास की सुंदरता निहालने,
कई विदेशी पर्यटक, नये फिलोसोफर, प्रकृतिप्रेमी, रिसर्च के लिए कंचनजंगा आते रहते है ।
कंचनजंगा के नीचे बसे कस्बे के लोगो का अक्सर कहना है, की
यह कंचनजंगापर्वत अनेक रहस्यो से परिपूर्ण है।

सीन-3

आउटडोर, लोकेशन चाय की दुकान, टाईम सुबहएक्शन-

(कंचनजंगा के रहस्यो को जानने एक विदेशी पर्यटक का कंचनजंगा आना,
काँचनजगा के टेडे मेडे रास्तो को जानकार, कस्बे का रहेवासी पठान अवतारसिंह
से मिलना, भीमा की चाय की दुकान पे)

डेविड जोन

मुझे कंचनजंगा की सबसे ऊँची चोटी पर जाना है।
क्या तुम मुजे वहाँ तक ले जाओगे ।
मैने सुना है की तुम कंचनजंगा के टेडे-मेडे रास्तो के जानकार हो

पठान अवतारसिंह

सही सुना है,
साबजी मगर में आप को
क्यूं वहाँ ले जाउ ।
डेविड जोन
वहाँ मुझे कुछ जगह
का रिसर्च करना है ।
पठान अवतारसिंह
क्या रिसर्च करना है ।
आप का रिसर्च हो जाएगा पर मेरा उसमे
क्या फायदा, (उसी दौरान भीमा का दो चाय लेकर आना ।)

डेविड जोन

तुम्हे जो चाहिये वह में दुगाँ ।
डोलर, रुपये, में तुम्हे एक हजार डोलर दूँगा,
मगर तुम्हे मेरे साथ आखिर तक आना होगा ।
पठान अवतारसिंह
खुश होकर साबजी, जरुर में आपको
कंचनजंगा की सबसे ऊँची चौटी पे ले जाऊँगा ।

मगर उससे पहले हमे कस्बे में रहेनेवाले बुजुर्ग
रतनसिंह से मिलना होगा, जो कंचनजंगा के बारे में बहुत कुछ जानते है ।
डेविड जोन
कौन है यह रतनसिंह
पठान अवतारसिंह
साबजी वह हमारे कस्बे के बहुत ही पुराने नब्बेसाल बुजुर्ग है ।

सीन-4
ईनडोर-लोकेशन रतनसिंह का घर, टाईम-शाम

(डेविड जोन और पठान अवतारसिंह का बुजुर्ग रतनसिंह के घर जाना ।)

पठान अवतारसिंह

चाचा मे पठान अवतारसिंह और ये
डेविडजोन जो कंचनजंगा देखने और घुमने आये है ।
चाचा ईनको कंचनजंगा की सबसे
ऊँची चोटी पे जाना है, तो आप से
कुछ कंचनजंगा के बारे में जानकारी चाहिए ।

बुजुर्ग रतनसिंह

बेटे उस जगह जाना खतरे से खाली नहीं,
क्योकि वहाँ पहुँचने पर आगे जाने का कोई
रास्ता नहीं, केवल एक बड़ी सी हिमशीला
दिखाई देती है ।
जिस पर कुछ संस्कृत में लिखा है,
अग्र गच्छति भयावह, निवेदीत शीधम
वापसी, जीवन संकटम, अस्तु
जिसका अर्थ होता है ।
कृपया आप से निवेदन है।
ईस हिमशीला के आगे जाना आप के लिए
सही नहीं तो वापस लौट जाईए,
आप की जान को खतरा है।
सुनो मेरी मानो वहाँ जाने की बात छोड दो,
डेविड जोन और पठान अवतारसिंह का उठकर चले जाना ।

सीन-5

आउटडोर, लोकेशन कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष टाईमसुबह-

(कंचनजंगा के नीचे और कस्बे के बहार के वटवृक्ष के नीचे
डेविडजोन और पठान अवतारसिंह का बेहोशी मेंमिलना ।)

डेविड जोन

यब सब बाते केवल कल्पना और डराने के
लिए है, ऐसा कुछ भी नहीं होता ।
अब तो मेरा ईरादा और मजबुत हो गया है।
तुम जाने की तैयारी करो, हम दोनो दो दिन के बाद कंचनजंगा पर जाने की
शुरुआत करेगे ।

पठान अवतारसिंह

साबजी पाँच-सात दिन लगते है ।
दोनो कंचनजंगा जाना,
ठीक तीन दिनो के बाद
(डेविड जोन और पठान अवतारसिंह का कस्बे के पास आये पुराने वटवृक्ष के नीचे
बेहोशी की हालत में मिलना । कस्बे के सभी लोगो का ईक्ठा होना, कस्बे के
मुखिया अमरसिंह ठाकुर को बुलाना ।)

अमरसिंह ठाकुर

कस्बे के मुखिया थे। डॉक्टर को बुलाया,

डॉ. गोविंद आहुजा

डेविडजोन और पठान अवतार सिंह को देखना,
अस्पताल ले गये। ईलाज करने पर उनको
मालुम हुआ ।

दोनो अपनी याददास्त भुल गये है।
पागल हो गये है।
(डेविड जोन के फेमिलीवाले उसे अमेरिका ले गये ।
पठान अवतारसिंह का पागलखाने में भर्ती कर दिया गया ।)

संक्षिप्त –सीन :6

आउटडोर, लोकेशन कंचनजंगारात ,टाईम:– रात

(दो महिने के बाद वहाँ की सरकार की तरफ से ग्याराह लोगो की टीम को कंचनजंगा की
आखरी बडी उँची चोटी परभेजना ।)
सभी लोगो की कंचनजंगा के नीचे ईक्ठे
होना कंचनजंगा पर जाने की शुरुआत करना ।
ठीक रात के ग्याराह बजे उनका आगे बढना ।
तीन दिनो के बाह ग्याराह के ग्याराह लोगो का कस्बे के पास आये पुराने वटवृक्ष के नीचे बेहोशी की हालत में मिलना । कुछ भी मालुम न होना की अचानक वह सभी कंचनजंगा की उँस उँची चोटी पर नीचे कैसे आ गये । ईस पुरे घटनाक्रम का न्युजपेपर और टी.वी. चैनल दिखाई जाना ।
पुरे कंचनजंगा में कई तरह की अफवाओ का फैल जाना, कंचनजंगा का नाम सुनते ही लोगो के मने में डर सा बैठ जाना।
कंचनजंगा आनेवाले यात्री और पर्यटको की संख्या का वहुत कम हो जाना ।
कंचनजंगा के नीये आये हुऐ छोटे-बडे व्यापारीयो, दकानदारो का धंधा ठप हो जाना ।
वह एक बडी विकट समस्या बन गई ।

सीन–7

ईनडोर–लोकेशन: रतनसिंह का घर, टाईम दोपहर

(मुखिया रतनसिंह और व्यापारीगण का बुजुर्ग रतनसिंह से मिलना जो कंचनजंगा के बारे में बहुत कुछ जानते थे ।)

मुँखिया अमरसिंह

ये सब क्या हो रहा है, कंचनजंगा में
पहले डेविडजोन ओर पठान अवतारसिंह
पागल हो जाना, याददास्त भुल जाना,
उसके बाद ग्याराह लोगो की टीम का
बेहोशी की हालात मे वटवृक्ष के नीचे मिलना ।

बुजुर्ग रतनसिंह

सुनो डेविड जोन और पठान अवतारसिंह
दोनो मेरे पास आये थे। मेरे मना करने पर भी उन लोगो का वहाँ जाना ।

मुखिया अमरसिंह

चाचा क्यु ऐसी घटनाँए बनती है ।
ईसका कारण बताईये । क्यु की
आप तो कस्बे और कंचनजंगा के
बारे में हम से ज्यादा जानते है ।
(आउटडोर)

बुजुर्ग रतनसिंह

यह उस समय की बात है, जब में
तुम्हारे उम्र का था । कंचनजंगा के
आसपास घुमता-फिरता रहता था,
यात्री पर्यटको कंचनजंगा ले जाया करता था ।
एक दिन की बात है ।

एक पवित्र योगीराज मुझे मिले,
जो कंचनजंगा की सबसे ऊँची चोटी
पर जाना चाहते थे ।
मुझे मालूम था कहाँ तक उसके आगे
कोई रास्ता नहीं था ।

व्यापारी गण

चाचा, उसरे बाद क्या हुआ, क्या आप
उनके साथ ऊँची चोटी पर गये थे ।
(आउटडोर)

बुजुर्ग रतनसिंह

मैने वैसे ही पूछ लिया
योगी महाराज, उसके आगे कोई रास्ता ही नहीं ।

योगी महाराज

बेटे, ईस दुनिया में कई रास्ते कई
जगह कुछ बाते अभी तक कोई जान
नहीं पाया । तुम ने तो कंचनजंगा
आखरी चोटी पर एक बडी हिमशीला ही
देखी है ।

बुजुर्ग रतनसिंह

यहीं सब बाते करते-करते हम कंचनजंगा
की आखरी चोटी और हिमशीला के सामने
पहुँच गये ।
जाते-जाते वह मुझे एक रहस्यमय बात कह गये ।

योगी महाराज

ईस हिमशीला के आगे वही जा सकता है ।
जो निष्पापी, निष्कलंकित, धैर्यशील और
जिसका मन पवित्र हो, जिसने कभी भी
अपनी जिंदगी में कीसी को दर्द नहीं पहोचाया हो,

हर कीसी की हर वक्त मदद करने तैयार रहे ।

ईनडोर :-

(बुजुर्ग रतनसिंह की यह बाते सुनकर मुखिया अमरसिंह सब व्यापारीगण सोच में डुब गये। सब लोग सहमत थे। बुजुर्ग रतनसिंह की बातो से)

मुखिया अमरसिंह

ऐसा कोन होगा, जो पूर्णरुप से निष्पापी
निष्कलंकित, धैर्यशील और जिसका मन पवित्र हो,
क्योंकि ऐसा तो केवल सात साल की उम्रवाला
छोटा बच्चा हो सकता है ।
बच्चे को ईतनी खतरनाक जगह पर भेजा नहीं जा सकता ।

सीन-8

आउटडोर-लोकेशन-पाछशाला, टाईम सुबह

(कस्बे के छोटे-बडे बच्चो को पढाँने के लिए कक्षा १ से लेकर कक्षा ७ तक की
पाठशाला का खुलना)
एक महिने बाद
(छोटा सा स्टेज)
गोविंदराय माथुर (विधाधन चेरीटेबल के चेरमेन)
कस्बे के सभी उपस्थित, बडे बुढे
औरते और छोटे-बडे बच्चे लोग आज
मुझे बडी खुशी है। की ईस कस्बे
में एक पाठशाला खोली जा रही है।
में आशा रखता हूँ
की कस्बे का हर एक बच्चा ईस
पाठशाला में प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करेगा,
ईस पाठशाला में सात शिक्षको की भर्ती, की गई है।
जो आप को सच्ची लगन और महेनत
से आप लोगो के बच्चो को अच्छी शिक्षा के
साथ उनका खयाल भी रखेगे ।

मुखिया अमरसिंह

आज में आदर और सम्मान के साथ
गोविंदराय माथुर का शुक्रिया अदा करता हूँ,
उन्ही के सहारे आज हमारे कस्बे
में यह पाठशाला शुरु हो रही हैं।
में यकीन देता हूँ,
की कस्बे का हर एक बच्चा ईस
पाठशाला में पढ़ने जायेगा ।

सीन-9

ईनडोर, लोकेशन पाठशाला, टाईम दोपहर (बारँह से पाँच)

(पाठशाला के शिक्षक और शिक्षिका का परिचय और उनका काम)
रीटा चौधरी
मीना शर्मा
कोमल त्रिपाठी
बच्चो और बच्चियों को प्राथमिक शिक्षा देना
जैसे की उनके साथ खेलना ।
उनको एक से दस के अंको की पहुँचान करवानी
अंग्रेजी में खिलौने के माध्यम से पूरी ऐ.बी.सी.डी.
सिखानी उनका ख्याल रखना ।
उनसे पेन्टींग करवानी ।
उनको टी.वी. पे कार्टुन दिखाना ।
दोपहर का खाना देना, आदि-आदि
(पहेली कक्षा से लेकर तीसरी कक्षा के सभी काम तीन शिक्षिकाओ को देखना ।
रवींद्र शुक्ला
नीरव जोशी
विमल उपाध्याय
कस्बे के सारे बच्चो और बच्चीयो को
प्राथमिक शिक्षा के बाद उनको देश-राज्य
विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, अंक गणित, भूगोल
के बारे में वाकिफ करवाना। हिन्दी के
पाठ-कविता का पढन करवाना, आसपास
की हर एक चीज का ज्ञान देना आदि-आदि
(चौथी कक्षा से लेकर छठी कक्षा की सारी
भाग-दौड ईन तीन शिक्षको का देखना ।)

सीन-10
आउटडोर, लोकेशन पाठशाला,
टाईम सुबह (सात से नव)

(परमकुमार शर्मा जो पाठशाला में संस्कृत पठाँते थे। पाठशाला के सारे बच्चो को वह सुबह पाठशाला के बहार योग, सूर्यनमस्कार, प्रार्थना करवाते थे। जो पाठशाला के साँतवी कक्षा में बच्चो को पठाँई के साथ सारे पाठशाला के बच्चो को अच्छे संस्कार और तालीम भी दे रहे थे।)

परम (नायक)

ईस पाठशाला में मेरा पहेला दिन है ।
सभी बच्चे और बच्चियाँ में आपको
संस्कृत पठाउँगा उसके साथ में सभी
लोगो सुबह सात बजे योग सिखाउँगा ।
एक छोटा सा बच्चा
सर यह योग क्या होता है ।

परम

बेटे तुम्हारा नाम क्या है।
एक छोटा सा बच्चा
सर मेरा नाम अमन है ।

परम

अमन योग एक ध्यान और कसरत है ।
जिससे हमारा पुरा दिन अच्छा और खुशनुमा गुजरता है ।

अमन

अच्छा सर हम सभी आपसे योग सिखेगे ।

परम

पाठशाला के सभी बच्चो को योग के
साथ सूर्यनमस्कार, प्रार्थना, कई सारे
खेल भी होंगे. एक खास बात आपको
सुबह का नास्ता भी मिलेगा ।
अब सभी लोग अपनी-अपनी कक्षो में जाये ।

(पाठशाला शुरु होने से पहेले सुबह परम का सभी बच्चो को योग के साथ कई सारी प्रवृतियाँ जैसे की क्रिकेट खेलना, उनके साथ फूटबोल, भागम-भाग, बच्चो को अच्छी-अच्छी कहाँनिया सुनाना, उनके साथ-साथ बडो को सम्मान करना,सभी के साथ प्यार से पेश आना, आदि कई बाते भी सिखाना ।
ईन सभी मे दो महिने गुजर जाना ।)

सीन-11
ईनडोर, लोकेशन मुखिया का घर, टाईमशाम-

(सारे छोटे-बडे व्यापारीयो का कस्बे के मुखिया अमरसिंह के घर जाना, कंचनजंगा में आनेवाले, यात्री, पर्यटको देश-विदेश के रिसर्च, फिलोसोफर आदि लोगो की संख्या में कभी हो जाना । (उनका छोटा-मोटा धंधा ठप हो जाना ।

व्यापारीगण

मुखिया की यह सब क्या हो रहा है।
कंचनजंगा में घुमने फिरने वाले लोग
दिनप्रतिदिन कम होते जा रहे है।

मुखिया अमरसिंह

यब बात तो सच है ।
पीछले तीन महिने में भी यही
सोच रहा हूँ, पहेली तरह अब
कंचनजंगा में पर्यटको, यात्री ओ का आना
बहुत कम होते जा रहे है।

व्यापारीगण

उसमें यह टी.वी. चैनलवाले, अखबार
वाले कुछ न कुछ मिर्च-मसाला डालके
कंचनजंगा पर्वत को बदनाम कर रहै है।
कई-कई तरह की अफवाए फैला रहै है।
जिसके डर से कोई कंचनजंगा के आसपास
घुमने फिरने नहीं आ रहे ।

मुखियाँ अमरसिहं

हम ने कोशिश तो की बुजुर्ग रतनसिंह से मिले,
आप को मालुम ही तो है। हम सब उनके
पास जाना । मगर कोई उपाय नही निकला
मुझे मालुम है। कि आप सभी व्यापारीओ का
धंधा कम हो रहा है। आप का दिनभर का
गुजारा भी नहीं हो रहा ।
अब जो भी करना है, वह उपरवाला परमेश्वर ही करेगा ।

सीन-12
ईनडोर, लोकेशन पाठशाला, टाईम दोपहर

(परमकुमार का साँतवी कक्षा में बच्चो को संस्कृत पढाना ।)

परम

(सातवी कक्षा में)
बोर्ड पे लिखना
मातृदेवो भव, पितृदेवो भव,
आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव ।
बच्चों, इसका क्या मतलब है?

नैना

एक प्यारी सी लडकी का खडा होना ।
सर पहेले माँ को प्रणाम करना, फिर दूसरा प्रणाम पिता को करना,
तीसरा प्रणाम हमारे गुरु को करना, उसके बाद,
हमारे घर में आये महेमान को भी लिखा है, प्रणाम करना ।

परम

नैना बिलकुल सही जवाब दिया ।
शाबास
दुसरा श्लोक
"अधूरम, मधुरम वदन मधुरम, नयनं मधुरम,
हंसती मधुरम, मधुराधिपतेय अखिलम मधुरम"
इस श्लोक का अर्थ है।
(कोई भी इसे समझने के लिए खड़ा नहीं हुआ) सभी बच्चे एक-दूसरे को देखने लगे।

परम

ईसका अर्थ होता है ।

किथन कन्हैया तो आप जानते हो, माखनचोर जिनके होठ सुंदर है,
जिनके प्रणाम सुंदर है। जिनके नयन सुंदर है।
जिनका सब आचरण सुंदर ही सुंदर है।

सीन-13

आउटडोर-लोकेशन-पाठशाला के बहार-टाईम-सुबह

(पाठशाला के सभी बच्चो और बच्चीयों को सुबह बहार घुमने ले जाना। प्रकृति को करीब से दिखाना। उनके साथ खेलना । योग और कसरत के बाद उन्हे कविता या गीत गवाँना । सुर्य नमस्कार के बारे में..)

परम

मेरे प्यारे बच्चो क्या आप लोग
सुरज के बारे में क्या जानते हो ।
बच्चे
(एक साथ में) सुरज हमे रोशनी देता है।
वह अंधकार को दूर करता है।

परम

बस ईतना ही और कुछ ।
दूसरा बच्चा
वह हमें विटामीन डी देता है।

परम

बहुत खूब सही, ईसके अलावा वह सुरज
हमे रोशनी के साथ-साथ हमे बीमारीयाँ से
लडने की शक्ति देता है।
सुरज के प्रकाश से फूल खीलते है।
सुरज के कारण हम दिन और रात का
पता चलता है ।
अगर सूरज नहीं होता तो यह पूरी दुनिया
अंधकारमय होती। हर जगह गंदकी और
बीमारी बढ जाती ।
सूरज के कारण चंद्रमां और तारे टिमटिमाते है ।
सुरज के कारण हमे उर्जा मिलती है।

सुरज के कारण खेत में फसले बनती है।
तो सभी बच्चो को मेरा कहना है।
हर सुबह आप लोग, छोटे से लोटे मे जल भरकर
ईस सूर्यनारायण को अंजली प्रदान करोंगे ।
(सभी बच्चे लोग)
चिल्लाते बोले जरुर सर हम लोग यह रोजाना करेगे ।

सीन-14

आउटडोर कस्बे के मंदिर के बहार गहरा कुँआ-लोकेशन-सुबह-टाईम (आधा पानी से भरा)

(एक दिन पाठशाला से सभी बच्चो को सुबह नव बजे परमकुमार का कस्बे के पूराने मंदिर के पास घूमने-फिरने ले जाना । सभी बच्चो के बीच तीन फूटबोल देखकर खेलने को कहँना। परम का कस्बे के पूराने मंदिर को देखने जाना। क्योंकि उसकी पूरानी चीज और पूरानी जगह देखने का बडा शोख था ।)

परम

सूनो मेरे प्यारे बच्चो
तुम सभी तीन टीमो मे परिवर्तन हो जाव
में तुम्हे यह तीन फूटबोल दे रहा हूँ ।
जो तुम्हे अच्छे से मिलजुलकर खेलना ।
पाठशाला के बच्चे
यस सर
हम अभी तीन टीम बना लेते है ।
परम
अच्छा बच्चो मे यह पुराने मंदिर
को देख आता हूँ। तूम सब एक दूसरे का
खयाल रखना
पाठशाल। के बच्चे
जरुर सर
आप बेफिकर होकर जाईये ।
हम यहाँ खेल रहे है।

(जहाँ पे पाठशाला के सभी बच्चे खेल रहे हो। उनके कुछ दूर एक गहँरा कुआ था। जो आधा पानी से भरा था। जिसकी न तो बच्चो को ना ही परमकुमार को पता था ।)

पाठशाला के बच्चे

फूटबोल को अपने पैरो से किक लगाने के लिए भाग-दौड कर रहे थे ।
उनमे से एक कस्बे में रहनेवाले बनिया का लडका रोशन फूटबोल को पैरो से
किक मारते
उस गहरे कुए तक ले आया ।
सभी बच्चे उससे फूटबोल छीनने
के लिए उसका पीछा कर रहे थे ।
सब लोग ईसी भागमभाग और खेल में मशगुल थे ।
रोशन
अपनी पूरी टीम को पीछे देखकर उसने
एक जोर से फूटबोल को कीक मारी
की अचानक वह फूटबोल उस गहरे कुए
मे गिर गया ।
कुए के नजदीक जाकर देखनेवाला था
की अचानक से उसकी पूरी टीम के धक्के
से रोशन का कुए में गिर जाना ।
पाठशाला के बच्चो
सभी बच्चे जोर से चिल्लाने लगे बचाओ,
बचाओ रोशन का कोई बचाओ
वह कुए मे गिर गया ।

परम

बच्चो का शोर सुनाई दिया ।
(तुरन्त जल्दी से दौडकर वह बच्चो के पास उस गहरे कुए तक पहुँच कर बिना सोचे-समझे अपनी परवा न कर के कुए मे छलाँग लगा दी। रोशन का अपनी बाहो मे लेकर कुछ समय कुए मे तैरता रहा। आस-पास के कुछ रहनेवाले वहा पहुँच गये 1)

(कस्बे का रहेवासी)

कही से बडी रस्सी ले कर आया
उसने कुएँ मे रस्सी डालकर परम और
रोशन को बहार निकाला। जिसका
खेत मंदिर के थोडे पास था ।

परम

बहार निकलते ही रोशन के पेट से
पानी निकालना । उसे उलटा सुलाना
डॉ. गोविंद आहुजा
रोशन को देखना
फिर परम को कहँना अच्छा हुआ की आपने तुंरत छलाँग लगाकर रोशन के पेट मे
ज्यादा पानी नहीं जाने दिया ।
अब यह बच्चा ठीक है।
परम से पूछना
क्या तुम सही हो
परम
डॉ. साब हाँ में बिलकुल ठीक हुँ ।

सीन-15
आउटडोर-लोकेशन पाठशाला के
बहार छोटा स्टेज-टाईम-दोपहर

(परमकुमार का पाठशाला के सभी शिक्षकगण और कस्बे के लोगो के सामने सम्मान किया जाना। पाठशाला के सभी बच्चो का परमकुमार से प्यार और लगाव होना । ईसके अलावा बच्चो के माता-पिता कस्बे के बुढे जवान दादा-दादी आदि सभी को परमकुमार के प्रति मान-सम्मान बढ जाना ।)

मुख्य अतिथि
गोविंदराय माथुर

आज में बहुत खुश हुँ, ईस कस्बे
में पाठशाला खोलना मेरा सही निर्णय था ।
यहाँ के हर एक शिक्षक सच्चे मन और
लगन से बच्चों को शिक्षा दे रहे है।
उस के बाद स्टेज पर परमकुमार को
बुलाना ।
(स्टेज पर आते ही सारे बच्चो और सभी
लोगो का जोरो से तालियाँ बजाकर उनका स्वागत करना ।)

परम

यहाँ बेठे हुए अतिथि विशेष तथा कस्बे के
सभी बडे-बुढे बुजुर्ग, औरतो को ईतना ही
कहना है ।
हमारा काम उस छोटे से पौधे की
देखभाल करना है। उसे समय-समय पर
पानी देना, प्रकाश देना, उसको तुफान से
बचाना । जब-तक की वह पौधा मुल से
मजबुत न हो जाये ।
हम शिक्षक बच्चो को पठाई के अलावा

उनको जीने की सीख देना होता है।
उनका ख्याल रखना हमारी जिम्मेदारी बनती है ।
हमारे लिए आप सभी के बच्चे उसे नाजुक पौधे
की तरह है। जिसका देखलेख करना हमारा कर्तव्य है ।
(सारे मौजुद लोगो ने तालियाँ की गदगदाहट से वातावरण खुशनुमा दिया बना ।)

सीन-16

ईनडोर-लोकेशन मुखिया का घर, टाईम-शाम

(मुर्खिया अमरसिंह ठाकुर तथा व्यापारीगण का बुजुर्ग रतनसिंह की मौजूदगी में परमकुमार को शाम को अपने घर दावत पे बुलाया । परमकुमार के बारे में सब-कुछ जानना उसके बाद कंचनजंगा में हो रहे घटनाओ के बारे में विस्तार से बताना ।

मुखिया अमरसिंह

परम, अपने बारे में कुछ बताओ
तुम्हारे परिवार मे कौन-कौन है ।
यहाँ कंचनजंगा में जोब कैसे लगे ।

परम

दहेरादुन की एक अनाथाश्रम मेरा बडा होना
मेरे माँ-बाप के बारे में मुझे कुछ नही पता ।
उसे अनाथाश्रम के चेरमेन गोविंदराय
माथुर के नेतृत्व में मेरा स्नातक होना
उनके ही विधाधन चेरीटेबल ट्रस्ट के
माध्यम से मेरा ईस पाठशाला में जोब करना ।
मेरा ईस दुनिया में एक ही रिश्तेदार है।
गोविंदराय माथुर

मुखिया अमरसिंह

हमे मालुम नहीं था कि तुम्हारा ईस दुनिया
कोई नहीं, मगर बेटे आज से हम सब लोग
तुम्हारे अपने है। अपने आप को
कभी अकेले नही समजाना ।

परम

मेने तो ईस पाठशाला को ही अपना परिवार
मानता हूँ । यहाँ छोटे-बडे बच्चो के साथ मेरा
वक्त बडे आनंद से गुजर जाता है। ईसके
अलावा ईस कस्बे के सभी लोगो ने मुजे
जो मान और सम्मान दिया हो वह मेरे
लिए मेरे अपनो से बँढकर है ।

मुखिया अमरसिंह

बेटे परम तुम क्या ईस कंचनजंगा के
बारे में कुछ जानते हो। पिछले तीन-चार महिनो से वहाँ
अजीबो-गरीब घटनाँए बन चुकी है।

परम

हाँ मैने टी.वी. न्युजपेपर मे कंचनजंगा
के बारे में कुछ सुना था ।

मुखिया अमरसिंह

परम को कंचनजंगा की उँची चोटी के बारे में,
संस्कृत में लिखे हिमशिला के बारे में,
डेविड जोन पठान अवतारसिंह के बारे में,
ग्याराह लोगो को सब पागल होकर अपनी
याददास्त भुल गए ।
शुरु से लेकर आखिर तक सभी बाते
घटनाक्रम परमकुमार को सुनाई ।

बुजुर्ग रतन सिंह

परम जब में तुम्हारी उम्र का था ।
जब मुझे एक एक पवित्र योगीराज ने
बताया था। की कंचनजंगा की सबसे
बडी आखरी चौटी पर वही जा सकता है।
जो निष्पापी, निष्कलंकित धैर्यशील
जिसका मन पवित्र हो, जिसने आज-तक

कीसी का बुरा नही किया हो ।
तुम्हे आये यहाँ तीन-चार महिने हुऐ है।
मगर में जानता हूँ। कि तुम में यह, सभी गुण विधमान है ।

व्यापारीगण

(कस्बे के छोटे-बडे सभी व्यापारीओ का परमकुमार से कहँना ।)
कंचनजंगा मे हो रहे ईस अनहोनी घटना
के कारण कंचनजंगा पर्वत घुमने-फिरनेवाले
ईस देश और विदेशी पर्यटको, रिसर्चवालो
की संख्या, बहुत कम हो गई है।
हमारे सभी धंधे-रोजी-रोटी सब बहुत कम और मंद हौ गये गै ।
तीन-चार महिने से हम सब बेकार बन चुके है ।
क्या परमकुमार आप हमे ईस मुसीबत से
बहार निकाल सकते है ।

परम

(सभी लोगो की बात सुनकर)
मैं ईसमे आप को क्या मदद कर
सकता हूँ ।

मुँखिया अमरसिंह

परम क्या तुम हम सब के लिए
ईस कस्बे के लिए, यहाँ के लोगो
के लिए ईन छोटे-बडे व्यापारीओ के
लिए ।
कंचनजंगा की सबसे ऊँची और आखरी
चोटी पर खडी उस हिमशिला के आगे जाओगे ।
क्या तुम ईस रहस्य से पर्दा उठा पाओगे ।
हम सभी लोगो की एक तुमसे ही उम्मीद
है परम ।
क्योकि तुम में वह सभी गुण विधमान है।
मौजूद है ।

परम

मुझे एक दिन चाहिए सोचने के लिए कल ईसी समय शाम को मे बुजुर्ग रतनसिंह के घर मेरा फैसला सुनाउँगा ।

सीन-17

ईनडोर-लोकेशन-रतनसिंह का घर टाईम-शाम

(एक दिन सोचने बाद परमकुमार का बुजुर्ग रतनसिंह के घर मुखिया अमरसिंह, व्यापारीगण सभी लोगो के सामने कंचनजंगा की सबसे बडी आखरी चोटी पर जाने को तैयार होना। मगर उससे पहले परम का सब लोगो से बात करना ।

परम

अगर आप को लगता है में ईसे
रहस्य से पर्दा उठा सकता हूँ ।
आप लोगो का विश्वास है, की ईस
परेशानी से में आप को निकाल सकता
हूँ। तो में तैयार हूँ।
कल में पूरे दिन यही सोचता रहा ।
मैं ईस दुनिया में अकेला हुँ
न मेरे आगे कोई है, न कोई पीछे
मुझे कुछ पाना नही, मुझे कुछ खोना नहीं,
अगर यह कर्म कर के मैं वापस आ जाउ
तो आप लोगो की तकदीर अगर में वापस न लौंट पाया तो मेरी तकदीर

बुजुर्ग रतनसिंह

बेटे परम क्यूं केसी बाते कर रहे हो ।
हम तुम्हारे अपने तो है।
मुझे यकीन ही नही, विश्वास है।
की तुम जरुर वापस लौटेगे ।

मुँखिया अमरसिंह

परम, अपने आप को कभी अकेला न समझना
क्योकिं यह कस्बे के सभी लोग तुम्हारे लिए
प्रार्थना करेगे । की तुम सही सलामत वापस आ जाओगे ।

परम

कंचनजंगा की सबसे बडी आखरी चोटी पर
मुझे अकेला जाना होगा, किसी को साथ
ले जा सकता हूँ ।

बुजुर्ग रतनसिंह बेटे परम

ईश्वर ने कुछ खास और नेक कर्म करने के
लिए कुछ खास और नेक दिल के
ईन्सान को, चुनता है ।
वह ईन्सान मान लो की तुम हो ।
और वह खास और नेक काम
कंचनजंगा की सबसे ऊँची चोटी पर आई
उस हिमशीला के आगे जाना है।

परम

आप लोगो का मुझ पर विश्वास है ।
तो में कोशीश करूँगा। आप सब
को ईस मुसीबत से निकाल सकुँ ।

व्यापारी गण

परम हम सब लोग उस ईश्वर से प्रार्थना करेगे की तुम्हे ईस नेक काम में कामयाब करे ।

सीन-18

आउटडोर-लोकेशन-कस्बा-टाईम-दोपहर

(परम का कंचनजंगा की सबसे ऊँची और आखरी चोटी पर जाने को तैयार होना। परम को वहाँ ले जाने के लिए कंचनजंगा के टेडे-मेडे रास्तो के जानकार अब्दुल शेख और किशन पहेलवान का साथ में जाना केवल ईस हिमशीला तक।)

मुखिया अमरसिंह

परम तुम्हे कल सुबह चार बजे
कंचनजंगा पर जाने की तैयारी करनी होगी,
हम तुम्हारे साथ कंचनजंगा
के टेडे-मेडे रास्तो के जानकार दो लोग
भेज रहे है।
एक अब्दुल शेख और दुसरा किशन पहेलवान

अब्दुल शेख

परम मैने सफर मे जो जरुरी चीजे
और सामान का बंदोबस्त कर दिया है।
खाने-पीने की चीजे,
पहनने के लिए गरम कपडे,
रात में रहने और सोने के लिए मजबुत टेन्ट ।

किशन पहेलवान

हम ने भी परम ज्यादा ठंडी से बचने
के लिए तीन-चार शराब की बोटले ले ली है।
जो हमे आग जाकर ठंडी से बचायेगी ।
उसके अलावा आगे जलाने के लिए कोयला
और सुकी लकडिया भी साथ ले ली है।

परम

बहुत खुश
आप दोनो ने ईतने कम वक्त में ईस सारी
चीजो का बंदोबस्त कर दिया। आप के साथ
सफर करने को बडा आनंद आएगाँ ।

सीन-19

आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा-टाईम-सुबह

(सुबह चार बजे कस्बे के कुछ चुनिंदा खास लोग एक बुजुर्ग रतनसिंह और मुँखिया अमरसिंह की मौजूदगी में परम का अब्दुल शेख और किशन पहेलवान के साथ कंचनजंगा पर जाने की शरुआत करना। ज्यादा कीसीको ईसके बारे में मालुम नहीं होना ।

परम

चलते-चलते कितने दिन लगेगे उस
कंचनजंगा की उँची चोटी पर पहुँचने में,
किशन पहलवान
करीब पाँच-या सात दिन

अब्दुल शेख

वैसे तो पाँच दिन में पहुँच सकते है।
एक रास्ता है। मगर वह बहुत कठिन
और खतरे से भरा है।

परम

कौन सा रास्ता

अब्दुल शेख

परम वह रास्ता कंचनजंगा के जंगल
से होकर निकलता है। जंगली जानवर
लेपड (चित्ते) और खूंखार वरुओ का भय
रहता है ।
जंगल के आखिर में एक बडी नदी
गुजरती है। जो कभी बरफ से जम जाती है।
और कभी ठंडे पानी से भरी रहती है।
वह पानी ईतना ठंडा होता है, की उसमें
पैर रखने से ही आदमी पैर से लेकर सिर

तक ठंडी से जकड जाता है ।
तेज बुखार या दिल की धडकन भी रुक
जा सकती है ।

परम

सौंचते हुझे दूसरे रास्ते के बारे में
किशन पहेलवान
परम वह रास्ता पर्वतो से गुजरता है।
हम जैसे-जैसे उपर की और जायेगे
वैसे-वैसे ठंड बढती जायेगी।
ईसके अलावा बर्फीली हवाओ का तुफान
भी आ सकता है।
कंचनजंगा के टेडे-मेडे रास्ते भी
खतरनाक है। कभी-कभी चलते-चलते
तो कभी रस्सी के सहारे उपर तक
जाना होता है ।

परम

गहँरी सोच में
मान लो की हम ऐक एसी जगह पर खड़े है ।
जहाँ पर बाये और दाये खाई है ।
तो हमे कीसी ऐक का चुननाँ होगा ।
किशन पहेलवान
दोनो ही रास्ते खतरनाक है
मगर हम दोनो आप को आप की मंजिल
कंचनजंगा की उँची चोटी पर सही सलामत
ले जाएगे यह हमारा आपसे वादा है ।

परम

मुजे आप दोनो पर पूरा विश्वास है,
मगर मेरे कारण आप दोनो को कुछ
नहीं होना चाहिए ।

अब्दुल शेख

परम तुम बेफिकर होकर चलो,
हम दोनो हर एक खतरे से भीड सकते है।

सीन-20

आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा, टाईमरात-

(अब्दुल शेख और किशन पहेलवान की बात सुनने के बाद परम आखिर मे तय करता है की हम सब वही रास्ते पर जायेगे जो पर्वतो से गुजरता है। चलते-चलते तीनो लोगो का थक जाना। अच्छी जगह देखते वहाँ टेन्ट लगाना। खा-पीकर वही सो जाने का तय करना क्योंकि अंधेरा ज्यादा हो गया था।)

परम

सुनो यारो अब अंधेरा बढ रहा है ।
हमे कही ठहरना होगा ।
अगला सफर कल सुबह करेगे ।

किशन पहेलवान

परम सही बात है, मे यहाँ अच्छी
जगह देखकर टेन्ट लगाने की कोशिश
करता हूँ ।

अब्दुल शेख

ठंड भी ज्यादा है। में सुकी लकडियों
को ईकठ्ठा करके आगे जलाने की कोशिश
करता हूँ ।

परम

दोस्तो खाने की क्या व्यवस्था है।
क्योंकि सारा दिन चलते-चलते
थकान के कारण पेट में चुहे दौड रहे है।

अब्दुल शेख

खाने के लिए में नीचे कस्बे से
बहुत सारे सेब ले के आया हूँ ।

परम

जो होगा वो चलेगा, लाओ दो-तीन सेब
खा लेता हूँ ।

(तीनो के सेब खाकर टेन्ट लगने के बाद एक-एक पेक लगाकर टेन्ट में सो जाना।)

सीन-21

आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा-टाईम-सुबह

(परम का सुबह जागना, किशन और अब्दुल को जगाना, आगे का सफर शुरु करना, चलते-चलते बातो-बातो में परम का अब्दुल शेख और किशन पहेलवान के जिन्दगीं के बारे में जानना ।)

परम

दोस्तो आप दोनो ने अपने बारे में
तो मुझे कुछ नहीं बताया ।
क्या करते हो, घर पे परिवार में कौन-कौन है ।

अब्दुल शेख

हमारे बारे में जानकर क्या करोंगे
परम मेरे परिवार मे बस मेरी एक
छोटी सी बच्ची है। बारह साल की,
जिसका नाम तमन्ना है, जो मेरे दिल
का टुकडा है।

परम

और भाभी जी

अब्दुल शेख

वह तमन्ना को जन्म देते ही ईस
दुनिया से अलविदा हो गयी ।
(आँखो में दो-तीन आसुँ आ जाना ।)

परम

माफ करना अब्दुल तुम्हारी पुरानी यादे
मैने फिर से याद करवा दी ।

अब्दुल शेख

चलता है परम जिन्दगी है ।
जख्म भी देती है, मलम भी लगाती है ।

किशन पहेलवान

देख परम तु मुझसे कुछ पुछे ईससे
पहले में ही मेरी रामकथा तुम्हे सुनाई देता हूँ ।
मेरी शादी को चार महिने हो चुके है।
में मेरे माता-पिता के साथ कस्बे में रहता हूँ ।
तुम्हारी भाभी मुझ से नाराज होकर अपने
बाप के घर चली गई है।
वह कस्बे में रहेना उसे पसंद नहीं,
देख परम में कही भी रह सकता हूँ। पर
वहाँ मेरे माता-पिता होने चाहिए ।

परम

किशन तुम्हारी सारी बाते मे समज गया
अब कुछ बताने की जरुरत नहीं ।
तुमने जो किया वह सही है ।
(ईसी दौरान सुरज का डूबना ।)
(कंचनजंगा में धीरे-धीरे प्रकाश पर अंधकार का हावी हो जाना ।
पुरे दिन उँचे-नीचे टेडे-मेडे रास्तो पे चलकर तीनो का थक जाना ।)

सीन–22

आउटडोर लोकेशन-कंचनजंगा-टाईम-रात

(रात के समय परम और अब्दुल शेख, किशन पहेलवान तीनो का रहेने के लिए अच्छी जगह टेन्ट बनाना, उसके बाद खाना, ठंडी से बचने के लिए आग जलाना, तीनो का शराब पीते-पीते एक-दूसरे से बात करना, परम का प्यार के बारे में अपनी राय देना, तीनो का टेन्ट में सो जाना । कंचनजंगा में बर्फीली हवाओ का भंयकर तुफान आना।)
(तीनो का आग के सामने बैठना)

किशन पहेलवान

परम ये लो छाटा सा पैक
यार तुमने आज पुरे दिन हमारे
बारे मे बहुत कुछ जान लिया • अपने बारे में कुछ बताओ

परम

अभी फिलहाल तो मैं अकेला हूँ ।
माँ का प्यार क्या होता है ।
बाप का प्यार क्या होता है ।
यह मुझ अनाथ को क्या मालुम
जब से होश संभाला, तब से अपनी
खुद की पहचान बनाने की कोशीश कर रहा हूँ ।

अब्दुल शेख

नशे में परम क्या हम तुम्हारे अपने नहीं ।

परम

होना, तुमदो मेरे दोस्तो हो, पाठशाला के
छोटे-बडे बच्चे मेरा परिवार है। कस्बे के सभी लोगो ने मुजे प्यार और सम्मान दिया है ।

किशन पहेलवान

परम तुमहे चढ गई है, बहुत गहरी
बाते कर रहे हो । छोड़ो यह सब बात प्यार के बारे में तुम्हारी राय क्या है ।
बताओ ।

परम

(नशे में) प्यार, प्यार, प्यार
ढाई अक्षर का यह लब्ज
जो बोलने में आसान है । उतना ही निभाने में
बहुत ही कठीन |
कौन नही चाहता, कि उसकी जिन्दगी में
कोई खास खुबसुरत, आसमान की परी जैसी
कोई प्यारकरनेवाली हो ।
जो उसे समझे, उसका साथ दे,
उसको हिंमत दे, उसको बेपनाह प्यार दे,
जींदगी के सफर में हाथो में हाथ पकडकर
सात समुंदर पार कर जाये ।

(यह कहते-कहते परम को नींद आ जाना, किशन और अब्दुल का परम को उठाकर टेन्ट में अच्छी तरह से लैटाना | बाद में उन दोना का भी सो जाना ।)
(कंचनजंगा के पर्वत पे हवाओ का तेज चलना, धीरे-धीरे बर्फीली हवाओ का रौद्र रुप धारण करना, बादलो का गडगडाना, बीजलीओ का चमकना, हवाओ की तेज रफ्तार में टेन्ट में सोये परम, अब्दुल और किशन का टेन्ट समेट हवाओ के जोर से दूर, गिरना, टेन्ट का टुट जाना, तीनो की नींद टूट जाना, एक दूसरे को संभालना। अब्दुल को सिर पे चोट लगना, तीनो को छोटी-मोटी, चौटे-धाँव लगना ।)

सीन-23

ईनडोर-लोकेसन-कस्बा-टाईम-दोपहर

(कस्बे के सारे लोग और पाठशला के सभी छोटे-बडे बच्चो का परमकुमार के बारे में पूछना, कहाँ चले गये, कब आयेंगे, शिक्षणगण का कहना, सात दिन छुट्टी पे जाना। सभी शिक्षकगण का मुखियाँ अमरसिंह ठाकुर के घर जाना ।

रविन्द्र शुक्ला

सुनो मेरे प्यारे बच्चो आज में तुम्हे
संस्कृत सिखाँउँगा सारे बच्चो
जोरो से चिल्लाना
परम सर, परम सर, परम सर

रविन्द्र शुक्ला

बच्चो वह साँत दिन की छुट्टी पे,
देहरादुन गये हो जरुरी काम के लिए
जल्द ही वापस आ जायेगे ।
(ईसी दौरान सारे शिक्षकगण का रविन्द्र शुक्ला को बुलाना। उनके साथ मुखिया अमरसिंह के घर जाना ।)

शिक्षकगण

अमरसिंहजी चार दिन बीत चुके है ।
यह पाचवा दिन है। हम सब बच्चो को कब-तक झुठ बोलते रहेंगे ।
हमे तो बताईये के परमकुमार कहाँ गये है।

मुखियाँ अमरसिंह

वक आने पर जरुर बताउँगा, अब आप
पाठशाला जाकर बच्चो को पढाईये । सबको
यही कहना है की परम सात दिन के लिए दहेरादून गये है ।
ईसके ईलावा कोई बात ईस कस्बे के बहार नहीं जानी चाहिए ।

(पाठशाला के सारे शिक्षको के जाने के बाद मुखियाँ अमरसिंह का बुजुर्ग रतनसिंह के घर जाना। उनसे बात करना।)

बुजुर्ग रतनसिंह

अमरसिंहजी आओ, कैसे आने हुआ ।
कोई बात जानने को मीली ।

मुखिया अमरसिंह

चाचा, आज मेरे घर पाठशाला के सभी
शिक्षकगण आये थे। मुझसे पूछ रहे थे
परम के बारे में,
कैसे-वैसे कर के मैने उन्हे अभी तो समजाया है।
मगर कब-तक ऐसे हम
सब लोगो को समझायेगे ।
ईस बात का छुपा के रखेगे। की
परम को हमने कस्बे के दो लोग
अब्दुल शेख और किशन पहेलवान के
साथ कंचनजंगा की आखरी उँची चोटी पर भेजा है।

बुजुर्ग रतनसिंह

बेटे थोडा सा सब रखना होगा। ऐसे कामो मे कुछ वक्त तो लगता है।
सब ठीक हो जायेगा ।

मुँखिया अमरसिंह

चाच पाँच दिन होने को है।
पाठशाला के शिक्षकगण के अलावा पाठशाला के छोटे-बडे बच्चे लोग, कस्बे के लोग भी पूछ रहे है। अचानक से परमकुमार कहाँ चले गये ।

सीन-24

आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा-टाईम-सुबह

(सुबह होते ही परम का अब्दुल शेख और किशन पहेलवान के साथ आगे की सफर शुरु करना। चलते-चलते तीनो का एक बड़ी सी चट्टान के पास ठहरना। जो बडी उँची और टेडी-मेडी सी और खतरनाक भी, उस पर रस्सी के सहारे उपर चढना था 1)

अब्दुल शेख

कल रात के उस बर्फिले तुफान से
हम तीनो बहार निकल आये,
खुदा हंमेशा, नेक बंदो की हिफाजत करता है ।

किशन पहलवान

मगर अब्दुल तुम्हे तो सर पे चोट लगी है।

अब्दुल शेख

यह चोट तो मामुली है, ठीक हो जायेगी ।

परम

मैने पहेलीबार ऐसा खतरनाक तूफान देखा ।
उस बर्फिली हवाओ के कारण हम टेन्ट के साथ
तीनो का दुर उड जाना ।

किशन पहेलवान

यह तो कुछ नहीं परम
ईसके आगे ईस तुफान से भी बडा एक
खतरा आनेवाले है ।

परम

कैसा खतरा
किशन पहेलवान
अपना हाथ ऊँचा करके एक बड़ी सी
ऊँची सी चट्टान को दिखाना ।

परम

चट्टान को देखना
जो बहुत फैली हुई थी। कुछ ज्यादा उँची भी थी ।
क्या है यह,

अब्दुल शेख

परम तुम्हारी मंजिल बहुत करीब है मगर,
वहाँ पहोचने के लिए हम लोगो को
ईस चट्टान को पार करना होगा ।
वह भी चलते-चलते नही,
रस्सी के सहारे उपर चढना होगा ।

किशन पहेलवान

ईस चट्टान को देख रहे हो ।
जो बहुत टेडी-मेडी और खतरनाक है ।
जिस पर चढ़ने के वक्त तुम्हे बहुत ही सँभलकर
ध्यान देना होगा ।
हम है, तुम्हारे साथ
पहले हम तुम्हे उपर रस्सी के सहारे भेजेगे ।
उसके नीचे हम लोग खडे रहेगे ।

परम

दोस्तो, ईसके अलावा कोई और रास्ता नही

अब्दुल शेख

नही, परम एक ही रास्ता है।
उस चट्टान पर पहुँचने के बाद तुम

आसानी से कंचनजंगा की आखरी और
ऊँची चोटी पे खडी हिमशीला तक पहुँच सकते हो ।

परम

यह बात है अब्दुल
तो मे तैयार हूँ। जो होगा वो देखा जायेगा ।
तुम दो लोग हो। मुझे कीसी बात का डर नहीं ।
(अब्दुल शेख और किशन पहेलवान का पहेले परम को रस्सी के सहारे चट्टान पर पहुँचाना। बाद में चट्टान के उपर से परम का रस्सी के सहारे अब्दुल शेख और किशन पहेलवान को चट्टान पर ले आना ।)

सीन-25

आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा-टाईम-रात

(कंचनजंगा की सबसे ऊँची और आखरी चोटी से कुछ ही दूर परम, अब्दुल शेख और किशन पहेलवान ठहरना, रुक जाना आगे का सफर सिर्फ परम को अकेले ही तय करना। अब्दुल शेख और किशन पहेलान दोनो का परम से बाते करना । वापस नीचे कस्बे पर लौटाना ।

किशन पहलवान

परम तुम्हारी मंजिल आ गई,
ईसके थोडे दूर जाने पर तुम्हे
वह बडी हिमशीला देखने को मिलेगी ।
उसके आगे तुम्हे जाना है।

अब्दुल शेख

परम हम तो वापस चलते है ।
अपना खयाल रखना
खुदा तुम्हारी हिफाजत करे,
ईस रहस्य से पर्दा उठाने में तुम्हे ताकात दे ।

परम

मेरे प्यारे दोस्तो सही सलामत तुम वापस
कस्बे पहुँच जाव, कस्बे के सारे लोगो से
मेरे प्यारे बच्चो से कहँना ।
में जल्द ही वापस लौट आउँगा ।

किशन पहेलवान

कस्बे के नीचे से उपर यहाँ पहुँचना कठिन है।
वैसे ही यहाँ से वापस नीचे कस्बे में जाना
हमारे लिए आसान है ।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करूँगा ।
तुम्हे ईस कार्य में सफल करे ।
(परम का अब्दुल और किशन दोनो को गले लगाकर वापस भेजना ।)

सीन-26
आउटडोर-लोकेशन-हिमशीला-टाईम-सुबह

(परम का चलते-चलते एक बडी हिमशीला के सामने पहुँचना। उस हिमशीला पर संस्कृत में लिखा हुआ देखना और पढ़ेंना। परम का गहँरी सोच में डूबना। अपने आप से बात करना। परम का आत्ममंथन।)

परम

हिमशीला पर संस्कृत में दो लाईने लीखी थी।
"अग्र गच्छति भयावह, निवेदीत शीधम
वापसी, जीवन संकटम अस्तु।"
पढना।
कृपया आप से निवेदन है।
ईस हिमशीला के आगे जाना आपके लिए
सही नही है।, तो वापस लौट जाईए।
आप की जान को खतरा है।
अर्थ होना है।
परम गहरी सोच में ..
आत्म मंथन
कश्मकश मे आ जाना
दिमाग कह रहा है। आगे जाना खतरनाक है।
वापस लौट जाओ।
मन कहँ रहा था।
हे परम तु आगे बढ जो होगा वह देखा जायेगा।
दूसरी और कस्बे के लोग मुखिया की
बुजुर्ग रतनसिंह सब व्यापारीओ के बात याद आनी।
(सुबह से लेकर शाम तक परम का सोचना, दो-तीन बार उस हिमशीला को छु ने की हिंमत करना, मगर न छु कर वापस हिमशीला से दुर आ जाना।)

सीन-27

आउटडोर-लोकेशन-हिमशीला-टाइम-रात

(परम का उस बडी हिमशीला को छु ना ।)

परम

परम का हिमशीला को छुआ वैसे ही
वह हिमशीला पीगलने लगी। और एक
बडे दरवाजे के रुप में परिवर्तित हो गई
परम को यह अजीब लगना ।
परम ने हिंमत कर उस दरवाजे को छुआ
वह दरवाजा अपने-आप खुलने लगा। एक दिव्य तेज से पुरा शिखर जगमगाने लगा।
जैसे ही परम का आगे बढना ।
वह दरवाजा कुछ क्षण बाद वापस
हिमशीला में परिवर्तित हो गया ।
मन ही मन सोचने लगा। यह में कहाँ आ गया हूँ।
हिंमत के साथ परम का आगे बढना
क्योकि में वापस तो अब जा नहीं पाउँगा । आगे बढने में ही समझदारी है ।
परम की आँखो के सामने ..
एक मनोहर नयनरम्य फूलो का सुनहरा बाग दिखना,
जिसमे कई तरह से सुंदर फूलो से भरा था ।
कुछ आगे बढने के बाद,
एक सरोवर का दिखाई देना ।
जिसका पानी आईने की तरह साफ था ।
उस सरोवर के आसपास सुंदर कमल-पुष्प खिले थे ।
दो हँसो का जोडा था। जो उस सरोवर में एक-दूसरे से क्रीडा कर रहे थे।
(पानी में मस्ती करना।)
सूर्योदय होने में कुछ देर थी, जिसके कारण पूरा सरोवर गुलाबी और लाल रंग से खिल उठा था ।

पुरा वातावरण गुलाबी लालि से भरा उठा था ।
परम का अपने आप से बाते करना ।
कहीं में स्वर्ग में तो नही आ गया ।
कुछ चलने के बाद परम को कुछ आहट और शोर सुनाई देना ।

सीन-28

आउटडोर-लोकेशन-आसमान की परियों का देश-टाईम-सुबह

(परम को कुछ आहट और शोर सुनाई देना, उस दिशा की और आगे बढना और देखना ।)

परम

एक श्वेत पंखोवाली, श्वेतवस्त्रो से सज्ज,
एक आसमान की परी, उस फुलो के बागे में,
फुलो से बने झुले पे आकर बैठ गई,
हँसते खिल-खिलाते जोरो से झुले पर,
झुलने का आनंद लेने लगी ।
परम की आँखे स्तब्ध रह गई, आश्चर्यचक्ति हो जाना,
यकीन न होना की यह ख्वाब है या हकीकत
उस आसमान की परी की आँखे नीली थी ।
जिसकी झुल्फे बहुत लंबी थी ।
जिसका चहेरा उस सूर्योदय की लालिमा जैसा था ।
बिलकुल शांत और मासुम
वहाँ के आसपास के वातावरण के
कारण तथा हिमपर्वत के श्वेतरंग से बना
आहलादक खुशनुमा मौसम,
फूलो के बाग में फैली हु, खुश्बु से
मानो वह कोई स्वर्ग की अप्सरा हो ।
कुछ देर बाद वह झुले से उतरकर अपने
श्वेतपंखो को फैलाये उस सरोवर की और
उडने लगी। जहाँ पे और तीन परीयाँ आपसेमें
आँख मिचौली खेल रहे थे। वह भी उनके
साथ खेलने में मशगुल हो गई ।
तीन परीयाँ का उस नीली आँखोवाली परी को अंतरा कहँकर बुलाना ।

(यह सब परम पेड के पीछे छुपकर देख रहा था। परम का मन ही मन मान लेना की वह आसमान की परियो के देश में आ गया है। जो सिर्फ परम ने किताबो और कहाँनियो में पढ़ा था।)

अंतरा

अपनी तीन सहेलीयो को वापस जाने को कहँना ।
खुद सरोवर मे से एक कमलपुष्प लेकर शिव के मंदिर में जाना ।

परम

सही मौको की तलास में था। की वह अंतरा से बात करे ।
अचानक से मुझे सामने देखकर वह भयभीत या भाग न जाये ।
फिर भी हिंमत करके उसके सामने जाने का तय कर लिया ।

अंतरा

शिव का पूजा करने के बाद अपने पँख फैलाये उडनेवाली थी ।
तब ही उसे अपने नाम की आवाज सुनाई दी, सुनिये अंतराजी,
आस-पास अपनी नजरो से देखा ।
सामने कोई ईन्सान दिखाई दिया ।
अचानक से अपनी दुनिया में कीसी
ईन्सान को देखकर अंतरा का बेहोश हो जाना ।

परम

अंतरा जमीन पे गिरनेवाली थी, की
परम ने उसे गिरने से संभाला ।
सरोवर से कुछ जल की बुंदे,
हाँथो मे लेकर अंतरा के चहेरे पे डॉलनी ।

सीन-29
आउटडोर-लोकेशन-आसमान की परियो का देश-टाईम-सुबह

(अंतरा का होश में आना। अपने सामने ईन्सान को देखकर अंतरा खडी होकर कुछ दुरी पे चले जाना। अंतरा का परम से बात करना ।)

अंतरा (नायिका)

गुस्से से
कौन हो तुम
कहाँ से आये हो,
हमारी ईस दुनियाँ में ईन्सान आ नहीं सकता ।
तुम कैसे यहाँ पहुँचे ।
हमें कोई आम ईन्सान छु नहीं सकता ।
तुमने कैसे हिंमत की हमें छुने की ।

परम

तुम बेहोशी में गिरनेवाली थी ।
ईसलिए हम ने तुम्हे संभाला ।
रही मेरी बात, मेरा नाम परम है।
में कंचनजंगा के नीचे आये कस्बे में रहताँ हूँ।
छोटे-बडे बच्चो का पाठशाला में संस्कृत पठाँता हूँ।
मैंने पहलीबार ईस सुंदर आसमान की परियो की दुनियाँ देखी है ।
मुझे अभी भी यकीन नहीं है। की में एक सुंदर परी के सामने
बात कर रहा हूँ। यह सब मेरे लिए एक काल्पनिक है ।
आसमान की परियो के बारे में सिर्फ किताबो और कहाँनियो में पढ़ा है।

अंतरा

हमे सच-सच बताओ
तुम यहाँ ईतनी उँचाई पे कैसे और क्यूं आये हो ।
अपना उद्देश्य बताओ ।

परम

पिछले छ महिने से ईस कंचनजंगा में कुछ ना कुछ अनहोनी घटनाँए होती रहती है।
कंचनजंगा में घूमने-फिरनेवाले लोगो की संख्या में काफी कमी हो गई है।
कंचनजंगा का नाम सुनते ही लोगो के मन में डर सा बन गया है।
क्यूं उस हिमशीला के आगे बढ़ने पर वह
लोग पागल हो जाते है, जिन्दा लाश बन जाते है।

अंतरा

जो लोग कंचनजंगा घुमने-फिरने आते
उन लोगो को कभी भी कुछ नहीं होता है, होता है।
तो उन लोगो जो कंचनजंगा की सबसे
ऊँची चोटी के आगे खडी हिमशीला को पार करने का सोचते है।
जिनके ईरादे सही नही होते ।
वही लोग पागल हो जाते है ।
अपनी याददास्त भूलकर जिंदालाश बन जाते है।

परम

पर क्यूँ ऐसा होता है। कुछ लोगो के कारण कई सारे लोगो को परेशानी उठानी पडती है । कस्बे के बहुत सारे लोगो का गुजारा कंचनजंगा में आनेवाले यात्री पर्यटको के कारण चलता है। कई सारी अनकही, अनसुनी अफवाओ के कारण अभी कंचनजंगा घुमने-फिरने को कोई भी नहीं आता । में परम उस कस्बे में रहनेवाले बच्चो उनके माता-पिता, और छोटे-बडे व्यापारीओ की ईस परेशानी को दूर करने यहाँ पे आया हूँ ।

सीन-30
आउटडोर-लोकेशन-आसमान की परियो का देश-टाईम-सुबह

(परम का अंतरा से आसमान की परियो की दुनिया के बारे में सब-कुछ जानने की ईच्छा जाहिर करना। अंतरा का गुस्से के साथ परम को बहुत कुछ कहँना ।)

परम

क्या में आप की ईस दुनिया के बारे में जान सकता हूँ ।

अंतरा

गुस्से से
क्या जानना चाहते हो ।
क्यु जानना चाहते हो ।
ईसलिए की हमारी ईस खुबसुरत दुनिया
के बारे में जानने के बाद तुम अपनी
दुनिया में जाकर सब को बता सको
की हकीकत में हम परियो की दुनिया होती है।
हम सिर्फ कहाँनियो और किताबो में नहीं ।
वास्तविकता में भी हमारा वजुद है ।

परम

अंतरा नहीं मेरे कहने का मतलब यह नहीं था ।

अंतरा

हम हमारी दुनिया में कोई अन्जान ईन्सान को नहीं आने देते ।
मगर तुम्हारा यहाँ तक हमारी दुनिया में आ जाना ।
यही प्रमाण देता है।
परम की तुम एक नेक, सच्चे और पवित्र आत्मावाले हो ।
जो ईन्सान तन और मन से पवित्र होता है ।

वही उस हिमशीला के आगे बढ़ सकता है ।
मैं चाहती हूँ। तुम वापस लौट जाओ ।

परम

मैने यहाँ पर जो कुछ देखा है, महसुस किया है,
सुना है, ईस सुंदर आसमान की दुनिया के बारे में,
किसी से भी कुछ नही कहूँगा। यह मेरा आप से वादा है।

अंतरा

तुम कहते हो, की तुम हमारी दुनिया और हमारे बारे में
किसी से कुछ नहीं कहोंगे, मगर हम कहते है । यहाँ से जाने के बाद,
तुम कीसी को कुछ कह पाने के लायक नहीं रहोगे ।
तुम्हारी हालत भी उन लोगो की तरह होगी,
जो पागल होकर अपनी यादद्वास्त भूल चुके है ।

परम

अंतरा, फिर भी में यही कहूँगा
मैं आप की दुनिया के बारे में पूरा
जान सकता हूँ ।
वैसे भी में नीचे जाकर सब-कुछ
भुल जानेवाला हुँ ।
भूल जाना और याददास्त चली जाने से
पहले ईस सुंदर सी दुनिया को
अपनी आँखो में बसाना चाहता हूँ।
एक सपने की तरह,

सीन-31

ईनडोर-लोकेशन-पाठशाला-टाईम-दोपहर

(पाठशाला का पूरा शिक्षकगण तथा विधाधन ट्रस्ट के चेरमेन गोविंदराय माथुर को मालुम हो जाना कि, मुँखिया अमरसिंह, बुजुर्ग रतनसिंह और व्यापारीगण के कहने पर परम का कंचनजंगा की सबसे ऊँची चोटी पर जाना। उन सभी को पाठशाला की औफिस में बुलाना ।)

गोविंदराय माथुर

मैने जो सुना है, वह सही है।
मुँखिया अमरसिंह
क्या सुना है।
परमकुमार के बारे में,
आप सभी लोगो ने उस कंचनजंगा
की सबसे ऊँची चोटी पर भेजा है।
वह भी अकेले,
मुझे सब मालुम हो चुका है,
अमरसिंह जी आप तो ईस कस्बे के मुखिया है ।
आप से मुजे यह उम्मीद नहीं थी ।
मुँखिया अमरसिंह
शुरु से लेकर आखीर तक, की सभी बाते गोविंदराय माथुर
को कहँनी ।

शिक्षकगण

आप लोगो ने हम से, ईस पाठशाला,
के सभी बच्चो से यह बात छुपाई,
जुठ बोले की परम सात दिनो के लिए
दहेरादुन गये है ।
पाठशाला के कुछ जरुरी काम के लिए,
हमने जब गोविंदराय माथुर सें टेलिफोन
से बात की, तब हमे मालुम हुआ ।

व्यापारीगण

छ महिने से कंचनजंगा में घुमने
फिरनेवाले लोग, पर्यटको विदेशीओ
का आना कम हो गया है।
हमारे सारे धंधे ठप हो और बंद हो
चुके है। ईस रहस्य से पर्दा उठाने के
लिए एक ही उम्मीद की किरण थी ।
वह परमकुमार,

गोविंदराय माथुर

आप लोगो की यह बाते मेरी
समझ के बहार है, में ईन रहस्यो को,
मुखिया अमरसिंह की बातो को नहीं मानता ।
यह सब काल्पनिक बाते है ।

बुजुर्ग रतनसिंह

सुनो, बेटे
कुछ बाते ऐसी होती है, जो हमारे समझ में नहीं आती,
मेरा यकीन करो, परम
सही सलामत वापस आयेगा ।
कुछ दिन तक ईन्तजार कर लो ।

गोविंदराय माथुर

चाचा आठ दिन हो चुके है।
परम के न आगे कोई है। न पीछे कोई है ।
सिर्फ में परम को अपने बेटे की तरह मानता हूँ ।
उसके साथ कुछ अनहोनी हुई तो में आप सब लोगो को छोडुंगा नहीं ।
मैं आप लोगो को तीन दिन का वक्त दे रहा हूँ।
मुझे परम सही सलामत ईस पाठशाला में चाहिए ।

सीन-32
आउटडोर लोकेशन-आसमान की-
परियो का देशटाईम-सुबह-

(अंतरा का फिर भी परम को समझाना। वापस नीचे जाने को कहँना। परम की दुनिया की कुछ वास्तविकता और हकीकतसुनानी ।)

अंतरा

मान लो हम ने तुम्हे हमारी ईस
आसमान की परिया की दुनिया के
बारे में सब-कुछ बता दिया ।
पर तुम जानते हो ।
तुम्हारी जो दुनियाँ है, उसमें रहनेवाले लोगो की कुछ कडवी वास्तविकता भी है ।
बहार से जितने अच्छे और सुंदर है।
उतने ही अंदर से बुरी और जहरीले है।

परम

मैं कुछ समझा नहीं,
तुम क्या कहँना चाहती हूँ ।

अंतरा

आज ईन्सान बहुत स्वार्थी और नीच बन चुका है,
ईश्वर ने केवल ईन्सान और औरत बनाये, रहने के लिए
जमीन पीने के लिए पानी, खाने के लिए अन्न
श्वास लेने के लिए हवा, बहुत ही सारी
खुबसुरत सी चीजे दी है।
सोचने के लिए दिमाग
ईस पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश,
से बने हुए शरीर को तुम लोगो ने काम
और वासना से जोड दिया ।

तुम्हारी दुनिया में आज के दौर क्या कुछ हो रहा है।
वह हम सब जानते है ।
मगर कभी तुम्हारी दुनिया में आकर
हमने हस्तक्षेप या नुकशान नहीं किया ।

परम

हम मानते है, की हमारी दुनिया,
बहुत आगे बढ़ रही है। प्रगति और
विकास के साथ-साथ हमने हमारे
मन के मानवीय गुण को बहुत पीछे
छोड दिया है ।
प्यार, त्याग, समर्पण, बलिदान
दुसरो के दुखो को नजर अंदाज करना ।

अंतरा

ईश्वर ने केवल ईन्सान बनाया, की
वह नीचे जाकर एक नई दुनिया बनाये
मगर जैसे-जैसे आप लोग आगे बढते
गये वैसे-वैसे तुम लोगो में जात-पात उँच-नीच,
अमीर-गरीब, हिन्दु-मुस्लिम, शीख, ईसाई,
जैसे धर्म को लेकर बटॅवारा फैलने लगा ।
देश-देश के बीच समाज और परिवार
के बीज एक अंतर बन चुका है।
ईच्छा-देष, दुश्मनी ईतनी बढ़ चुकी है।
चोरी-लुट, बलात्कार, युध्ध की स्थिती
पे आकर ठहर गई है ।
ईस कारण हम नहीं चाहते की हमारे
दुनिया के बारे में कोई कुछ जान सके ।

परम

सुनो, अंतरा
हमारी दुनिया ईतनी भी बुरी नहीं है, की आप हमारे बारे में
कुछ भी सोचे-समज ले । कुछ एसी बाते है, जो आप भुल रहे हो ।

अंतरा

मै यह नही कहँती, की
आप की दुनिया बुरी है, मगर जिस तरह
से आप लोग ईश्वर के बनाये नियम
तोड रहै है, उसे देखकर डर और चिंता जरुर हो रही है।
आज का ईन्सान
अंतरीक्ष में पहुँच गया है,
समुंदर के भीतर जाकर सच्चा मोती,
और खजाना ढूँढ सकता है।
यहाँ तक की धरती (जमीन) नीचे तक
जाकर कुदरत की समतुला को ही नष्ट कर दिया है।
तुम्हारी दुनिया में भुंकप का आना समुंदर में सुनामी और तुफान आना
मौसम के विपरीत बारिश, ठंडी और गरमी का लगना ।
यह सब ईश्वर की बनाई सुंदर दुनिया के नियमो को, तोडने के कारण हौता है।

सीन-33
आउटडोर-लोकेशन आसमान की परीयों का देश-टाईम-शाम

(परम का अंतरा की कहीं हुई सब बातो का प्यार से जवाब देना, अपनी दुनियाँ की बहुत सारी अच्छाईओ से अंतरा कोवाकिफ करवाना ।
परम और अंतरा के बीच बातो-बातो में सुबह की शाम हो जाना ।)

परम

आज भी हमारी दुनिया में ईश्र्वर को
मानते है। वह चाहे कीसी भी रुप में क्युं न हो,
किसी के लिए ईश्वर है,
किसी के लिए अल्ला है,
किसी के लिए गोड,
तो किसी के लिए वाहे गुरु,
जिन्होने यह पुरी दुनियाँ बनाई,
हमे बनाया, तुम्हे बनाया।
आज भी हमारे दिल में ईन्सानियत है,
क्या बुरा है, क्या सही, यह हम बखूबी समझते है,
आज भी हमारे दिल में प्यार, त्याग,
बलिदान जैसे गुण मौजूद है।
किसी का दर्द देखकर आज भी
हमारी आँखो में से आँसु आ जाते है

अंतरा

परम तुम्हारी हर एक बात सही है,
मगर हमारी दुनिया के कुछ नियम है,
उसे हम नही तोड सकते ।

परम

बहुत कुछ पा लिया है, हम लोगो ने,
मगर कुछ ऐसी बाते, रहस्य है।
जो आज तक हम नहीं जान पाये या,
ढूँढ सके, हमारे में कुछ जानने की
जिज्ञासावृति है, जो हमे नयी-नयी जगहो पर
जाने के लिए प्रेरित करती है ।

अंतरा

परम देखा शाम होने को आई है,
अभी हमारे जाने का वक्त हो गया है, सोच लो,
अभी हम तुम्हे सबी सलामत नीचे
वापस भेज सकते है ।
क्योकि ईस हिमशीला को वही पार कर सकता है ।
जो ईन्सान निष्पापी, निष्कलंकित, धैर्यशील, और जिनका मन पवित्र है,
जिसने कभी भी कीसी का दिल दुखाया नहीं,
परम तुममें वह सभी गुण मौजूद है ।

परम

दूसरी बार तुम से यही कहना है ।
मैं आप की दुनिया के बारे में
जानना चाहता हूँ। ना मेरे कोई आगे है,
और न कोई पीछे,

अंतरा

परम अगर आप हमारी दुनिया के
बारे में जानना चाहते हो, तो में
अंतरा आप को हमारी आसमान की परियो की
दुनिया के बारे में बतायेगे सबकुछ,
परम हम ने आपकी आँखे और आपका
चहेरा पढ़ें लिया है। आप दिल से बहुत
अच्छे और नेक हो ।
आप का यहाँ पर आना वह भी

दुसरो के लिए, उनके दुख दुर करने, मगर यहाँ
पर आप जो कुछ भी देखोगें,
वह आप को नीचे जाने के बाद (कस्बे में)
कुछ भी याद नहीं रहेगा। तुम्हारी याददास्त
चली जायेगी । तुम पागल हो जाओगे ।
क्या यह मंजुर है। तुम्हे,

परम

हँसकर अंजाम जब मालुम है,तो
फिर क्युं वापस लौटना, मुझे
अंतरा आप की यह बात मंजूर है,
मगर मेरी एक बात आपको माननी होगी,

अंतरा

परम कैसी बात

परम

कंचनजंगा में फिर से घूमने-फिरने
वाले यात्री, पर्यटको, विदेशीयो का आना, बढ जाना चाहिये ।
कस्बे में फिर से तेजी और खुशहाली बनी रही,

अंतरा

हमे मंजुर है,
परम तुम्हे तीन दिन में,
हमारी आसमान की परियो की दुनियाँ
के बारे में सब-कुछ दिखायेगे ।
अंतरा का आँखे बंद करके
अपने हाथो में एक अंगुठी का लाना ।
परम को देना ।

परम

अंतरा यह अंगुठी किस लिए,

अंतरा

परम यह अगुंठी अपनी उँगली में,
पहन लो, पहेली उँगली में,
यह अँगुठी जब-तक तुम्हारी उँगली में,
रहेगी। तब-तक मेरे सिवा तुमको
कोई भी देख नहीं सकेगा ।
(उसी दौरान बर्फ की बारिश शुरु हो जाना ।)

सीन-34
आउटडोर लोकेशन आसमान की
परियो का देश-टाईम-रात

(अंतरा का परम को अपनी आसमान की दुनिया में ले जाना ।)

अंतरा

बर्फ की बारिश बंद होने के बाद
अंतरा का परम से कहना
परम हम आसमान की परिया
शुक्र (विनस) ग्रह पर रहते है ।
हम सब मिलकर चार परिया है,
हम वहाँ उड-कर जा सकते है।
मगर

परम

मगर क्या अंतरा कुछ कहते-कहते
क्यु रुक गई ।

अंतरा

परम तुम्हे वहाँ ले जाने के लिए
हमे श्र्वेत अश्व (युनिकोर्न) को,
बुलाना होगा ।

परम

श्र्वेत अश्व (युनिकोर्न) क्या होता है।
अश्र्व का मतलब घोडा होता है ।
श्र्वेत का मतलब सफेद होता है।

अंतरा

यह श्र्वेत अश्व कोई मामुली घोडा नहीं,
ईस अश्व के सिर पर सोना का शींग होता है,
जो पुरे अंतरिक्ष में घुम-फिर सकता है।
जिनको देखना ही शुभ माना जाता है।
जिनके पास दो सुनहरे पँख होते है ।
जिसे अच्छी तरह देखा भी नहीं जा सकता ।
उतना उसमें तेज भरा होता है ।

परम

अंतरा कुछ-कुछ तुम्हारी बाते मेरे समझ में आ रही है।
क्या मुझे उस श्र्वेत अश्व पर सवारी करनी होगी ।

अंतरा

तुम तो बहुत जल्दी समज गये ।
हमारी बात, क्या में उस श्वेत अश्व
को बुला लूँ । तुम उस पर सवारी करोंगे ।

परम

सुनो अंतरा
आज तक हमने हमारी दुनिया के
किसी मामुली घोड़े पर भी सवारी नहीं की,
और तुम कहँती हो की में ईस अंतरिक्ष
के श्र्वेत अश्व (युनिकोर्न) पर सवारी करूँ,
थोडा मुश्किल है ।

अंतरा

मुश्कील कुछ नहीं होता सब मुमकीन है।
बस ईरादा मजबुत होना चाहिए ।
हम है ना तुम्हारे साथ, परम ।

परम

अंतरा देर किस बात की, बुला दो,
हम उस श्र्वेत अश्व की सवारी जरुर करेंगे ।

अंतरा

अपनी आँखे बंद करके श्र्वेत अश्र्व
(युनिकोर्न) के बारे में सोचना ।
आस-पास का सारा माहोल ऐक
चमकीले प्रकाश से भर जाना ।

(परम और अंतरा के साँमने उस श्र्वेत अश्व (युनिकोर्न) का प्रगट होना। उँस श्र्वेत अश्व की आँखे नीली थी। जिसका रंग आसमान के बादल से भी कही ज्यादा सफेद था। जिसके सिर पर सोने का शींग था। उस श्वेत रंग के कारण उसकी शोभा में चार चाँद लग जाना। अंतरा के कहने पर परम का उस श्र्वेत अश्व के सिर पर प्यार से हाथ रखना ।)

सीन-35
आउटडोर-लोकेशन-परियो का देश-टाईम-सुबह

(परम का उस श्वेत अश्व पर सवार होना, अंतरा के साथ-साथ अंतरिक्ष में उड़ना। शुक्र (वीनस) ग्रह पर पहुँचना ।

अंतरा

परम ईस श्र्वेत अश्व की सवारी
कैसी लग रही है।

परम

अंतरा सच बात बताउँ मुझे
जैसा प्रतिक होना की में गहरी
नींद में हूँ यह मेंरे लिए एक
सुंदर सपने की तरह है।

अंतरा

जब-तक तुम्हे हमारे साथ हो यह
सब तुम्हारे लिए हकीकत है ।
ईस आसमान की परियो की दुनिया से जाने के
बाद यह तुम्हारे लिए एक सपना ही बन जाएगी ।

परम

अंतरा मुझे ईस बात का पता है।
सपना ही सही, वैसे ईन सपनो के
सिवा मेरा अपना कोई नहीं ।
हँसते-हँसते परम की आँखो में
आँसुओ का आ जाना ।

अंतरा

परम की तरफ देखना । सब कुछ समझ जाना ।
उसी दौरान परम-अंतरा का शुक्र (वीनस) ग्रह पर पहुँच जाना ।
(शुक्र (वीनस) ग्रह अपने आप में एक तेजमय और सुंदर ग्रह था। जिस पर, एक सुंदर तालाब था। उस तालाब में खिले कमल पुष्प ईतने बड़े थे। की मानो की वह कमल पुष्प नहीं बल्कि कीसी के रहने की जगह हो ।)

परम

चारो और नजर फैलाना, आश्चर्यचक्ति होकर कहँना,
यह तालाब के कमल पुष्प ईतने बडे क्यूँ है ।

अंतरा

यह जो कमल पुष्प तुम देख रहे हो,
परम वह कमलपुषअप हम आसमान की
परियो के लिए रहने और सोने की जगह है ।
हम चार परियाँ, अंतरा, निशा, तारा और आंकाक्षा
ईन अलग-अलग कमल पुष्प में रहते है ।

परम

अंतर मुजे यकीन नहीं हो रहा ।
कैसे तुम सब ईन कमलपुष्प में रहती हों,

अंतरा

तालाब के पास जाकर अपने कमलपुष्प को छु ना ।
छु के ही कमलपुष्प का चारो और से खिलना ।
अंतरा को कमलपुष्प के अंदर जाते ही कमलपुष्प का सिमट जाना ।
थोडी देर के बाद कमलपुष्प के खिलते ही अंतरा का बहार निकलना ।

परम

बडी ही सुंदर और अदभूत दुनिया है।
आप आसमान की परियो की अंतरा,
क्या तुम चारो के सिवा यहाँ और कोई रहता है।
कैसे तुम यहाँ रहते हो, वैसे

अंतरा

हम चारो आसमान की परियो के सिवा
यहाँ पे ईश्वर के दुत, देवदुत हमारा
खयाल रखते है। हम परोक्ष या प्रत्यक्ष आकर
हम निर्देश करते है। जो हम चारो के लिए पितातुल्य है ।

सीन-36
आउटडोर लोकेशन-आसमान की-
परियो का देश टाईमशाम-

(अंतरा ने परम को जो तीन दिन दिये थे। उसमे से दो दिन गुजर जाना। आखरी तीसरे दीन शाम को अंतरा का परम के साथ उस बडी हिमशीला तक साथ जाना ।) (परम और अंतरा का एक-दूसरे से बाते करना ।)

अंतरा

परम अपनी आँखे बंद कर लो,
तुम्हे में नीच कस्बे में पँहोचा दूँगी,

परम

अंतरा तुम से कुछ बात करना चाहता हूँ,
अभी तीन दिन पुरे होने में आधी
शाम और रात बाकी है।

अंतरा

बोलो- क्या कहना चाहते हो,

परम

काश यह तीन दिन मुझे जिन्दर्गीभर याद रहते ।
मगर यह मुमकीन नहीं,
नीचे कस्बे में जाने के बाद यह तीन दिन
तुम्हे अंतरा और तुम्हारी आसमान की परियो की दुनिया
के बारे में कुछ भी याद नहीं रहेगा ।
यह सच है ना,

अंतरा

(परम तुम्हे हमने पहेले ही बता दिया था। यह तो होना ही था । यह कहते-कहँते अंतरा की दो आँखो में दो आँसु का आ जाना । दोनो के गिरते ही वह आँसु का दो मोती, बन जाना ।)

परम

यह सब देखकर परम का अंतरा से कहँना अंतरा तुम्हारी आँखो में आँसु, क्युं । उनका मोती बन जाना ।

अंतरा

परम कुछ नहीं, जब आसमान की परियो के आँखो में से आँसु गिरते है, तो वह सच्चे मोती बन जाते है ।

अंतरा का वह दो मोती को उठाकर परम के हाँथो में देना ।

परम

अंतरा के आँसुओ के बने दो मोती को देखना ।
परम को सबकुछ समझ जाना। अंतरा
एक ख्वाहिश है, मेरी जो तुम्हे,
बुरा न लगे तो में तुम्हे कहँना चाहता हूँ।

अंतरा

परम तुम्हारी हर एक ख्वाहिश पूरी होगी,

परम

जाने से पहले में अंतरा तुम्हे
अपने गले लगाना चाहता हूँ ।
तुम्हारे माथे और तुम्हारी आँखो को
चुमना चाहता हूँ ।

अंतरा

अपने पँख और दो हाथो को फैलाये परम के साँमने खुबसुरत मुस्कान के साथ खडे रहना ।

(परम का अंतरा को गले लगाकर उसके माथे तथा दो आँखो को चुमना) उसके बाद अंतरा और परम का एक दुसरे को जी भर देखना । खामोश रहकर भी सब-कुछ कह देना ।)
अंतरा परम अपनी आँखे बंद करो, मैं तुम्हे कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष तक पहोंचा दूँगी। यह कंचनजंगा पहेले जैसा पर्यटको, यात्री, घूमने-फिरने वालो से हरा-भरा रहेगा ।

परम

प्यार से अंतरा को देखकर अपनी आँखे बंद करनी ।

सीन–37

आउटडोर लोकेशन–कस्बे के–

बहार खडे वटवृक्ष टाईमसुबह–

(परम का कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष के नीचे बेहोशी की हालत में मिलना ।)

भीमा (सुबह चार बजे)

साईकिल पे आकर अपनी दुकान खोलना ।
अपनी चाय की दुकान की साफ-सफाई के
दौरान भीमा की नजर साँमने
खडे वटवृक्ष पे पडनी ।
जहाँ कोई ईन्सान जैसा लैटा हुआ था। ईतनी सुबह,
कौन होगा, पास जाकर देखता हूँ,
मगर पास जाने से डर लगता है।
काश कोई दूसरा कस्बे का ईन्सान,
गुजरे तो दोनो साथ में जाकर देखे ।

किशन पहलवान

उसी दौरान किशन का कस्बे से निकलकर बहार आना,
सुबह की कसरत और दौडने,

भीमा

किशन पहेलवान रुको, ठहरो, यहाँ पे आओ,
किशन पहेलवान,
आवाज सुनकर भीमा के पास जाना ।
बोलो ईतनी सुबह-सुबह हमे क्यूँ बुलाया ।

भीमा

देखो सांमने खडे वटवृक्ष के नीचे लैटा है ।

किशन पहलवान

उस तरफ देखना, कोई था जो वटवृक्ष के नीचे लैटा था ।
सारी बात समज जाना ।
(दोनो का उस वटवृक्ष के पास जाना, लैटे हुए ईन्सान को देखना ।)
किशन पहलवान
अरे यह तो परम है, हमारे पाठशाला के शिक्षक,

भीमा

किशन तुम यहाँ ही ठहरो में
कस्बे में जाकर सभी लोगो को भेजता हूँ ।

किशन पहेलवान

परम को होश में लाने के लिए जगाने के लिए,
सुनो परम जागो परम उठो परम,
चाय की दुकान से पानी लाकर परम,
के मुँह पे छाँटना ।
फिर भी परम का होश में न आना ।
(कस्बे के सारे मुँखिया अमरसिंह, बुजुर्ग रतनसिंह, सब व्यापारीगण, अब्दुल शेख सभी का वटवृक्ष के नीचे ईकठ्ठा होना , परम का डॉ. गोविंद आहुजा के अस्पताल ले जाना ।)

सीन-38

ईनडोर-लोकेशन अस्पताल-टाईम-सुबह

(डॉ. गोविंद आहुजा का परम का ईलाज करना उसी दौरान पाठशाला के शिक्षकगण, सारे बच्चे और गोविंदराय माथुर का अस्पताल में आना। परम से बात करने की कोशिश करना ।)

डॉ. गोविंद आहुजा

परम को पलंग पे लैटाकर उसके
सिर आँखे और गरदन को हाथ लगाकर
चेक करना ।
कंचनजंगा के सबसे ऊँची चोटी पर से
अचानक नीचे आने के कारण, यहाँ के
वातावरण में अनुकुल होने में टाईम लगेगा,
कितना टाईम लगेगा ।
यह कुछ कह नहीं सकते ।

गोविंदराय माथुर

परम की आने की खबरे सुनते दौडते हुए अस्पताल पहोंचना,
परम से बात करने की कोशीश करनी,
बेटे, परम सुनो, कहाँ चल गये थे,
मुझसे बात करो, क्यूँ कुछ भी नहीं बोल रहे हो,
सुनो आँखो खोलो, देखना,
परम का जिन्दा लाश की तरह पड़े रहना,

डॉ. गोविंद आहुजा

देखो सुनो सरजी अभी कुछ भी कहाँ
नहीं जा सकता, हम थोडा ईतजार करना होगा ।
बाद में कुछ बोल सकते है ।
(गोविंदराय माथुर का गुस्से के साथ मुँखिया अमरसिंह व्यापारीगण और बुजुर्ग रतनसिंह के पास जाना ।

गोविंदराय माथुर

देखो तुम्हारे सभी के कारण आज
परम की हालत क्या हो चुकी है,
अगर मेरे परम को कुछ भी हुआ,
तो तुम सभी को में तारे दिखाँउगा,
जेल भेजुंगा ।

मुँखिया अमरसिंह

हा, यह सच है,
की हमारे सभी के कहने से परम
कंचनजंगा की उँची चोटी पर जाने को,
तैयार हो गया। मगर ईतना कुछ हो जायेगा ।
यह मालूम नहीं था ।

बुजुर्ग रतनसिंह

देखो बेटे, सब कुछ ठीक हो जायेगा ।
उस ईश्वर पर भरोसा रखो,
हमारी प्रार्थना ईश्वर जल्दी नहीं सुनता,
मगर देखो यह पाठशाला के सभी बच्चे
परम के ठीक होने के लिए ईश्वर से
प्रार्थना कर रहे है।

गोविंदराय माथुर

(कस्बे के सारे लोग बडे-बुजुर्ग और)
पाठशाला के सभी बच्चो का ईश्वर से प्रार्थना कर के देखना,
बच्चो के साथ सभी लोगो का परम के लिए ईश्वर से दुआ करनी ।)

सीन-39
ईनडोर-लोकेशन अस्पताल-टाईम-दोपहर

(परम का होश में आना, सबको देखना, जानना, पहेचानना, बाते सुनना, आश्चर्यचकित होना, मन ही मन सोचना, क्यूँ मेरी याददास्त चली नहीं गई, क्यूँ में पागल न हो गया।)

डॉ. गोविंदरा आहुजा)

सुनो सभी लोग,
परम को होश आ रहा है।

परम

धीरे धीरे अपनी आँखो को खोलना,
आसपास देखना,
उसके सामने गोविंदराय माथुर,
मुँखियाँ अमरसिंह, बुजुर्ग रतनसिंह,
व्यापारीगण तथा पाठशाला के सभी,
शिक्षकगण का मौजुद होना, सभी को
जानना, पहेचानना, उनको सुनना,

मुँखिया अमरसिंह

मन ही मन सोचना,
उन सभी लोगो की तरह कही परम
अपनी यादद्वास्त भूलकर पागल तो,
नहीं हो गया ।
वर्ना यह गोविंदराय माथुर मुझे और
सभी को छोडेगा नहीं,
परम बेटे तुम सही हो,
हम सब को जानते हो ना,
मैं मुखिया अमरसिंह यह बुजुर्ग रतनसिंह
सब व्यापारी लोग जानते होना ।

परम

परम का सभी को देखकर हँसना,
नही में कीसी को जानता नहीं,
मैं कौन हूँ, कहाँ हुँ, मजाक करना,
आप सभी लोगो को में कैसे भुल सकता हूँ,
जोरो से हँसना ।

मुँखिया अमरसिंह

परम तुमने तो मेरी और हम सब
लोगो की जान ले लेते,
अगर हम पहचानते नहीं तो,
लो बात करो, गोविंदराय माथुर से
जो तुम्हारे लिए बहुत चिंतीत है ।

गोविंदराय माथुर

बेटे कहा चले गये थे।
बिना बताये, एसे बिना बताये तुम
कही भी नहीं जाओगे । मैं तुम्हे वापस
दहेरादुन ले जाने आया हूँ ।

परम

सरजी में ईस कस्बे में सही हूँ।
यहाँ का हर एक छोटा-बडा बुजुर्ग जवान
छोटे-बडे बच्चे मेरे लिए मेरा एक परिवार है,
मुजे चाहते है, मुझे प्यार करते है।
मैं ईस कंचनजंगा के छोटे से कस्बे मैं ठीक हूँ ।

डॉ. गोविंद आहुजा

चलो सब लोग ईस कमरे को
खाली करो बहार ईतजार करो,
अभी परम को आराम करने दो,
उनसे ज्यादा बात कर के परेशान मत करो,

परम

सबके जाने के बाद
अस्पताल के उस कमरे मे आँखे बंद करके मन ही मन सोचता,
क्यूं मेरी याददास्त चली नहीं गई,
क्यूं में पागल न हो गया। परम को अंतरा और उसकी आसमान की दुनिया के बारे में सब-कुछ याद रहेना । अपनी उँगली में अंतरा की दी अँगूठी को देखना। जेब में हाँथ डालकर अंतरा के आँसुओ से बने दो मोती को निकालना, होठो से चुमना ।

सीन-40
आउटडोर-लोकेशन-कस्बा टाईम-सुबह

(कस्बे में खबर आना, डेविड जोन, पठान अवतारसिंह और ग्याराह लोगो जो पागल हो गये थे। उनका ठीक हो जाना। परम का सभी प्रेस और न्युज टीवी चैनलो के सामने बताना। कंचनजंगापर्वत अब पहेले जैसा सुंदर, आहलादक और सुरक्षित है ।)

मुखिया अमरसिंह

परम सुना कस्बे में खबर आई है,
वह डेविड जोन, पठान अवतारसिंह,
जिसकी याददास्त चली गई थी, उनका
ठीक हो जाना । अभी मुझे टेलिफोन से मालुम हुआ ।
उसके बाद जो ग्याराह लोगो की टीम थी। जिसका ईलाज
चल रहा था । उनको भी सब कुछ याद आ जाना ।

परम

सब कुछ याद आ जाना, उनके घर परिवार के बारे में
कंचनजंगा में उनके साथ क्या हुआ वह सब,

मुँखिया अमरसिंह

उनको सिर्फ अपने घर-परिवार के बारे में
सब-कुछ याद आ गया। उनके साथ कंचनजंगा में क्या-कुछ हुआ यह सब कुछ भी याद नहीं,
बस वह पहले जैसे ठीक और नोर्मल हो गये है।

परम

मन ही मन सोचना, कंचनजंगा की सबसे उँची,
चोटी के आगे हिमशीला के पीछे कौन-सी दुनिया है।
वह सिर्फ में ही जानता हूँ ।

मुखिया अमरसिंह

क्या सोचने लगे, परम

परम

कुछ भी नही, सुनिये मुँखिया जी,
सभी प्रेस और न्युज टी.वी. चैनलवाले का ईकठ्ठा कीजीए ।

मुँखिया अमरसिंह

क्युं परम किस लिए सब को बुलाना है।

परम

ईसलिए की पुरे देश और दुनिया को मालुम होना चाहिए,
की कंचनजंगापर्वत पहेले जैसा सुंदर और सुरक्षित है ।
अब तक जो अफवाए बाते हो रही थी। वह सब झुठ था ।
हम लोगो को यह सच बताना होगा ।
जिसके कारण फिर से कंचनजंगा में
यात्री, पर्यटको, घुमने फिरनेवालो से हरा-भरा हो जाये कस्बे में फिर से खुशहाली और तेजी आ जाये ।

मुखिया अमरसिंह

सही है, में अभी जाकर सभी प्रेस और न्युज टी.वी. वाले को बुलाकर एक मीटींग का बंदोबस्त करता हूँ ।

परम

(सभी प्रेस और न्युज टी.वी. वालो के सामने परम का बयान देना ।
(कंचनजंगा के बारे में अब तक जो भी बाते अफवाए अनकँही अनसुनी झुठी बाते वह सब बनी बनाई घटॅनाए है. वह विदेशी पर्यटक, पठान अवतारसिंह और ग्याहर लोगो अभी बिलकुल ठीक हो चुके है। में आप सब से यही निवेदन करता हूँ की अपनी न्युज पेपर या न्युज चैनल पर सच्ची बाते लिखे ।
कंचनजंगा पर्वत अब पहले जैसा सुन्दर आहलादक और सुरक्षित है।

सीन-41

आउटडोर-लोकेशन-कंचनजंगा टाईम दोपहर-

(दो दिन के बाद कंचनजंगा में पर्यटको, रिसर्च तथा देश-विदेश के लोगो का भारी संख्या में घुमने फिरने आना। पुरे कस्बे में सभी लोगो में खुशी और प्रसन्नता छा जाना। कस्बे के व्यापारीओ का बुजुर्ग रतनसिंह, मुँखिया अमरसिंह का परम से बात करना ।)

व्यापारीगण

परम तुम्हारे कारण आज फिर से,
कंचनजंगा यात्रीओ, पर्यटको से हरा-भरा,
बन गया है, फिर से हमारे धंधे में तेजी आ गई है।
परम अगर तुम न होते तो आज भी हम जो यह देख रहे वह मुमकीन न था ।

परम

अरे क्या बात कर रहे हो यह,
सब तो होता रहेता है। बस मैं. निमित मात्र हुँ ।

मुँखिया अमरसिंह

हमारा और ईस कस्बे का भाग्य है,
कि परम तुम यहाँ हमारे दुखो को दूर करने आये। वर्ना दूसरो के लिए कोई क्यो ईतना कुछ करता है।

परम

क्या मुँखिया जी यहँ कहँकर आप ने मुजे पराया कर दिया ।
में आप का अपना नहीं ।

मुँखिया अमरसिंह

नहीं परम तुम तो मेरे दिल के टुकडे हो,
यह कहकर परम को गले लगाना ।

बुजुर्ग रतनसिंह

बेटे परम मेरी कहीँ हुई बात याद है,

परम

चाचा कौन सी बात

बुजुर्ग रतनसिंह

ईश्वर कुँछ खास और नेक कर्म करने के लिए कुछ खाँस
और नेक दिल के ईन्सान को चुनता है।
याद आया परम ।
परम को अकेले में ले जाकर कहँना ।
बेटे मेरी तो उम्र हो चुकी है, कब उस ईश्वर का बुलावा आ जाये, कहँ नहीं सकता ।

परम

चाचा क्युए एसी बाते कर रहे हा,
बुजुर्ग रतनसिंह
बेटे हिमशीला के आगे तुमने क्या देखा,
कौन सी दुनिया है, यह में जानना नहीं चाहता,
मगर कभी भी उस रहस्य को किसी के सामने बयान मत करना ।
क्योकिं यह सारी दुनिया के कुछ स्वार्थी और मतलबी ईन्सान तुम्हारे
दुश्मन बन जायेगे ।

परम

चाचा में परम आप की पूरी बात समझ गया ।
में ईस बात का पूरा ध्यान रखूँगा ।
(ईसी दौरान परम को मिलने अब्दुल शेख का अपनी बच्ची तमन्ना, के साथ मिलने आना, उसके बाद किशन पहेलवान का अपनी बीवी के साथ परम को मिलने आना। दोनो में सुलह हो जाना। खुशी-खुशी दोनो साथ में रहना। यह जानकर परम का बहुत खुश होना ।)

सीन-42
आउटडोर-लोकेशन परम के घर की छत, टाईम-रात (चाँदनी रात)

(एक दिन चाँदनी रात में अंतरा का परम को मिलने आना। परम के सारे सवालो का जवाब देना, परम को प्यार से समझाना ।)

परम

अपने घर की छत पर अकेले बैठकर,
आसमान को चाँदनी रात को देखना,
मन ही मन सोचना । अंतरा के बारे में,
अंतरा के साथ बिताये,
तीन दिनो के बारे में, आसमान की परियो की
दुनियाँ के बारे में,
मेरे साथ ही क्यूँ हुआ ।
क्यूँ मेरी याददास्त चली नहीं गई,
क्यूं में पागल न हो गया ।
(ईसी दौरान परम को अपने कांधे पे कीसी के हाथो का स्पर्श महेसुस होना। पीछे पलटकर देखना, अपने सामने अंतरा को देखना ।)

अंतरा

परम पहले एकदम शांत हो जाओ ।
बेठो मेरे पास
हम तुम्हे, तुम्हारे हर एक सवाल का जवाब देने आये है ।
परम अपने दिलो-दिमाग पर ईतना भी जोर मत दो ।
परम अंतरा यह सब क्या हो रहा है, मुझे तुम्हारे बारे में,
तुम्हारी दुनिया के बारे में, सब कुछ पता है।
तुम ने तो कहाँ था। के मेरी याददास्त चली जायेगी। में पागल हो जाउँगा,
पर ऐसा कुछ तो मेरे साथ नहीं हुआ ।

अंतरा

हँसते हुए परम
तुम्हारा उस हिमशीला को पार करना ही
यही प्रमाण देता है, कि परम तुम सब से अलग है।
यह तो मैने तुम्हारा ईम्तहान लेने के
लिए तुम्हे डराने के लिए, तुम्हे वापस भेजने के लिए
झुठ कहाँ था ।
मगर तुम अपनी जिद पर अड़े रहे ।

परम

अंतरा अगर में डर जाता, तुम्हारी बात मानकर
वापस लौट जाता। तो मेरे साथ क्या होता ।

अंतरा

परम तुम सचमुच अपनी याददास्त भुलकर पागल हो जाते ।
परम जो दिल के अच्छे होते है, कर्म से नेक होते है,
दुसरो का दर्द समझते है, दुर करते है, वही हमे जान सकते है,
परम तुम अपने नाम की तरह परम हो, (पवित्र)
वही ईन्सान हमे देख सकता है, छु सकता है, हम से बात कर सकता है।
जिसका दिल और दिमाग तुम्हारी तरह परम हो (पवित्र हो,)
उसका ही हमारी आसमान की परियो की दुनिया में स्वागत है ।
परम एक जरुरी बात करनी है।

परम

बोलो, अंतरा कौन सी बात है ।

अंतरा

हमारी आसमान की परीयो की दुनिया की,
मौजूदगी और अस्तित्व के बारे में
किसी से, कभी भी, कहीं भी,
कोई बात न करना, वर्ना ईस दुनिया के कुछ स्वार्थी और जहरिले
लोग तुम्हारे दुश्मन बन जाएगे। तुम्हे जीने नहीं देगे ।

परम

अंतरा में तुम से वादा करता हूँ ।
मेरी आखरी साँस तक यह रहस्य
मेरे सीने में कैद रहेगा ।
मेरे मरने के बाद
(मेरे मरने के.. यह परम के बोलने से पहेले अंतरा ने अपने हाथो, से परम के मुँह
को बंद कर देना, उसे कुछ
आगे नबोलने देना ।)

अंतरा

परम अब कुछ भी कहने की जरुरत नहीं ।

परम

अंतरा को अपने गले लगाकर जी भरके प्यार करना ।

अंतरा

परम को प्यारभरी आँखो से देखकर वापस
अपनी आसमान की परियो की दुनियाँ में चले जाना ।

मध्यांतर

जहाँ अच्छाई ज्यादा बढ जाती है ।
वहा बुराईया भी अपनी जगह
बनाने की कोशीश मे लग जाती है ।

परम अंतरा 2 –

पात्रो (केरेक्टर)

शंशाक दुबे	न्युज रिपोर्टर
किरण	छोटा बच्चा
मंगल	बस का ड्राईवर
मि.एक्स	डेवीडजोन
छोटु	एक पहेलवान
निर्मलादेवी	शंशांक की माँ
घनश्याम	वाई ओफिस का प्युन
धवल जोशी	वाई न्युज चैनल का मेनेजर
निरव अशोक	पाठशाला के बच्चे
शंकर	पाठशाला का प्युन
नंदु	गुंडो का बोस
चीलकुट	गुंडो का बोस
पीन्टु	गुंडे का नाम
पहेलवान लोग	किशन पहेलवान के अखाडे से

देशकाल और वातावरण (ळोकेशन)

बसस्टोप	कस्बे का
ओफिस	पाठशाला की
मैदान	पाठशाला के बहार
म्युजियम	
शंशाक दुबे का घर	
वाई न्युज चैनल का ओफिस	
बस स्टोप	मुंबई बी.एम.टी.एस का
होटल का रुम	
समुंदर	मुंबई, जुहु
मेला का आयोजन	कस्बे में
एक बडा सा होल	

सीन-43

आउटडोर. लोकेशन, बस स्टोप, टाईम, सुबह

(कस्बे के थोडे दुर एक बस स्टोप था जो बहार के यात्री,
मुसाफिरो को कस्बे तक पहोचाता था ।)

बस स्टोप

एक बस का आकर रुकना ।
सभी मुसाफरो का उतर जाना । आखिर मे एक बडी बेग के साथ एक आदमी का उतरना । जिसका नाम शंशाक दुबे था ।

शंशाक दुबे

जो एक न्युज चैनल वाई का रिपोर्टर था ।

भीमा

गरमा गरम चाई पी लो,

शंशाक

एक गरम चाय देना ।
चाय पीते पीते पुछँना ।
यहाँ पाठशाला कहाँ पे है ।

भीमा

क्युँ पठने के लिए जाना है ,
हँसते हुँए कहाँ,

शंशाक

नही दोस्त मुजे शिक्षक परम
से मिलना है ।

भीमा

अरे साबजी परम तो ईस कस्बे की
जान है, शान है ।
सुना सीधे-चलने के बाद एक
मोड आएगा । वहाँ से कुछ दुर
आप को पाठशाला दिखाँई देगी ।

शंशाक

कुछ चलने के बाद पाठशाला के
सामाने पहोंचना । अपने केमेरे मे
पाठशाला की तस्बीर खींँचना ।

सीन-44

ईनडोर , लोकेशन, पाठशाला की ओफिस , टाईम-दोपहर

(शंशाक डुबे का पाठशाला मे जाकर परम से मिलना ।)

शंशाक

परम के पास जाकर अपना आईडी कार्ड दिखाना । में न्युज चेनल वाई से आया हुँ
आप का ईन्टरव्यु लेना है ।
आप के साहस और कस्बे के जीवन को बदलने के लिए आपने जो भी परिश्रम
किया है । वह जानना है ।

परम

अच्छी बात है, शंशाक पर मुजे माफ करना । मुजे कोई ईन्टरव्यु नहीं देना ।

शंशाक

क्यु सर

परम

मेरे पास बहुत काम है
पाठशाला के बहुत से काम बाकी है । में अपना समय नही दे पाउँगा ।

शंशाक

आप के पास जब भी समय मिले ,
सुबह, दोपहर नहीं तो रात को भी हम बात कर सकते है ।

परम

कोशिक करुगाँ ।

शंशाक

अच्छा मे यहाँ सात दिन रहेनेवाला हुँ । कोई रहेना का प्रबंध है।

परम

यहाँ छोटी सी होटल है ।
जहाँ आप का रहेना का बंदोबस्त हो जाएगा ।

शंशाक

उठकर परम से हाथ मिलाना परम ओके
(शंशाक का पाठशाला की ओफिस से बहार निकलना ।)

सीन-45
ईनडोर,लोकेशन, बुजुर्ग रतनसिंह का घर टाईम-शाम

(परम का शाम को बुजुर्ग रतनसिंह से मिलने जाना ।

परम
चाचा केसे हो आप,
आप से मिलने का मन किया ।

बुजुर्ग रतनसिंह
बेटे, परम आओ बैठो,

परम
चाचा मुजे लगा है, मेरी प्रसीध्धी कामयाबी, मेरे लिए मेरी दुश्मन न बन जाये ।

बुजुर्ग रतनसिंह
क्या हुआ परम क्यु एसी बात कर रहे हो ।

परम
आज दोपहर को पाठशाला मे मुबंई सेएक पत्रकार, रिपोर्टर शंशाक दुबे मिलने आया था।

बुजुर्ग रतनसिंह
कीसे लिए बेटा

परम
चाचा वह ईस कस्बे की के बारे मे, मेरे और कंचनजंगा के सफर और साहस के बारे मे दुनिया को बताना चाहता है ।
मेरा ईन्टरव्यु लेना चाहता है । सोचता हुँ , क्या करुँ ,

बुजुर्ग रतनसिंह

परम जो तुम्हारा मन करे वह तुम करो,
ईधर-उधर की गोल –गोल बात कर उसे ईन्टरव्यु दे दो,

परम

मेरा मन मना कर रहा है ,
उसको मना ही कर दुँ ,

बुजुर्ग रतनसिंह

तुम्हे लगता है, की तुम्हारे मना करने के बाद वह मान जाएगाँ ।
यह जो न्युज रिपोर्टर होते है, वह नई और ताजा खबरो के भुखे होते है ।

परम

अच्छा चाचा मे समज गया मुजे क्या करना है ।
उस रिपोर्टर को अब मे देख लुगाँ ।

सीन-46

आउटडोर, लोकेशन, पाठशाला का मैदान, टाईम – सुबह

(परम का पाठशाला के सभी शिक्षकगण और सारे
बच्चो का पाठशाला के मैदान मे बुलाना ।)

परम

मेरे प्यारे बच्चो और सभी आदरणीय शिक्षकगण आज हम पढना या पढाना नही
आज हम सब बहार धुमने जाना है।
पाठशाला के बच्चे एक साथ चिल्लाकार कहाँ जाना है, परम सर,

परम

मैदान पर खडी दो बसो को दिखाना ।
प्यारे बच्चो आज हम देखने जा रहे है, म्युजीयम
सारे बच्चे
सर म्युजीयम मे क्या होता है,

परम

यह तुम लोगो को वहाँ जाकर मालुम होगा ।
आप सभी बच्चे सामने खडी बसो में बैठ जाईए ।

रीटा चौधरी

सभी छोटी – बडी लडकियाँ मेरे पास आ जाओ। मे तुम सभी को बसो में बिठाने
की व्यवस्था करती हुँ ।

विमल उपाध्याय

सभी सारे लडको मेरे पास आकर खडे हो जाईए ।
(सभी शिक्षकगण और बच्चो का परम के साथ बसो में बैठकर सुनहरे रास्ते, और
प्रकृति की खुशनुमा हवा और मौसम के साथ हर्ष-उल्लास के साथ आगे बठँना ।

सीन-47

ईनडोर, लोकेशन, म्युजीयम, टाईम-सुबह

(परम का सभी पाठशाला के बच्चो और शिक्षकगण के साथ एक बडे म्युजियम के अंदर जाना ।)

सभी बच्चे

जैसे ही म्युजियम के अंदर जाना । आश्यचक्ति होकर खुश हो जाना । चारो और रंगबेरंगी लाईट से पुरा म्युजीयम रोशनी से जगमगा रहा था । जिज्ञाशावश कई बच्चो को अपने साथ घुम रहे टीचर से सवाल करना ।

एक छोटा बच्चा कीरण

रीटा टीचर यह क्या है । किरण काच की बडी सी केबीन मे कुछ अदभुत किमती पथ्थरो की और ईशारा करना ।

रीटा चौधरी

बेटे किरण यह बहुत ही मुल्यवान रत्न है । जो बहुत पहेले के जमाने के है ।

किरण

दो-चार उसके जैसे बच्चो के साथ आगे-आगे
सभी म्युजियम की चीजो को देखना ।

परम

म्युजियम मे सभी छोटे बडे बच्चो का ध्यान रखकर आगे बठ रहा था ।
ईस म्युजीयम मे प्राचीन सभ्यता मिस्र, हडप्पा, मोहंजोदडो के मुहरे, बर्तन, ग्रीक-रोमन, मेसापोटमिया की संगमरमर की मुर्तिया, मीट्टी के बर्तन, चित्र, शिल्प, नटराज की मुर्चि, प्राचीन राज्य के पोशाक, हथियार, तोपे सिंहासन काफी पुराने समय की चीजो का लाईन टु लाईन प्रर्दशन मे रखी गई थी ।
एक बच्चो का छोटा सा समुह पहेले के जमाने मे राजा-महाराजा जिन जिन खुंखार जानवरो का शिकार करते है । उस मरे हुए जानवरो का स्टैचु देखकर डर जाना ।

कई छोटे बच्चो का रोना, चिल्लाना । अपनी माँ को बुलाना । विमल उपाध्याय और परम दोनो का उन बच्चो के पास जाकर शांत करना । समजाना ।

परम

मेरे प्यारे बच्चो यह जानवर असली है । पर मरे हुए, जिनके अंदर मरी मसाला डालकर काच के बडे बडेखानो मे स्टैचु बनाकर खडा किया गया है । जिंदा नही है ।
आप सब उन्हे देख सको । ईसलिए यहाँ पे रखे है ।

सारे बच्चे

परमसर की बात सुनकर हँसते –हँसते एक दुसरे से कहने लगे । यह जानवर भर गये हा । यह सिर्फ स्टेचु बनाकर रखा है । हाँ,हाँ,हाँ म्युजियम मे बच्चो की हँसी से गुंज उठना ।
(म्युजियम मे घुमते-घुमते दोपहर हो जाना ।)

परम

म्युजियम के बहार एक छोटा सा लोज होना । वहाँ सभी बच्चो को ले जाना ।

रीटा चौधरी

सभी छोटी बच्चीया और छोटे बच्चो को मेंगो ज्युस, और सेन्डवीच खिलाना ।

परम

सभी बच्चो को लाईन मे बिठाकर उनको खाना खिलाना ।

रीटा चौधरी

दो ज्युस की बोटल निकालकर विमल उपाध्याय और परम को देना साथ मे सेन्डवीच भी ।
(तीनो का सभी बच्चो के साथ मे बैठकर खाना । साम को म्युजियम के बहार एक बजा सा सुंदर गार्डन मे सभी बच्चो को खेलना , कुँदना , पानी मे नहाना ।
वापस कस्बे मे पहुँचने के लिए बसो मे बैठना ।
सुबह से लेकर शाम तक धुमते-घुमते सभी बच्चो का बस मे सो जाना । कुछ शिक्षक की भी नींद लग गई ।

परम

अपने सारे बच्चो को देखकर मन ही मन खुश हो रहा था ।हँस रहे थे । उसे नींद आ रही थी ।

मंगल (बस का ड्राईवर)

परम सर क्यु अकेले-अकेले हँस रहे हो ।

परम

मंगल ईन सभी बच्चो को देखकर कीतने सुंदर और मासुम है । सुबह जागना, नाहना, तैयार होना, पाठशाला जाना, वापस घर आना, खेळना, कुँदना रात को सो जाना । दिन पुरा हो जाना.

ईस बडे लोग तुम और हम हमारे जैसे बडे लोग होने के कारण सब खो देते है ।

मंगल

परम सर आप की बात मे बिलकुल समज गया ।

छोटा रहना अच्छा है । बडा होना बहुत बडी सजा है ।

परम

बहुत ही होशियार हो, तुम ।

सीन-48
ईनडोर, लोकेशन-परम का घर, टाईम-शाम

(एक दिन शाम को शंशाक दुबे का परम मिलन उसके घर

जाना ।)

परम अपने घर का दरवाजा खोलना । सामने शंसाक दुबे को देखना ।

शंशाक

गुड ईवनिंग

परम

आओ शंशाक

शंशाक

यहाँ से गुजर रहा था । सोचा आप से मिलता चलु,

परम

अच्छा बोलो कुछ काम था ।

शंशाक

परम मेरी बात सुनो मुझे तुम से, ईस पुरे कस्बे के बारेमे बहुत कुछ जानना है ।

परम

मेने शंशाक तुम्हे पहेले ही कहाँ था । मुजे ईन्टरव्यु नही देना ।
शंशाक परम ईस मे तुम्हारा और कस्बे के लोगो का फायदा है ।
परम वह कैसे शंशाक

शंशाक

ईस कंचनजंगा पर्वत के बारे में तुम्हारे साहस और परिश्रम के बारे मे, पुरी दुनिया देखेगीं ।

हमारी न्युज चैनल पर तो देश-विदेश के यात्री, पर्यटको यहाँ घुमने-फिरने आयेगे ।

परम

शंशाक तुम्हारी बात थोडी- बहुत मेरी समज में आ रही है ।

शंशाक

परम तुम्हारा यह छोटा सा कस्बा एक बडा शहर बन जायेगा । यहाँ के लोगो की आमदनी बढेगी ।

तुम्हारी पाठशाला एक बडी सी हाईस्कुल बन जाएगी ।

परम

बहुत कुछ सोच लिया आप ने , मेरे ऐर ईस कस्बे के बारे मे , अब तो आप का ईन्टरव्यु देना ही पडेगा ।

क्या लोगे ठंडा या गरम

शंशाक

शाम का माहोल है, गरमा गरम चाय हो जाए,

परम

जरुर में चाय बना के ले आता हुँ ।

शंशाक परम के जाने के बाद पुरे घर को देखना ।

जेब से अपने दो छोटे केमेरे परम के बेडरुम के आमने सामने लगा देना ।

जिस पर परम की नजर न जा पाए ।

परम

चाय लेकर आना ।

(दोनो का चाय पीने के बाद शंशाक का परम को गुडनाईट कहकर घर के बहार जाना ।

सीन-49

ईनडोर-लोकेशन होटल का रुम-रात

(शंशाक दुबे का टेलिफोन पे कीसी से बात करना)

शंशाक

हेल्लो सर मि. सस्पेन्स किरदार बोलो शंशाक दुबे मैंने परम का ईन्टरव्यु के लिए
मना किया ।
मु. एक्स वेलदन

शंशाक

आज अभी शाम को कुछ घंटो पहेले परम का घर से आया हुँ मेने उसके घर के
अंदर दो केमेरे लगा दिये है ।

शंशाक

सर मेरे पैसे हँसते हुए,
मि. एक्स तुम्हारे बेक के खाते में दो लाख भेज दिये है ।
बाकी के तीन लाख पुरा काम होने के बाद, गुड नाईट ।
(फोन का कट हो जाना)
मि. एक्स एक ससपेन्स किरदार है । जो परम के बारे मे, काँचनजंगा के बारे मे पुरा
सच जानने के लिए शंशाक दुबे को परम के पास भेजता है ।

सीन-50
आउटडोर, लोकेशन, अखाडा, टाईम-सुबह

(शंशाक दुबे का किचन पहेलवान के अखाडा मे मिलने जाना ।)
किचन पहेलवान
अपने अखाडे मे पहेलवानी को तालीम देकर कहँता है की, सुनो मेरे पहेलवानो आप का तन और मन मजबुत होगा, तो आप ईस दुनिया की हर एक खुशी को पा सकते हो ।
ईसलिए सुबह सब से पहेले तन की कसरत बहुत जरुरी है ।

शंशाक

अपने केमेरे के साथ किशन पहेलवान से मिलना ।
किशन पहेलवान मैने अब के बारे मे बहुत कुछ सुना है ।

किशनपहेलवान

महोदय आप कौन ।

शंशाक

मे न्युज रिपोर्टर हु यहाँ ईस कस्बे के बारे में, कंचनजंगा के बारे मे, जानने आया हु । परम से मिला । उसका ईन्टरव्यु लेना है ।
मैने सुना है, तुमने परम की बहुत मदद की,स कंचनजंगा की सब से उँची चोटी पर ले जाने की, किशन पहेलवान यह जात आप को कैसे मालुम,

शंशाक

मैं एक रिपोर्टर हुँ, मुझे मालुम तो होगा गी,

किशन पहेलवान

क्या परम ने आप को मे बारे मे कहा ।

शंशाक

छोडो सब, में तुम से कंचनजंगा और कस्बे के बारे में जानना है ।
किशन पहेलवान आओ बैठो,

शंशाक

किशन बताओ तुम परम को कब जानते हो,

किशन पहेलवान

जब से ईस कस्बे में बच्चो के लिए पाठशाला खुली ।
परम सब से अलग है ।
यहाँ आकर हमारा जीवन कस्बे की सुरत ही बदल डाली है ।
कस्बे का हर एक बंदा छोटे से बडा परम से बहुत प्यार करते है ।

शंशाक

किशन परम के साथ कंचनजंगा के सफर के बारे में कुछ कहा ।
किशन पहेलवान परम के साथ कंचनजंगा के दौरान परम को करीबह से जानने का मौका मिला ।

एक पहेलवान (छोटु)

किशन पहेलवान जी अपना एक पहेलवान को पीठ पर चोट लगी है ।

किशन पहेलवान

शंशाक जी माफ कीजीए ।
मुझे तुंरत जाना होगा ।
उस बंद का अस्पताल लेकर,
(किशन पहेलवान का वहाँ से उठकर तुरंत निकलना, शंशाक को भी अखाडे में से बहार की और जाना ।

सीन-51

आउटडोर,लोकेशन परम के घर की छत-टाईम शाम

(परम का एक दिन शाम को अंतरा की याद आना ।
अपने घर की छत (टेरेस) पर जाना ।

परम

परम का एक सुंदर चांदी का बोक्स निकालना ।
जिस में कुछ दस नंबर लिखे थे । उनमे से तीन नंबर को छु ना । एक नंबर सात था । दुसरा नंबर एक था । तीसरा नंबर एक था ।
यह तीन नंबर से चाँदी का बोक्स खुल जाना ।
उस बोक्स में एक अंगुठी और दो सच्चे मोती थे ।
अगुँठी अपने बाये हाथ की उँगली मे पहनना ।
दो मोती के हाथ मे लेकर प्यार से चुँमना ।
(आसमान में एक सुनहरा दिव्यप्रकाश का फैलना दो सुंदर पँखो को फैलाते हुए श्रेतवस्त्रो के सज्ज अंतरा का परम के सामने आना ।)

अंतरा

परम बहुत दिनो के बाद हमारी याद आई ।
परम अपनी आँखो से जी भरकर अंतरा को देखते ही रहना ।
कुछ न बोलना ।
अंतरा परम खुली आँखो से सपना देख रहे हो, हम सपना नहीँ, तुम्हारे सामने एक हकीकत है ।
परम नही तो, बस तुम्हे बहुत समय के बाद देखा तो मेरी आँखे तुम को देखकर कुछ क्षण ठहर गई ।
बताओ, काँचनजंगा में तुम्हारे प्यारे बच्चे ओर कस्बे में कैसा चल रहा है ।

परम

सब कुछ बदल गया है ।
कच्ची सडक अब पक्की हो गई ।

पाठशाला के बच्चो की शीक्षा-तालीम अच्छी हो गई हे, कस्बे को जन-जीवन ज्यादा बहेतर हो चुका है ।
होटल खुल चुकी है, सब छोटे-बडे व्यापारीओ की आमदनी बँढ चुकी है ।

अंतरा

परम तुम जो चाहते थे, वह हो गया है । अब तुम खुश तो होना ।
परम बहुत ही खुश हुँ, मे अंतरा
अंतरा परम तुम बिलकुल परम पवित्र हो, कीसी ने तुम से तुम्हारे कैँचनजंगा के सफर के बारे मे पुछा ।

परम

कीसी ने पुछा नही, मैने कीसी से बताया नहीँ ।
पर लगता है , की मेरे पर्सिध्धी,कामयाबी धीरे-धीरे मेरे लिए एक बडी चुनौती बननेवाली है ।

अंतरा

वह कैसे परम

परम

कोई है, जो मेरे बारे में , काँचनजंगा पर्वत के बारे मे, ईस छोटे सुंदर से कस्बे के बारे मे, काचँनजंगा के मेरे सफर के बारे में, पुरी दुनिया को बताना चाहता है ।
अंतरा कौन है, वह क्या जानना चाहते हो ।
परम एक रिपोर्टर जो मुंबई से आया है ।
मेरा ईन्टरव्यु लेना चाहता है । अंतरा बताओ आप की आसमान की परीयो की दुनिया के बारे मे ।
अंतरा हमारा क्या है,
हम तो हरदम हर पल अपनी खुशी में खुश रहते है । युनिकोन तुम्हे याद करता है ।
परम वह दिव्यश्र्वेत अश्व और उसकी सवारी रोज मेरे सपने मे आती है। एक अजीब सा आकर्षण है, उसमे तुम्हारी तरह अंतरा,

अंतरा

सच में परम ।

परम

अपने दो हाथो को फैलाते हुए अंतरा को अपने पास बुलाना । अंतरा के सिर पर प्यार से चुमना ।

अंतरा

परम का अपने पँखो मे समाकर गले लगना जी भर के प्यार करना ।
(अंतरा का अपनी आसमान की परियोँ के देश वापस लौटना । परम का वहाँ खडे रहकर अंतरा को जाते देखना ।)

सीन-52

ईनडोर, लोकेशन – परम का घर- टाईम- सुबह

(अपने घर मे परम पाठशाला के बच्चो के लिए कुछ कार्टुन किताबे औरप कहाँनिया की कीताबे ढुँढना । वहाँ परम को शर्ट के बटन जैसे दोएक जेसी चील मिलना ।)

परम

आज बच्चो के लिए कार्टुन और कहाँनिया की किताबे ले जानी है । पर कहाँ रखी है । मालुम नही, मिल नही रही ।

अपने घर की हर एक जगह पर देखते-देखते ।

शर्ट के बटन जैसी एक चीज मिलना जिसमे छोटी सी रेड लाईट थी ।

(परम का मन ही मन सोचना । यह क्या है, ध्यान से देखरकर यकीन होना । की यह सिक्रेट केमेरा है । वापस से पुरे घर मे ध्यान से देखना ।

वैसा ही दुसरा केमेरा मिलना । परम के ठीक बिस्तर के सामने दो-तीन दिन पहेले मेरे घर शंशाक दुबे का आया था ।

वह एक रीपोर्टर भी है। उसी ने यह कारनामा किया है । आ जाओ बेटे मे तुम्हे एसा ईन्टरव्यु दुँगा की कीसी और का ईन्टरव्यु लेने से पहेले सौ-बार सोचोगे ।

(परम का सबकुछ समज जाना । मन ही मन एक योजना बनाना ।

सीन-53
आउटडोर, लोकेशन-कस्बा, टाईम-सुबह

(परम का किशन पहेलवान और अब्दुल शेख को कस्बे के बाजार मे भीमा की याच की दुकान पर मिलने बुलाना ।)

भीमा

परम जी आईए ।

परम

भीमा कीतनी बार बोला तुम्हे जी मत कहो ।
सिर्फ परम कहो ।
भीमा थोडी देर रुको, अब्दुल और किशन आ रहै है ।
उसके बाद तीन-गरमा गरम चाई ले आना ।
न्युज पेपर पढँने मे लग जाना ।
(थोडी देर के बाद किशन पहेलवान और अब्दुल शेख का परम के पास जाना ।)

किशन पहेलवान

परम क्या बात है , आज तुम्हे हम दोनो की याद आई ।
परम बात ही कुछ ऐसी है, किशन पहेलना क्या बात है। हम दोनो को बताओ,
परम किशन दो दिन पहेले कोई तुम्हे मिलने आया था ।
किशन पहेलवान सोचकर बताना ।
हाँ एक न्युज रिपोर्टर शंशाक दुबे मिलने आया था ।
कंचनजंगा के सफर के बारे में पुँछ रहा था ।

अब्दुल शेख

क्या बात है ।
परम यह शंशाक दुबे मुझे कोई ठीक नही लगता ।
जब वह मुबई से आया है, तब यह मुझसे मिला । मेरा ईन्टरव्यु लेने के लिए मना रहा हे ।

थोडे दिनो के बाद उसका मेरे घर के शाम को आना । मेरी जानकारी के बिना यह दो बटन जेसे केमेरे रख के गया।
ळगता है, वह मेरी जासुसी कर रहा हे।
कीसी ने उसको भेजा है, या खुद सब जानना चाहता है ।

किशन पहेलवान

मेरे सामने आने दो उसको दो-चार मेरे मुक्के और लाते पडेगी तो खुद ही अपनी सच्चाई बक देगा ।

परम

नही किशन यह जोश मे नही होंश मे सबकुछ सोच-समज कर करना होगा ।
मेरे बारे मे, कस्बे के बारे मे, ईस कंचनजंगा के बारे मे क्युँ जानना है । वह जानना जरुरी है ।

अब्दुल शेख

मुजे भी यह आदमी ठीक नही लगता ।

परम

वह मेरा ईन्टरव्यु लेना चाहता है । ऐसा ईन्टरव्यु दुँगा की उसको अपने रिपोर्टर बनने पर अफसोस होगा ।

किशन पहेलनान

परम तुमभी बताओ, हमे क्या करना है ।

परम

मेरे घर पर शंशाक दुबे को बुलाना । उससे पहेले किशन और तुम अब्दुल मेरे घर आकर छुप जाना ।
(भीमा की दुकान पर चाय पीकर तीनो का अपने-अपने जगह पर चले जाना ।)

सीन-54

ईनडोर-लोकेशन-परम का घर, टाईम-शाम

(परम का अपने घर पर बैठकर शंशाक दुबे का ईंतजार करना । किशन पहेलवान और अब्दुल शेख का पहेले परम के घर आकर छुप जाना ।

परम

अपने घर पर मेज पर बैठकर किताब पठँना ।
ठीक घडी के सात बजे डोलबेल का बजना ।
परम का उठकर दरवाजा खोलना ।
अपने सामेने शंशाक दुबे को देखना ।

शंशाक

बडे केमेरे की बेग लेकर परम को गुड ईवनिंग कहँना ।

परम

आओ

शंशाक

दुबे शंशाक आज मौसम बडा खुशनुमा है ।

परम

मन ही मन मौसम को बच्चु तेरा बिगडनेवाला है । बोलना क्या लोगे ठंडा या गरम,
गरमा गरम चाय दे दो परम जरुर चाय के साथ गरमा-गरम पकोडे तैयार है ।
अभी ले के आता है ।

शंशाक

सही जगह वीडीय़ो आ सके उसके किए अच्छी जगह बैठके तैयार करना ।

परम

अब शुरु करते है ।
ईन्टरव्यु

शंशाक

परम बताओ तुमे ईस कस्बे मे कब से बच्चो को पठाँता है ।
परम कुछ तीन-यार साल

शंशाक

परम परिवार मे कौन है ।

परम

कोई भी नहीं बस मे अकेला हुँ ।

शंशाक

यहाँ के सभी लोग, बच्चे मे लेकर बुढे जवान और औरतो का आप के प्रति स्नेह और लगाव है । ईसका रहस्य, परम प्यार, लगाव, चाहना-न चाहना सब छोटे बच्चे या लोग दिमाग से तय नही करते ।
बस वह तो मन की स्वाभाविक प्रक्रिया है ।

शंशाक

बहुत ही अच्छी बात की है । अपने कंचनजंगा के सफर के बारे मे बताओ । शुरुआत से लेकर अंत तक कौन-कौन सी मुसीबतो का सामना कर तुम वापस सही-सलामत आ गये ।

परम

ठहरो जरा आराम से पुछो चाय और पकोडे तैयार हो चुके है ।

शंशाक

अच्छा परम केमेरा कुछ मिनिटो के लिए ओफ कर देता हुँ ।
परम अपने रसोईघर मे चाय और पकोडे लेने जाना । वहाँ

भीमा

चाई और पकोडे लेकर खडे रहेना ।

परम

भीमा सब तैयार है । याच और पकोडे बनाने के लिए शुक्रिया ।

अब्दुल-शेख किशन पहेलवान

परम अब आगे क्या । परम कुछ देर यहाँ रुको । चाय और पकोडे मे बहोशी की दवा डालना ।

शंशाक

परम को धन्यवाद कहना । बाद मे चाय और पकोडे खाना ।
(कुछ पाँच मिनिट के बाद परम के सामने शंशाक का बेहोश होकर गहरी नींद में चले जाना ।)

सीन-55

आउटडोर, लोकेशन-अखाडा, टाईम-सुबह

(शंशाक दुबे की आँखे खुलना । चारो और देखना परम के घर से वह कैसे ईस अखाडे मे पहोंचना ।
(अखाडे के बारे में (वह एक बडी जगह थी । खुले आसमान के नीचे जिसके अंदर जाने के लिए एक छोटा सा दरवाजा था । बहार से मालुम नही हो सकता की अंदर क्या कुछ हो रहा है ।

शंशांक

अपनी आँखे खोलना । चारो और देखना । यह मे कहाँ आ गया ।

किशन पहेलवान

चिल्लायो मत ।

शंशाक

किशन तुमने मुझे ईस तरह से कुर्सी पे क्यु बाँध रखा है । मुजे जाना है ।

किशन पहेलवान

कैसे जाने दु, तुम्हे तुम्हारा ईन्टरव्यु पुरा हो चुका । अब शाम को परम तुम्हारा ईन्टरव्यु लेगा ।

अब्दुल शेख

बहुत कुछ जानना है, तुम्हे हमारे काचँनजंगा के सफरके बारे मे, हमे भी बहुत कुछ जानना है । तुम्हारे बारे मे,

शंशाक

परम कहाँ है । परम को बुलावो, मुजे अब उनसे बात करनी है ।

अब्दुल शेख

परम को अभी पाठशाला मे बच्चो को पढा रहा है ।

किशन पहेलवान

बताओ किस ईरादे से तुम यहाँ कस्बे मे आए हो । जाओगे तुम यहाँ से तब, जब तुम हमे सच बताओगे ।

शंशाक

जोर-जोर से चिल्लाना , बचाओ-बचाओ।
(अब्दुल शेख और किशन पहेलवान दोनो का शंशाक का हाल देखकर जोर-जोर से हँसना । शंशाक को जंजीरो मेँ बाँधकर एक अंधेरे कमरे मे ले जाना ।

सीन-56

ईनडोर-लोकेशन-अंधेरा कमरा, टाईम-शाम ।

(शंशाक दुबे का एक कमरे मे बंधकर अब्दुल शेख, और किशन पहेलना दोनो का परम का ईंतजार करना ।

अब्दुल शेख

देखो बहार जाकर परम आ गया । शाम के सात बत चुके है ।
किशन पहेलवान कमरे के बहार निकल रहा था । तब ही परम का सामने आ जाना ।

परम

किशन कहाँ जा रहे है । काम पुरा हो गया ।

किशन पहेलवान

तुम्हारा ही ईंतजार कर रहे थे । तुम हमे काम दो, वह पुरा न हो वह हो सकता है ।

परम

कमरे के अंदर जाकर बोटल से पानी पीना । थोडा पानी शंशाक दुबे के मुहँ पर डालना ।

शंशाक

हाथो मे आना सामने परम का पाना । यहाँ से जाना है ।

परम

सुनो प्यारे और देखो यह दो बटन जैसे केमेरे कुछ याद आया ।
यह तुमने मेरे घर पे अंदर क्यु रखे,में ईन्टरव्यु तो दे रहा था । अपनी पुरी हकीकत बताओ ।

शंशाक

मुझे माफ कर दो । मुजे छोड दो ।
परम तुम हमे तुम्हारा मकसद बता दो, हम तुम्हे यहाँ से जाने देगे ।

अब्दुल शेख

बताओ बच्चु, हमे तुम्हारा मुँह खुलवाना आता है ।

शंशाक

परम में तुम्हे सच बताता हुँ मे एक न्युझ रीपोर्टर हुँ मे मुंबँई के दादर ईलाके मे रहेता हुँ एक किराये के मकान मे मेरी मा के साथ ।
(उसके बाद का सीन शंशाक का परम के अपने बारे मे बताना ।)

सीन-57

ईनडोर-लोकेशन, शंशाक का घर-टाईम – सुबह

(शंशाक का सुबह उठकर ओफिस जाने तैयारी करना । उसकी माँ निर्मलादेवी का अपने बेटे के लिए टिफिन बनाना ।)

निर्मला देवी

शंशाक आठ बजे उठ चुके है । जल्दी जागकर तैयार हो जाओ । मे तुम्हारे लिए गरमा-गरम रोटी बना देती हुँ ।

शंशाक

अपने बिस्तर से जाग कर पानी से मुहँ धोना । ब्रश कर, स्नान करना । तैयार होकर चाई का ईंतजार करना ।

निर्मला देवी

चाय लेकर शंशाक को देना । उसके साथ दो गरमा-गरम रोटी भी देना । बेटे आज किराएदार को किराया देना है, एक महिना का किराया बाकी है । और दुसरा महिना एस महिने का मिलाकर बीस हजार देना है ।

शंशाक

माँ उसे कहँना दो-तीन दिन मे दे दुँगा ।
निर्मला देवी, अच्छा बेटा ।

शंशाक

चाय और रोटी खाकर अपने ओफिस निकलना ।

निर्मला देवी

रसोई के बिगडे बर्तन को ईकठ्ठा कर धोने के लिए जाना ।

सीन-58

लोकेशन-वाई न्युझ चैनल का औफिस, टाईम-सुबह ।

(शंशाक का ओफिस पहोँचना । केबीन में बेठकर काम करना ।)

शंशाक

अपने केबीन मे कुछ टाईप कर रहा था । घनश्याम (प्युन) शंशाक तुम्हे मेनेजर बुला रहे है । शंशाक बोस के ओफिस जाना ।

धवल जोशी

वाई न्युज चैनल के मेनेजर थे) शंशाक तुम्हे जो काम दिया था वह पुरा हुआ ।

शंशाक

नही सर, आज थोडा लेट हो गया । घर से ओफिस पहोचने मे, दोपहर तक पुरा हो जाएगा ।

धवल जोशी

तुम्हारा दोपहर तक वह लेख टाईप के साथ मेरे टेबल पर रख देना ।

शंशाक

अपने केबिन मे जाकर काम करना ।
कुछ पंदरहा बीस मीनीट मे टाईप कर वह लेख मेनेजर के टेबल पर रख आना ।

धवल जोशी

बहुत अच्छा जल्द ही पता दिया ।
(शंशाक का मेनेजर के केबीन से निकलकर वापस अपने जगह पर जाकर आँखे बंधकर सोचना ।)

सीन-59

आउटडोक. लोकेशन –बस स्टोप(बेस्ट)टाईम – दोपहर य़

(मेनेजर का शंशाक को कुछ काम के लिए बहार भेजना ।)

शंशाक

बसस्टोप पर ईंतजार करना बांद्रा जाने के लिए,

एक विदेशी पर्यटक

सुनो मुजे बाद्रा जाना है, मे यहाँ पहेलीबार आया हुँ ।
शंशाक आप मेरे साथ चलिए, में आप का आप के पते पर छोड दुँगा । आप का नाम ।

डेविड जोन

माई नेम डेविड जोन फ्रोम अमेरिका ।
(बांद्रा जाने की बस आना । दोनो क दो सीट मे साथ बैठना ।

शंशाक

आप यहाँ धुमने आये हो, आप क्या काम करते है।

डेविड जोन

मे रिसर्च का काम करता हुँ । नई-नई जगह पर जाना । उसके बारे मे जानना । कई जगहो के रहस्यो को जानना ।

शंशाक

आप हिन्दी अच्छी बोल लेते हो ।

डेविड जोन

मुझे आठ भाषाँए आती हे, तुम बताओ तुम क्या करते हो ।

शंशाक

सर मे वाई न्युझ चैनल मे रीपोर्टर हुँ ।

डेविड जोन

बहुत ही अच्छा मुए एक काम के लिए रीपोर्टर की जरुरत है ।

शंशाक

किस काम के लिए सर ।

डेविड जोन

यहाँ ईस वक्त सारी बाते नही हो सकती । यह मेरा कार्ड है । यहाँ मे होटल मे रहता हुँ ।

शंशाक

जरुर सर, सन्डे को मिलते हे ।
(डेविडजोन और शंशाक का अपनी-अपनी जगह जाना ।)

सीन-60

ईनंदोर, लोकेशन-होटल का रुम-टाईम-सुबह ।

(डेविड जोन और शंशाक का मिलना जिस होटल मे डेविड जोन था उस रुम मे ।)

डेविड जोन

शंशाक बोला क्या लोगे ठंडा या गरम ।

शंशाक

कुछ भी चलेगा ।

डेविड जोन

दो कोफी हो जाये ।
गरमा-गरम नास्ते के साथ,

शंशाक

आप को रिपोर्टर का कुछ काम था ।

डेविड जोन

सब बात होगी पहेले नास्ता और कोफी पी लो ।
वेईटर रुम मे दो कोफी और नास्ता लेकर आना टेबल पर रख चले जाना ।

डेविड जोन

कोफी पीते हुए मे अमेरिका की कोलेज मे हिस्ट्री मे एक प्रोफेसर हु, मेरा शोख नई अलग , रहस्यमय जगहो पर जाना । उसके बारे मे जानकारी ईकठ्ठा करना ।

शंशाक

बहुत ही अच्छा साहसिक शोख है ।

डेविडजोन

ग्याराह महिने पहेले मे कंचनजंगा गया था । उस पर्वत के बारे मे पुराने ग्रंथ और वहाँ के लोगो से सुना और पढाँ है । यह काँचनजंगा पर्वत अपने आप मे अनेक रहस्यो को समटे हुए खडा है ।

शंशाक

आप कंचनजंगा की पर्वत के बारे मे कह रहे हो
वह बहुत उँचा और बहुत विशाल भी है ।

डेविड जोन

सही बात है, उसकी उँची चोटी पर जाना मेरा लक्ष्य था ।
कस्बे के कीसी जानकार को लेकर जो पर्वत के टेडे मेडे रास्ता को जानता था ।
पठान अवतारसिंह
हमने हमारा सफर शरु किया ।

शंशाक

फिर क्या आप अपने लक्ष्य प्राप्त करने मे सफल हुए, कामयाब हुए ।

डेविड जोन

तीन दिन लगातार ईन पर्वत पे चढते गये । हमारी मंजिल तक पहुँच न पाये । एक तेज आँधी ने हमे पता नहीं काँचनजंगा पर्वत से नीचे कस्बे के थोडे दुर एक बडे वटवृक्ष के नीचे लाकर पटक दिया । क्या हुँआ, कैसे हुँआ हमे कुछ मालुम नही रहा । जब हम दोनो होश मे आये तो हम अस्पताल के बेड पर लेटे थे । हमारी याददास्त चली गई, हम पागल हो चुके थे ।

शंशाक

यह कैसे हो सकता है, तीन दीनो के लम्बे सफर पे जाने के बाद आप दोनो ईतनी जल्दी नीचे तक आ ही नही सकते । आश्यचक्ति बात है ।

डेविड जोन

यही तो एक सवाल मेरे मन मे, कुछ महिनो से घुम रहा है ।

हमारे बाद वहाँ की सरकरार ने ग्याराह लोगो की टीम का कंचनजंगा पर्वत के उपर भेजा । उनका भी अंजाम हमारी तरह वटवृक्ष के नीचे बेहोश होकर अपनी याददास्त भुल चुके थे ।

शंशाक

यहतो एक रहस्यमय बात है ।

डेविडजोन

कुछ तीन-चार महिनो मे हम दो और ग्याराह लोगो की टीम का ठीक हो जाना । मगर हमे यह याद न रहेना की हम लोगो के साथ हुआ क्या था ।

शंशाक

बताए फिर आगे ।

डेविड जोन

दो महिने के बाद वहाँ एक छोटी सी पाठशाला खुली है । जिसमे परम नाम का एक शिक्षक पढाँता है । जिसके दो खास दोस्त है । जो काँजनजंगा की सबसे उँची चोटी तक जाकर नीचे आ चुके है ।

शंशाक

क कैसे मालुम आपको उस कस्बे मे जाकर आए हो ।

डेविड जोन

नही शंशाक मेरा एक साथी जो मेरे साथ कंचनजंगा के सफर पे था । पछान अवतारसिंह मुजे सब कस्बे की पाठशाला की हर एक जानकारी देता रहता है ।

शंशाक

मुझे वहाँ जाकर क्या करना है , सर डेविड जोन
परम का ईन्टरव्यु उससे कस्बे से लेकर वहाँ रहेनेवाले लोग, बच्चो, औरतो सभी के बारे मे संपूर्ण जानना है ।
खास कर परम और उसके जो साथी किशन पहेलवान और अब्दुल था ।

शंशाक

मेरी जोब का क्या होगा ।

डेविड जोन

तुम अपनी जोब छोड दो । मेरे लिए सिर्फ काम करना है ।
सर उस मे मेरा फायदा ।

डेविड जोन

हम तुम्हे ईस काम के लिए सात लाख देगे ।
तीन लाख अभी, बाकी के चार लाख काम पुरा होने के बाद

शंशाक

सात लाख सुनते ही अपनी चेर से गीरना ।
उठकर वापस से सही तरह से चेर पर बैठना ।
सर फिर तो जोब की कोई जरुरत ही नही ।
मे ईस काम मे जी जान लगा दुँगा ।

डेविड जोन

अपनी अलमारी से तीन लाख निकालकर शंशाक को देना ।
(दोनो का एक दुसरे से हाथ मिलाकर शंशाक का अपने घर जाना ।)

सीन-61

ईनडोर, लोकेशन- एक कमरा, टाईम-शाम

(शंशाक का अपने बारे मे सबकुछ पुरा सच परम और अब्दुल शेख,किशन पहेलवान के सामने बताना ।)
(फिर से एक कमरे के अंदर का सीन)

शंशाक

परम मेरा तो यह काम है । मे रिपोर्टर हुँ डेविड जोन से तीन लाख लेकर में तो अपना कर्ज और किराया चुकाया ।
जोब छोडकर मे यहाँ ईस कस्बे में तुम्हारे बारे में तुम्हारी तीनो की कंचनजंगा के सफर के बारे मे जानने की कोशीश करता रहता हुँ ।

परम

यह डेवीड जोन कौन है ।

अब्दुल शेख

परम वह वही विदेशी पर्यटक है । जो यहाँ के पठान अवतारसिंह के साथ सब से पहेले को कंचनजंगा पर्वत की सबसे उँची चोटी पर जाने की कोशीश की थी ।

किशन पहेलवान

जो वटवृक्ष के नीचे बेहोश होकर अपनी याददाश भुलकर पागल हो चुका था ।

परम

यह बात अब मेरी समज मे आयी । हमारा सफर पुरा होने के बाद जब मुजे होश आया । तब मुजे यह न्युज मीली थी ।
डेवीडजोन, पठान अवतारसिंह दोनो और ग्याराह लोगो की टीम का भी ठीक हो जाना । यह वही डेवीडजोन है ।

किशन पहेलवान

बिल्कुल सही है ।
अब्दुल शेख अब ईस शंशाक नाम के ईंसान का क्या करना है ।

परम

शंशाक को छोड दो ।
(किशन पहेलवान का शंशाक को जंजीरो से मुफ्त करना ।)

परम

रात के दो बजे है, तुम अपने गेस्टहाउस मे जाओ ।
जब तुम यहाँ से वापस मुंबई जाओ । तो एक बार हम से मिलकर जाना । एक कहानी सुनानी है , तुम्हे ।

शंशाक

कौन सी कहानी ,

परम

में जो भी कहानी कहुँ, मेरे कंचनजंगा के सफर के बारे मे है जो तुम्हे डेवीडजोन को सुनानी है ।

शंशाक

ईस से क्या होगा ।

परम

शंशाक ईस से तुम्हारा काम हो जाएँगा । डेविड जोन को उसके सवालो का जवाब मिल जाएगा ।
(चारो का अपनी जगह जाना ।)

सीन-62
आउटडोर-लोकेशन-वटवृक्ष, टाईम-सुबह

(सुबह ग्याराह बजे परम का कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष पे जाना । जहाँ मुखिया अमरसिंह और बुजुर्ग रतनसिंह से मुलाकात होगी ।

परम

रविवार पाठशाला मे छुट्टी होनी के कारण कस्बे के बहार काचंनजंगा पर्वत के नीचे खडे वटवृक्ष की और जाना ।

मुखियाँ अमरसिंह

आओ परम, बहुत दिनो के बाद तुम्हे देखा ।

परम

सच बात है, अमरसिंहजी कुछ ज्यादा काम बढ गया है ।

बुजुर्ग रतनसिंह

परम कोई गहरी सोच मे है ।

परम

नही चाचा , वैसे ही नींद पुरी नही हुई ।

मुखियाँ अमरसिंह

चाई पीयोगे, परम

परम

नही चाचा आप को पीनी है, तो में भीमा की दुकान से ले आता हुँ । (वटवृक्ष के सामने भीमा की चाय की दुकान थी ।) तीनो का चाई पीना ।

मुखियाँ अमरसिंह

पाठशाला मे कोई चीज की कमी तो नही है, परम कुछ चाहिए तो बोलना ।

भीमा

तीन चाय लेकर आना ।
बुजुर्ग रतनसिंहजी चाय पीते पीते परम वह रिपोर्टर का क्या हुआ ।
जो तुम्हारा ईन्टरव्यु लेना चाहता था ।

परम

चाचा उससे बात हो चुकी है । दो दिन के बाद शाम को मिलना है ।
(कस्बे से एक आदमी का आना । बुजुर्ग रतनसिंह और मुखियाँ अमरसिंह को कस्बे मे ले जाने के लिए ।)

सीन-63

आउटडोर, लोकेशन- परम के घर की छत, टाईम-शाम

(परम का बहुत सोचने के बाद ईसके बारे मे
अंतरा से बात करना ठीक समझना।)

परम

एक किताब पढँते पढँते उस किताब मे एक परी का होना । परम का मन ही मन सोचना, क्युना अंतरा से मिला जाएँ । बहुत समय बीत चुका है । एक अपनी अलमारी से एक चाँदी का बोक्स निकालकर अपने घर की छत पर जाना । उस बोक्स मे दो सच्चे मोती और अंगुँठी को पहनना ।
(आसमान मे एक सुनहरा प्रकाश फैक जाना । दो सुंदर पँख को फैलाये हुए सफेद वस्त्रो से सज्ज अंतरा का परम के सामने आना ।)

अंतरा

परम कैसे हो, आज बहुत दिनो के बाद याद किया ।
परम अंतरा की बातो का जवाब न देकर अंतरा को जी भरकर देखना ।

अंतरा

अपने हाथो से चुटकी बजाकर परम का सोच से ध्यान हटाना ।

परम

अंतरा हम दो एक साथ एक दुसरे के साथ हर वक्त नही रह सकती ।

अंतरा

तुम जमीन पे रहेनेवाले हो हम आसमान मे उडनेवाले परिंदे केसे एक साथ हर वक्त रह सकते है ।
यह नामुनकीन है , क्या हुआ कोई बात है ।

परम

अंतरा तुम्हारे आसमान की परियोँ के देश से यहाँ नीचे आने के बाद क्यु सदा के लिए मेरी याददाश चली नही गई ।

अंतरा

परम मेरी आँखो मे देखो । बताओ क्यु एसी बात कह रहे हो ।

परम

अंतरा तुम्हारे दुनिया के रहस्यो जानना मेरे लिए एक बडी मुसीबत का आमंत्रण शायद देगी ।

अंतरा

परम मे तुम्हारी बातो को अभी तक समझी नही ।
परम एक वक्त है, जो कंचनजंगा के पर्वत के रहस्यो को जानना चाहता है । जिसने कस्बे मे एक रिपोर्टर को भेजा है । जिसने बहुत पहेले कोशीश की थी । काचंनजंगा के पर्वत की सबसे उँची योटी पर जाने की ।

अंतरा

सबकुछ समज गये हम, वह कौन है ।

परम

एक विदेशी पर्यटक डेविड जोन

अंतरा

हम ने कहा था । कुछ ईन्सान लोग बडे ही नीच और मतलबी है । अब तुम क्या करोगे, परम

परम

मेरा अंतरा तुम से वादा किया है । आखरी साँस तक मे ईस रहस्य को अपने सीने मे छुपा के रखुगाँ ।

अंतरा

मुझे विश्वास है, की उस विदेशी पर्यटक को तुम अपनी तरह ठीक करोगे ।
एक बात सुन लो यह दो चीज एक अंगुठी और दो मोती कीसी स्वार्थी या मतबली ईन्सान के हाथ न लगे ।
ईसके बिना तुम कभी भी हम से मिल नही पाओगे ।

परम

अंतरा का हाथ पकडकर वादा करना आप की दुनिया का रहस्य ओर यह प्यार से दी गई दो अनमोल चीज मे जाने से बठकर भी सुरक्षित रखुँगा ।
(अंतरा का परम की दो आँखो को चुमना । अपनी आसमान की दुनिया मे वापस लौटना ।)

सीन-64
ईनडोर, लोकेशन-पाठशाला की ओफिस, टाईम-सुबह

(परम का शंशाक को पाठशाला के ओफिस के कमरे मे बुलाना ।)

शंशाक

मुजे माफ कर देना । तुमने मेरी मजबुरी समज ली बताओ क्या करना है मुझे ।

परम

पहले उठकर ओफिस का दरवाजा बंद कर दो चपरासी से मेने कह दिया है । एक घंटे तक कीसी को भी अंदर आने नही देना है ।

शंशाक

उठकर दरवाजा बंद करना
अपनी जगह पर बैठ जाना ।

परम

मै तुम्हे जो भी सुना रहा हुँ, वह एक मेरे सफर का हिस्सा है, जो तुम्हे डेविडजोन को सुनाना है ।

शंशाक

जरुर परम कहो ।

परम

तुम्हारे डेविड जोन को यह जानना है की कंचनजंगा की सबसे उँची चोटी के आगे क्या है । तो सुनो
हम तीनो जैसे जैसे उपर की और चढने गये, वैसे हवा का चलना तेज और ठंडी की मात्रा बढँने लगी ।
परम शंशाक फिर आगे परम क्या हुआ ।
परम हम तीनो उस जगह पहुँच गये । जहाँ एक बडी हिमशिला थी ।

जीस पर संस्कुत मे लिखा था ।
"अग्र गच्छति भयावह, निवेदीत
श्रीधम जीवन संकटम अस्तु" ।
जैसे ही उस हिमशीला को छुआ । अचानक से एक तेज आँधी ने हम तीनो को उस तेज हवा के चक्रवात मे कंचनजंगा पर्वत के सबसे उँची चॉटी नीचे कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष के नीचे पटक दिया ।

शंशाक

परम यह तो कैसे मुमकीन है पर्वत की उँचाई से अचानक कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष तक ईतनी जल्दी आना । कितने दिन को कंचनजंगा की उँची चोटी पर पहुचने मे ।

परम

कुछ तीन दिन लगे थे ।

शंशाक

कोई रहस्य तो हे ।

परम

तुम्हारी याददास्त चली क्यु नहीँ गई । तुम पागल नही हुए ।

परम

कुछ दिनो तक हमे होश नहीं आया था । जब होश मे आये तो हम तीनो अस्पताल के बेड पर लेटे थे ।

शंशाक

आश्र्श्यचक्ति होकर परम को देखना । फिर आगे क्या हुआ ।

परम

कुछ दिनो तक कीसीको होश नही आया ।
शंशाक मेरी और से डेविड जोन को कहना ।

कुछ रहस्य एसे होते है ।जिसे जानना हम ईसांनो के बस की बात नहीं है । जिसकी चावी सिर्फ प्रकृति (कुदरत) ने अपने पास रखी है ।

एसी कोई भी दुबारा कोशीश न करे क्योकि कुदरत (प्रकृति) एक बार गलती समझकर माफ कर देती है ।

दुसरी बार न चाहते हुए भी सजा देती है ।

सीन-65

ईनडोर, लोकेशन– मुंबई (होटल), टाईम – शाम

**(शंशाक का मुंबई जाना । डेवीडजोन जहाँ ठहरा था ।
उस होटल के रुम मे मिलना ।)**

रिसेप्शन कांउन्टर

मे शंशाक दुबे
डेविड जोन से मिलता है ।

मेनेजर

दो मिनिट सर उनको कोल कर के पुछ लेती है ।
मेनेजर का डेविडजोन का रुम मे कोल करना ।
हैल्लो सर
गुड ईवनींग सर
आप से मिलने कोई शंशाक दुबे आये है ।

डेवीडजोन

ओके उसे मेरे रुम पर भेज दो ।

मेनेजर

ओके सर

शंशाक

जी आप जा सकते हो वह आप का ईंतजार कर रहे है ।
शंशाक थेक्यु मेम, मेनेजर मोस्ट वेलकम सर ।
(लिफ्ट से होकर शंशाक का बारह मंजिल पे रुम नंबर बाहर सो दस मे दस्तक देना ।

डेविज जोन

आ जाओ शंशाक

शंशाक

कैसे हो सर

डेविड जोन

फाईन, बैठा क्या ओर्डर करु,
शंशाक कुछ भी चलेगा सर

डेवीड जोन

वेईटर को कोल करना, कुछ खाने का ओर्डर देना । शंशाक बताओ , तुम अपने काम मे कामियाब हुए ।

शंशाक

परम ने अपने ईन्टरव्यु मे जो कुछ बताया या सुनाया वह मे आप से कहुँगा ।

वईटर

रुम मे आना डाईनींग टेबर पर खाना रख जाना ।
रुम से बहार चले जाना ।

शंशाक

डेविडजोन परम ने बताया की जब हम तीनो मे अब्दुल शेख और किशन पहेलवान अपने सफर पर जाने की शुरुआत की कई आफतो से टकराते हुए जैसे की ठंडी, बर्फीली हवाओ का तुफान, तेज आँधी पार कर हम ईस हिमशिला तक पहुँच जिस पर संस्कृत मे लिखा था ।

डेवीडजोन

आगे फिर परम ने क्या कहा,।

शंशाक

जैसे ही परम ने उस हिमशीला को छुने की कोशीश की, अचानक एक तेज हवा की आँधी मे वह तीनो कंचनजंगा की सबस से उँची चोटी से वह नीचे कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष के नीचे पटके गये ।
कई दिनो तक उनको होश नही आया । सर कुछ तो रहस्य है, उस कंचनजंगा पर्वत के उपर ।

डेविड जोन

हँसते हुए बहुत खुबसुरती से यह कहानी परम ने तुमको सुना दी ।
तुम छोटे बच्चो की तरह आकर सुना रहे हो ।
मे कोई छोटा बच्चा नही ।
शंशाक नही सर यही सच है ।

डेवीडजोन

शंशाक बहुत कुछ पढाँ है, हमने कंचनजंगा के बारे मे, नये और पुराने ग्रंथो मे, तुम मुझे बेवकुफ नही बना सकते ।
गलती हो गई, तुम जैसे अनाडी को मेने परम के पास भेजा ।

शंशाक

सर मुजे परम ने जो बताया , वही सब मेने आपको कहाँ ।

डेवीडजोन

कस्बे के बारे मे, वहाँ रहेनेवाले लोग, पाठशाला मे क्या जानते हगौ,

शंशाक

कस्बे के सारे लोग बुढे, जवान औरतो का सभी का परम के प्रति मान और आदर है ।
पाठशाला के सभी बच्चो को परम से परम को सभी बच्चो से बहुत प्यार है ।
मुखियाँ अमरसिंह जो कस्बे की भागदोड देखते है । बुजुर्ग रतनसिंह से आप मिले चुके है ।

डेवीडजोन

वहा बुँढा आदमी जिसको मे मिला था । क्या वह अभी तक जिंदा है ।

शंशाक

हाँ सर, डेवीडजोन
कंचनजंगा के पर्वत पे घुमने आनेवाले लोग, यात्री, पर्यटको का आना-जाना है ।

शंशाक

पहेले से कही ज्यादा, यात्री पर्यटको आना-जाना लगा रहता है ।
पुरे कस्बे के लोग उन सभी की अच्छी देखभाल करते है ।

डेवीडजोन

बस ईतना ही शंशाक

शंशाक

एक संदेश दिया है, परम ने मुझे आप को सुनाने के लिए मेरा बाकी का पेमेन्ट मिल जाने के बाद कहुँगा ।

डेविड जोन

परम मेरे बारे मे जानना है । वह बात क्या है ।

शंशाक

सर वह आप को जान चुका है ।
आप के काम को भी, मुझे भी की मे एक रिपोर्ट हुँ ।
बहुत वक्त हो चुका है, मेरी माँ मेरा घर पे ईन्तजार कर रही होगी । दो दिन बाद हम बंद कमरे मे नही खुले आसमान के नीचे फैले हुए समुदर के किनारे मीलते है।
(शंशाक का डेवीडजोन को गुडबाय कहकर रुम से निकल जाना ।

सीन-66
ईनडोर-लोकेशन-पाठशाला की क्लासरुम, टाईम-सुबह

(पाँचवी कक्षा की शिक्षिका रीटा चौधरी का अपने क्लास के दो बच्चो के हाथो पे डस्टरसे मारना ।)

रीटा चौधरी

कल बच्चो हम ने आपको जो होमवर्क दिया था । वह सभी ने किया ।

सभी बच्चे

हा टीचर हम ने किया ।

रीटा चौधरी

जिस बच्चो ने होमवर्क नही किया । वह मेरे सामने आ जाएँ ।
दो बच्चो निरव और अशोक उठकर मेडम के पास जाना ।

रीटा चौधरी

क्युँ तुम दोनो ने होमवर्क नही किया । आज तुम दोनो को सजा मीलेगी ।
छोटे से डस्टर को लेकर निरव और अशोक की हथेली पर तीन बार जोर जोर से मारना ।
सभी बच्चे यह देखकर रीटा चौधरी से डरने लगे ।

रीचा चौधरी

दोनो पर चिलाकर मंदबुध्धि कहकर अपनी जगह पर बैठने को कहना ।
निरव और अशोक पाठशाला के छुटने के बाद रोते-रोते घर की तरफ जाना ।

परम

दोनो बच्चो को रोते देखर परम का पुँछना ।
निरव अशोक बेटे क्यु रो रहे थे ।

निरव-अशोक

परम को अपनी हथेलीयाँ दिखानी रीटा चौधरी मेडम ने होमवर्क न करने के कारण हमे दस्तर से मारा ।

परम

दोनो बच्चो की हथेलीया देखना उस पे खुन उभरकर आना । डस्तर के निशान भी दिख रहे थे ।

निरव –अशोक

परम सर, हमे अपने घर जा रहे है ।

परम

सुनो,तुम दोनो मेरे ओफिस मे चलो । हथेलीया मे मलम लगाकर मलमपट्टी लगा दुँ।

जिसके कारण आप को जलन कम हो ।

(परम का दोनो बच्चो को ओफिस मे ले जाना । हथेली पर मलमपट्टी लगाकर घर भेजना ।)

सीन-67
ईनडोर-लोकेशन-पाठशाला का मीटींगरुम,
टाईम–दुसरे दिन सुबह

(सभी शिक्षक और शिक्षिका के साथ परम की मीटींग रखना ।)

परम

यहाँ उपस्थित सभी शिक्षकगण आज यह मीटीग ईसलिए रखी गई है । पाठशाला मे सभी बच्चो को अच्छी शिक्षा और तालीम दे रहे हो ।

विमल उपाध्याय

परम ईस पाठशाला मे हम सभी शिक्षक बच्चो के प्यार और लगाव से पठाँते है।

रीटा चौधरी

परम के सामने अच्चा बनने के लिए उठकर कहँना ।
हम पाठशाला के सभी बच्चो को अपना समझकर पढाँते है ।

परम

अच्छा तो बताओ कोई बच्चा अगर होमवर्क करके नही आया । आप क्या करते हो । उसे बेरहमी से मारते हो । सत्य है ना रीटा चौधरी ।
रीटा चौधरी मनी ही मन परम की पुरी बात समज जाना ।

परम

आज हमारी ईस पाठशाला से एक शिक्षक कम होनेवाले है उसे यहाँ से निकाला जाता है । वह है रीटा चौधरी,
(यह सुनकर सारी मीटींग मे बैठे सभी शिक्षिका का आश्यचक्ति होना ।

रीटा चौधरी

सर मुझे माफ कीजीए ।
आगे से एसा नही होगा ।

परम

आप ईस पाठशाला से जाने की तैयारी करो । बेल बजाना ।

शंकर(प्युन)

बोलिए सर

परम

बहार बैठे निरव और अशोक दोनो को उनके माता-पिता का यहाँ लेकर आओ।
(निरव, अशोक, और उनके मातापिता का मीटींगरुम मे आना ।)

परम

देखो ईन दो बच्चो की हथेलीयाँ रीटा चौधरी की फटकार से लाल हौ गये है .
हथेलीया मे खुन उभर आया है ।

सभी शिक्षीकगण

निरव और अशोक की हथेलीया देखकर रीटा चौधरी की तरफ तिरस्कार भरी नजरो से देखना ।
ईस तरह से बच्चो को मारा जाता है ।

सभी शिक्षकगणो

का रीटा चौधरी का खरी-खोटी सुनाना ।

रीटा चौधरी

परम कुछ दिनो से मेरे घरे मे मेरे पति से कुछ बातो को लेकर झगडे हो रहे है ।
उसी गुस्से और तनाव के कारण मुझसे यह वडी गलती हो गई ।

परम

आप के घर मे जो कुछभी हो रहे हो, वह आप देखो ।
ईस पाठशाला के अंदर आने के बाद आप का पुरा ध्यान और काम यहाँ के सभी बच्चो पे होना चाहिए ।
हमे ईस पाठशाला मे एसी शिक्षिका नही चाहिए, जो ईस तरह से बच्चो को मारे ।
आप यहाँ से जाने की तैयारी करो ।

रीटा चौधरी

आप सब के सामने अपने आँसुको न रोक पाना , रोते-रोते कहँना । मुझे माफ कर दीजीए , आगे से एसा नही होगा ।
(सभी शिक्षकगण और निरव-अशोक और उन दोनो के माता-पिताओ का परम को रीटा चौधरी की पहली गलती समझकर माफ करने को कहँना ।)

परम

देखो शिक्षक वो होता है जो बच्चो को प्यार से, लगाव से , अच्छी बातो से, तालीम से, उसे सिखाता और पढाँता हे ।
ईन सभी लोगो के कहने से हम तुम्हे माफ करते है ।

रीटा चौधरी

निरव-असोक को अपने गले लगाना उन की हथेलीयो को चुमना । सबसे माफी मागँना ।

सीन-68
आउटडोर, लोकेशन-संमुन्दर(जुहु), टाईम-शाम

(शंशाक और डेविड जोन का मुबंई के जुहु के संमुन्दर के कीनारे मीलना ।

डेवीडजोन

मेरे बारे मे परम सबकुछ जानता है । कैसे।

शंशाक

डेविड जोन परम को मालुम हो गया है । जो दो छोटे केमेरे मैने उसके घर छुपा के रखे थे । वह उसको मिल गये ।

डेविड जोन

तुमने बताया होगा , क्युँ ।

शंशाक

आप के बारे मे बताने के बाद ही उसने मुजे यहाँ आने दिया । कंचनजंगा के सफर के बारे मे बताया ।

डेविडजोन

तुम भले ही एक रीपोर्टर हो, पर एक नंबर के बेवकुफ हो ।

शंशाक

वह कैसे, आपने जो काम दिया था। वह तो मेने कर दिया ।

डेविड जोन

जैसे छोटे बच्चे को आसमान का चाँद चाहिए । उसकी माँ एक बडे से बर्तन मे पानीभर चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर उसको न पुरी होनेवाली जिद को दुर करती है । वही तुम्हारे साथ हुआ है ।

शंशाक

मुझे परम ने जो कहानी सुनाई वह सच है, या झुठ मे नही जानता , मुझे सिर्फ मेरे बाकी के पैसे चाहिए ।

डेविड जोन

अब तुम सुना जो मे तुम्हे सुनाता हुँ ।

परम

ने जो तुम से कहाँ तीनो लोगो भंयकर तुफान के कारण कंचनजंगा की सबसे उँची चोटी से नीचे कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष के नीचे बेहोशी मे मिले ।
तो सुनो वह किशन पहेलवान और अब्दुल शेख परम को उस हिमशीला के कुछ दुर छोडकर वापस कस्बे मे लौटे थे । कई दिनो तक बेहोश रहा । याददास्त भुल गया ।
सच तो यह है, की वह परम तीन दिनो के बाद कंचनजंगा की सबसे उँची चोटी से नीचे वटवृक्ष के नीचे कस्बे के बहार खडे वटवृक्ष के नीचे अकेला बेहोशी की हालत मे मिला था ।

शंशाक

क्या बात है, डेवीडजोन तुम बहुत कुछ जानते हो ।

डेवीडजोन

मे तुम्हे परम के पास भेज सकता हुं, तो क्या तुम्हारे पर नजर रखने के लिए कस्बे के कीसी आदमी को काम पर रख नही सकता । पठान अवतारसिंह हमे हर जानकारी देता है ।

शंशाक

बहु ही बढिया सर मान गया ।

डेवीडजोन

सुनावो क्या कहाँ है । परम ने,

डेवीडजोन

शंशाक पहेले मेरे काम की फीस चार लाख ।
डेवीडजोन शंशाक आधे-अधुरे काम के पैसे भी आधे-अधुरे मिलते है । अपनी बेग से दो लाख निकारलकर देना ।
अब बताओ। तुमने सही तरीके से काम पुरा नही किया ।

शंशाक

सुनो डेवीडजोन परम ने मुज से तुम से एक महत्वपूर्ण बात कँहने को कही है । जो प्रकृति की गोद मे बैठकर तुम सुनोगे ।
ईस प्रकृति को हम ईश्वर भी मानते है । ईस ईश्वर ने कई बाते कई जगह अकबंध रखे है । जिसकी चाबी वह सिर्फ अपने पास रखी है ।
हम ईंसान कितनी भी कोशीश कर ले, उस रहस्य को जानना, उन तक पहुँचना नामुकीन या असंभव है ।

डेविड जोन

परम एक शिक्षक की तरह उपदेश भी दे सकता है । याद आया वह संस्कृत पढाँता है ।

शंशाक

प्रकृति एक बार गलती समजकर माफ कर देती है । दुसरी बात यह प्रकृति ने चाहकर भी एसी सजा देती है की ईंसानो की रुह (आभा) भी काप उठती है । एक कोशिश कर चुके हो , दुसरी कोशिश मत करना ।

डेविड जोन

कोई रहस्य तो है, उस काँचनजंगा पर्वत के उपर यह बात तो तय है । मे सोचुँगा।
मेरी और से उस परम को बता देना ।
मेरी भी एक फितरत है ।
कोई काम या रिसर्च मेने आधे-अधुरे नही छोडे। यह बात उस शिक्षक परम को बता देना ।
जल्द ही हम, एक दुसरे से मिलेगे ।

सीन-69

ईनडोर, लोकेशन-परम का घर, टाईम-दोपहर ।

(मुंबई से आने पर शंशाक का परम से मिलने जाना । उसके घर पे ।)
परम शंशाक तुम कब आये ।

शंशाक

आज सुबह बारह बजे, कुछ बात एसी थी । तुंरत तुम से मिलना । सही लगा ।

परम

कोन सी बात डेवीड जोन के बारे मे ।

शंशाक

बिलकुल वह तुम्हारी बात या कहानी को मानना नही चाहता ।
उसे लगता है काँचनजंगा की उँची चोटी पर कोई रहस्य है । जो तुम जानते हो ।

परम

जो भी था । मेरे सफर के बारे मे मैने वही कहाँ ।

शंशाक

तुम्हारी आखरी चेतावनी भी मेने डेविडजोन को कहाँ ।

परम

क्या कहा डेविडजोन ने,

शंशांक

परम डेविड जोनने कहाँ तुमने जो कहाँनी अपने सफर के बहारे मे कही, वह बिलकुल सच नही ।

वह कोई काम या अपना रिसर्च आधा-अधुरा नही छोडेगा । जल्द ही वह तुम से मिलेगा ।

परम

बातो से लगया है, की डेवीड जोन कुछ नई अनहोनी, अनसुनी हरकत करेगा । हम सब को उसके लिए तैयार रहना होगा ।

सीन-70

आउटडोर, लोकेशन-कस्बे का वटवृक्ष, टाईम-शाम ।

(कस्बे के सारे लोगो का कस्बे के वटवृक्ष के नीचे ईक्ठठा होना ।)

बुजुर्ग रतनसिहं

कंचनजंगा को सबसे उँचे शिखर पर एक तेज प्रकाश का अदभुत द्रश्य को देखना।

परम

चाचा यह क्या है, कैसा प्रकाश है

बुजुर्ग रतनसिंह

बेटे यह प्रकाश कहाँ से आ रहा है. दुर से भी हम यह नीचे से दिखाई देता है। यह प्रकृति की अजायबी कहते है ।

कस्बे के सभी लोगो

वटवृक्ष के आसपास खुली जगह पर यह मनमोहक द्रश्य को देखना । आपसे मे बाते करना ।
यह शरदपुर्णिमा के दिन हर साल देखने को मिलना है .
यह कोई जानता नही क्या

बुजुर्ग रतनसिंह

मेरे कस्बे के लोगो यह एक अनकही, अनसुलगी पहेली है । कई यात्रा पर्यटको रिसर्चो ने ईस अदभुत द्रश्य को केमेरे मे फोटो के रुप मे, वीडीयोग्राफी मे उतारना, चाहते है पर ईस द्रश्य का फोटा या वीडीयो बना ही नही। कुछ दिखाई ही नही देना ।
(सभी कस्बे के छॉटे-बडे लोग, बच्चे, य़ात्री पर्यटकोने यह नजारा देखने कंचनजंगा आते सब की आँखे और मन को एक परमशांति की अनुभुति देती है ।)

सीन-71

आउटडोर, लोकेशन-परम के घर की छत, टाईम-रात

(परम का अपने घर की छत के उपर आधी रात को अंतरा से मिलने जाना ।)

परम

चांदी का बोक्स खोलना । अंगुठी को उंगली मे डालना । दो सुंदर मोती को अपने होठो से चुमना ।
(आसमान मे एक सुनहरा दिव्यप्रकाश फैलना । दो सुंदर श्वेत पंखो को फैलाये और श्र्वेतवस्त्रो से सज्ज अंतरा का परम के सामने उतरना ।

अतंरा

परम को देखना । बोलो परम क्यु याद किया । ईस समय , मुझे मालुम है । कुछ सवाल है, तुम्हारे मने में आज शाम की घटना को क लेकर
परम तुम्हे कैसे मालुम की में उसके बारे मे सोचता हुँ ।

अंतरा

परम हम जब कीसी को सच्चे ह्दय से पंसंद करते है, या मानते है ,उसको हर बात को जानना और समझाना आसान हो जाता है ।

परम

कंचनजंगा पर्वत की सब से उँची चॉटी दिव्यप्रकाश से जगमगा रहा थी । वह किस कारण ।

अंतरा

शरदपुर्णिमा के दिन चंद्रदेवता पूर्ण रुप से खिलते है । अपना पुरे दिव्यप्रकाश से पृथ्वीवासीयो पर, फल, फुल, पर्वत, झरने, नदियाँ , समुंदर, खेतो की उसकी उपज पर अपना तेज, प्रभाव बरसाते है ।
जिससे समग्र प्रकृति मे एक नही उर्जा का संचार होता है ।

परम

अंतरा कंचनजंगा पर्वत पर जो तेज हम सभी लोगो को दिखा था । वह चंद्रमां के कारण था ।

अंतरा

हाँ, परम हमने तुम्हे बहुत पहेले कहाँ था । हम आसमान की दुनिया मे हम सब का ध्यान रखते है । ईश्वर के देवदुत यह चंद्र देवता ही है ।
अदभुत है, तुम्हारी दुनिया ।

अंतरा

ईस शरदपुर्णीमा की रात को चंद्रदेवता साक्षात हमे मिलने आते है ष हमारे बारे मे पुछते है ष। जो भी आश्वयकता हो वह पुरी करते है । वह हमारे लिए पितातुल्य है।

परम

शुक्रिया मेरी जिज्ञासा को पुरा करने के लिए,
मेरे पास रुक जाओ ।

अंतरा

मुस्कुराहट के साथ कहाँ रखोगे मुजे ।

परम

अपनी आँखो की पलको मे अपने हदय में ।
अंतरा परम की बात सुनकर कुछ क्षण परम को देखना ।
परम के पास आकर परम के माथे को चुमना ।
परम को गले लगाकर कुछ क्षण एसे ही रहना ।
फिर अलग होकर परम से जाने को कहँना ।
(सुनहरे श्र्वेत पंखो को फैलाये अंतरा का परम के सामने से अपनी आसमान की दुनिँया मे चले जाना ।)

सीन-72
ईनडोर-लोकेशन-पठान अवतारसिंह का घर,
टाईम-दोपहर ।

(पठान अवतारसिंह का डेविड जोन का फोन आना ।
दोनो के बीच बात होनी ।
पठान अवतारसिंह अपने घर मे बिस्तर पर बैठना । अचानक फोन की रिंग बजना ।
हैल्लो फोन ।
सामने से (डेविडजोन मेरी आवाज तो पहचान ली ।
पठान अवतारसिंह हाँ हजुर आप को कोन नही जानता मेरे माईबाप है ।

डेविड जोन

(कस्बे के पाठशाला मे क्या हो रहा है । एक एक पल की हमे जानकारी चाहिए ।
पठान अवतारसिंह वह साला रिपोर्टर भी परम की और हो गया ।
नमक हराम

डेवीड जोन

पठान अवतारसिंह जो भी करना है। वह हम दोनो को करना होगा । शंशाक को हमने बता दिया है । तुम मुजे कस्बे की , परम की हर एक जानकारी हे रहे हो ।
कोई आया था तुम्हारे घर ।
पठान अवतारसिंह अभी तक कोई भी नही पर हजुर आप को यह नही कहना था । यह आपने ठीक नही कीया । आज नही तो कल वह रिपोर्टर बच्चा शंशाक परम को लेकर मेरे पास जरुर आएँगा ।
(उसी दौरान दरवाजे पे दस्तक की आवाज सुनना ।)
(दरवाजे तक पहुँचना । दरवाजा खोलना । सामने तीन आदमीओ को देखना ।
तुरंत दरवाजा अंदर से बंध कर देना ।
वह तीन परम, शंशाक और किशन पहेलवान थे ।

किशन पहेलनान

एक ही लात से घर का दरवाजा तोड दिया ।
पठान अवतारसिंह को पकडकर कस्बे के बीच ले जाना ।)

सीन-73

आउटडोर– लोकेशन-कस्बे का गहरा कुँआ-समय , शाम

(एक गहरे कुँए के बीच लोहे की बडी पाईप से उलट लटका कर पठान अवतारसिंह को मारना ।

कुँए का दृश्य

पठान अवतारसिंह को बडी रस्सी ले बाँधकर कुए के बीच उलटा लटकाना । पठान अवतारसिंह जोर-जोर से चिल्लाना । मुझे छोड दो , छोड दो। में आगे से डेवीड जोन को कुछ भी जानकारी नही दुँगा ।

किशन पहेलवान

हाथो मे लकडी का डंडा लेकर जोरो से पठान अवतारसिंह को पीठ और पैरो मे मारना ।

परम

किशन दो-चार और जोर से ईस कमीने को डंडे लगाना । जहाँ रहता है । खाता है। अपने कस्बे के लोगो से बेईमानी करता है ।
यहाँ की सारी जानकारी उसे विदेशी बंदर देता है ।

अब्दुल शेख

बता दे अवतारसिह क्या कुछ बताया है, वरना आज तुजे कोई बचाने नही आएगा ।

पठान अवतारसिंह

सुनो मे सबकुछ बता दुँगा पहेले ईस कुए के बीच से निकालो ।
अब्दुल शेख, किशन पहेलवान दोनो का पठान अवतारिसंह को धीरे से नीचे उतरना ।

परम

जो भी कहँना, पुरा सच कहँना ।

पठान अवतारसिंह

सुनो मे ही था जो पठान अवतारसिंह जो डोलरो की लालच से कंचनजंगा के टेडे-मेडे रास्तो के बारे मे जानकारी दी, बुजुर्ग रतनसिंह से मिलाया, पुरे कस्बे के बारे मे। वहाँ रहेनेवाले लोगो, पाठशाला के बच्चो के बारे मे, तुम्हारे ईन दो दोस्तो के बारे मे, शंशाक रिपोर्टर की हर एक कोशिश के बारे मे डेविडजोन से बात की है।

परम

बडा ही मतलबी और स्वार्थी हो। तुम जिस धरती ने तुम्हे धन-धान्य, हवा, पानी, रहेने को जगह दो। उसीका ही सौदा तुमने कुछ डोलर के लिए तुमने कर दिया।

पठान अवतारसिंह

मुझे माफ कर दो, मे मेरी बीबी और बच्चो की कसम खाकर कहताँ हुँ।
परम अब माफी माँगने से क्या होगा।
सबकुठ तो बता दिया। उसे डेविड जोन को,

किशनपहेलवान

परम हम हर कीसी का सामना कर लेगे।

अब्दुल शेख

तुम चिंता मत करो जो करना है, उसे विदेशी को वह करे, हम चौकना रहेगे।

परम

हम सब लोको को सावधान रहेना होगा। सोचता हुँ, एक बार डेविड जोन से बात कर दो।

शंशाक

परपम, तुम क्यु पहेले बात करोगे। ईस से बात बिगड जाएगी। तुम्हारी कमजोरी डेविड जान लेगा।
(गहरे कुँके के आसपास से चारो का अपनी अपनी जगह जाना।)

सीन-74
ईनडोर-लोकेशन-पाठशाला (मीटींग रुम),
टाईम – सुबह ।

(परम का सभी शिक्षकगणो को मीटींगरुम बुलाना ।)

परम

पाठशाला की ओफिस मे सभी शिक्षकगणो के सामने कहँना । मेरे साथी सदस्यो नमस्कार ।
यहाँ उपस्थित सभी शिक्षकगणो को यहा बुलाना ।
बच्चो की अच्छी तालीम और पठाई के बारे मे है ।
विमल उपाध्याय
परम वह तो पाठशाला के बच्चो को दी जाती है ।

परम

हम आप की शिक्षा पर संदेह नही करते । बहुत ही प्यार से आप बच्चो को पढाँते है ।
दो दिन बाद कस्बे मे मेला लगानेवाला है ।
आप सब तो यहाँ ही रहते है । तो बस सिर्फ बच्चो का ध्यान रखना है ।

कोमल त्रिपाठी

परम हमारा काम सिर्फ पाठशाला के अंदर बच्चो का ध्यान रखना है ।
पाठशाला के बहार तो ईनका ध्यान उनके माता-पिता की रखते है ।

परम

यह कस्बा छोटा है, बच्चे भी ज्यादा से ज्यादा सो या दो सो है ।
अगर कोई बडा हाईस्कुल होता तो मे आप लोगो को यह बात नही कहता ।
एक बात और तुम घर मे पर्सनल ट्युशन से जो पैसे कमाती हो, वह उस कस्बे के बच्चो से ही है ।

कोमल त्रिपाठी

सारी परम हम बच्चो का खयाल रखेगे ।

परम

आप मे से कीसी न कुछ कहँना । मेने जो भी कहाँ, वह आप लोगो का ध्यान रखता है ।

निरव जोशी

रविन्द्र शुक्ला के कानो मे धीरे से कहँना । परम बच्चो को लेकर हमारे से बहुत काम करवाता है ।

रविन्द्र शुक्ला

क्या कर सकते है, ईस पाठशाला की सारी भागदौड, गोविद माथुर ईसको देकर गये है ।

परम

रविद्र शुक्ला क्या वात है । निरव जोशी से क्या गुपसुप कर रहे हो, जो भी कहँना है, मुझे से सीधे कहो ।

एक बात आप सब सुन लो, बच्चो को लेकर मे आप सब पर शख्त और कठोर हुँ, यह ही सच है ।

(निरव जोशी और रविन्द्र शुक्ला दोनो की बोलती बंद हो जाना ।)

सीन–75
आउटडोर, लोकेशन, कस्बे मे मेला,
टाईम– सुबह से शाम ।

(कस्बे के बीच मेला लगना। ईसी मेले मे डेविडजोन का और उनके साथीयो क वेश बदलकर आना ।)
सुरज की पहेली किरण का निकलना ।
पुरे कस्बे के बीच मेले मे सभी लोगो की चहल-पहँल बढ जाना । सभी छोडे बडे बच्चे अपने माता-पिता के साथ, कस्बे के बुठे लोग, हट्टे-कट्टे नौजवान, सभी का मेले मे घुमने आना ।
कई नये, अनजाने, लोग , अपने व्यापार या चीजो को बेचेन आना ।
जिसमे गुब्बारेवाले, मरी मसाले वाले, खिलौने वाले, खानेपीनेवाले, जादुगर, चित्रकार रस्सी पे चलानेवाले, करतब दिखानेवाले, सभी लोगो का उमडना ।
उडनखटोले वाले की आवाज से साथ मेले का माहोल शुरु होना ।

परम

कस्बे के मुखियो के पास वटवृक्ष के नीचे बैठकर, अमरसिंह से कहँना, ईस मेले मे कुछ भी अनहोनी घटना न हो, उसके लिए आपने ध्यान रखा है ।

मुखिँया अमरसिंह

बेटे परम अखाडे के सभी नोजवानो को किशन पहेलवान ने यह बात बता दी है ।
(सामने से किशन पहेलना का आना । पुछलो तुम अपने दोस्तो से ही, ।

किशन पहेलवान

हाँ, परम सभी लोगो पर मेरे बंदे नजर रख रहे है ।
(ईन बातो के दौरान वटवृक्ष के कुछ दुर बाँसुरीवाला एक ईंसान यह सब बात सुन रहा था । वह कोई और नही, डेवीडजोन था । जो दाढी मुछ लगाकर ईस मेले मे आ पहुँचा था ।

बुजुर्ग रतनसिंह

धीरे-धीरे परम के पास वटवृक्ष के नीचे आ पहुँचे ।

परम

चाचा आओ ईधर जगह है बैठो तबीयत सही है ।

बुजुर्ग रतनसिंह

बडे मेले मे मजा आ रहा है ।

परम

हाँ चाचा, बहुत ही मजा आ रहा है ।
(दो-तीन बच्चो का परम के पास आना परम सर , परम सर कहकर)
चाचा ईन बच्चो को भी मेले मे खुश होकर जुम रहे है ।

बुजुर्ग रतनसिहं

यह देखकर परम ईन छोटे बच्चो मे तुम्हारी जान बसती है ।

डेविड जोन

बुजुर्ग रतनसिंह जी बातो पे ध्यान रखना ।
मन ही मन सोचना ।
यह बच्चे ही मुजे परम के सच्चे सफर के बारे मे, मुज सच बताने मे मदद करेगे ।
(सभी मेले मे आनेवाले बहार के लोगो का खाने-पीने का बंदोबस्त पाठशाला मे किया गया था । पाठशाला मे छुटी थी ।)

डेविड जोन

एक बजे दोपहर अपने दस साथियो के साथ पाठशाला के अंदर बैठकर खाना खाने लगा ।
मेरे सभी साथियो यहाँ आप लोगो को सिर्फ देखना है, सुनना है । जो भी जानकारी मिले , वह मुजे आकर बताना है । यहाँ अभी हम कुछ भी नही कर सकते हमे ईंतजार करना होगा ।

गुंडो का लीडर नंदु

डेवीडजोन सुनो,

डेवीडजोन

मुझे मेरे नाम से मत बुलाओ । ईतनी भी अकल नही ।

गुंडे का लीडर नंदु

सोरी बोस से अब से गलती न होगी ।

डेवीड जोन

तुम्हे ईस पाठशाला के हर एक कक्षा ओफिस, जाने-आने के रास्ते के बारे मे पुरा जानना है ।

गुंडे का लीडर (नंदु)

ओके बोस

डेवीडजोन

तुमे दो ईंसानो को अपने पास रखो, बाकी सात लोग कस्बे के मेले मे चारो और नजर रखेगे ।

(दोपहर का खाना –खाने के बाद डेविडीजोन का वापस वटवृक्ष के नीचे आकर बासुरी बजाकर खडे रहना ।

बाँसुरी ले लो, बासुरी ले लो ।

शंशाक

बासुरीवाले के पास से निकलना, साथ मे अब्दुल शेख का भी होना । रुको, अब्दुल।

अब्दुल

क्या हुआ, शंशाक चलो परम के साथ खाने के लिए ।

शंशाक

यह बासुरीवाले की आवाज कुछ जानी-पहचानी लगती है । बासुरीवाले के पास जाकर पुछँना । कौन हो तुम, कहाँ से आए हो, बासुरी का दाम, बासुरीवाला (डेवीडजोन) साबसी दस रुपये सिर्फ हम पासे के गाँववाले है ।

अब्दुल शेख

अरे शंशाक कहाँ, रुके हो, बहुत सारा काम है ।

शंशाक

तुम्हारी आवाज कुछ सुनी लगती है ।
जल्दबाजी मे अब्दुल शेख के साथ साथ आगे निकलना ।

डेवीडजोन

मन ही मन सोचना ।
बार-बार बचा, यह शंशाक मुझे पकड लेता ।

गुंडे का लीडर नंदु

कानो मे डेवीडदोन से बोस पुरे पाठशाला के अंदर-बहार से देख लिया । आने जाने के रास्तो को, ओफिस के साथ सभी क्लासरुम को देख लिया ।
(उन दस लोगो ने, कस्बे की लोगो से बातो-बातो मे सारी जानकारी प्राप्त कर ली, शाम होते होते डेवीडजोन और उन दस साथीयो का शाम आठ बजे अंधेरे का फायदा उठाकर वहाँ पहुँचना ।
जहाँ डेवीडजोन ने तय किया था ।

सीन-76

ईनडोर, लोकेशन-पुरानी ईमारत के अंदर, टाईम-शाम ।

(डेवीडजोन का सभी दस साथीयो के साथ कस्बे के थोडे दुर जंगल के बीच एक पुरानी ईमारत के अंदर ईकठ्ठा होना ।
पुरानी ईमारत के अंदर

डेवीड जोन

सुनो तुम सभी लोग हम सब दो दिनो के बाद सुबह पुरी पाठशाला के सभी बच्चो को कीडनेप करेगे ।

गुंडो का लीडर (नंदु)

डेवीड ईस काम मे रिस्क बहुत है । हम आदमी कम है । ज्यादा लोग चाहिए ।

डेवीड जोन

तुम टेन्शन मत लो, कल और बीस मोस्ट वोन्टेड लोग शामील होगे ।
सब मिलाकर त्रीस लोग काफी होगे, वह सब रिवोल्वर, गन, बंदुक, चाकु जैसे हथियार लेकर आनेवाले है ।

मुन्ना (दस गुंडो मे से एक)

बोस, पुलिस अगर आ गई तो, हम सब पकडे गये तो,

डेवीड जोन

उस पाठशाला और कस्बे से, पुलिस स्टेशन काफी दुर है ।
एक दिन के अंदर हम पुरे प्लान को अंजान देना है ।

(नंदु गुंडो का लीडर)

बोस बताओ, क्या कोई पुरानी दुश्मन है ।
उस मास्टर परम से, डेविड जोन

यह जानना तुम्हारे लिए जरुरी नही, तुम सिर्फ अपने काम से काम रखो । जो किमत तुम्हे दी है, वह मिल जाएगी ।

(नंदु)

कोई बात नही बोस , समज गया
(सभी दस गुंडो का और डेवीडजोन का खान खाकर शराब पीकर अपनी-अपनी जगह सो जाना ।)

सीन–77

आउटडोर , लोकेशन, हाईवे से जंगल मे पुरानी ईमारत तक टाईम–सुबह ।

(त्रीस मोस्ट वोन्डेट गुंडो का मीनी बस मे बैठकर डेवीड जोन तक पहुँचना ।)

एक बंदा (पीन्टु)

हम कहाँ जा रहे है, किस जगह पे,
त्रीस गुंडो का बोस चीलाकर अबे साले हम वहाँ जा रहे हे । जहा पे कंचनजंगा पर्वत आया हुआ है ।
जंगल के बीच एक पुरानी ईमारत है ।

दुसरा बंदा (लंबु)

बोस ईस बार कया करना है । योरी, किडनेपींग, या खुन ।
चीलाकर सारे एसे सभी काम बोल रहा है, की तुने किये है । बैठ, खामोश ।
(बाकी सभी गुंडो का खामोश रहकर बाते करना, शराब पीना, ।
मीनी बस का हाईवे से टर्न लेकर जंगल के रास्ते पे गुजरना ।उबड-खाबड रास्ते के कारण बस के अंदर एक दुसरे का टकराना ।

पीन्टु

अबे बस चला रहा है या ट्रक सारे ड्राईवर धीरे से मेरा शादी करना बाकी है । हम सब को ईस बस मे लिपटाना चाहता है ।
ड्राईवर एक पुरानी ईमारत के पास आकर बस रोकना ।

डेविड जोन

पुरानी ईमारत से बहार आकर चीलकुट से मिलना ।

चीलकुट

बोस डेवीड जोन कैसे हो,
बहुत देर हो गई। सोरी बोस रास्ते मे टायर पंचर हो गया था । नंदु के सामने आँखे मारना ।

डेवीड जोन

आँखे मारना भुला नही तुं
बेवकुफ कीसी और को बनाना ।
रास्ते मे कीसीने बस मे तलाशी ली ।

चीलकुट

नही बोस बस के नीचे एक छुपा बोक्स था । जीसके अंदर सभी हथियार है ।

डेवीड जोन

बहुत खुब, शाबास,

चीलकुट

बोस ईस हथियारो से क्या करना है । किसे मारना है, या कीडनेप करना है ।

डेवीड जोन

पाठशाला के सभी बच्चो को किडनेप करना है ।

चीलकुट

बोस, बच्चे, कुछ देर सोच मे रहकर डेवीड जोन, बच्चे । क्युँ ।

डेवीड जोन

बच्चो का किडनेप कर एक मास्टर परम से एक रहस्य जानता है ।

सीन-78
ईनडोर, लोकेशन (अस्पताल) टाईम-सुबह

(परम को पता चलना । गोंविदराय माथुर की तबीयत बिगड गई है। अस्पताल मे भर्ती है । परम को दहेरादुन जाना ।)
(अस्पताल मे)

परम

यह क्या है , कुछ खबर भी नही दी, आप ईतने बीमार है । हमे पराया ही समज लिया ।

गोविंदराय माथुर

नही बेटे, थोडा बुखार था । कुछ कमजोरी थी । घर मे ही गिर पडा । मेरे नौकर ने मुझे अस्पताल भर्ती करवा दिया । तुम को फोन करके बुलवा दिया ।

परम

डोकटर से बात हो गई है । आप को कुछ दिन अस्पताल मे रहना है । श्यामप्रसाद को मेने बोल दिया है, जो दो दिन आप के साथ यहाँ अस्पताल मे रहेगा ।

गोविंदराय माथुर

बेटे पाठशाला सब-कुछ सही है ।

परम

पाठशाला की आप फीकर मत करो सब अच्छा चल रहा है । आप कहाँ तो मे आप के पास रुक जाता है । यहाँ अस्पताल में,

गोविंदराय माथुर

नहीं बेटे परम मे अब ठीक हुँ । तुम बेफीकर होकर जाओ ।

परम

कुठ पाठशाला की किताबे और सामान ले जाना है । आप के घर जाकर मे वहाँ से कस्बे के लिए निकल जाउँगा ।

गोविंदराय माथुर

बेटे मेने मेरी अलमारी मे पहले बोक्स मे कुछ रुपये रखे है । पचास हजार, वह भी ले जाना । पाठशाला के लिए काम आयेगा ।

परम

अच्छा सर मे चलता हुँ,
फोन पे रोज मुज से बात करना ।
घर जाने के बाद
(परम का अस्पताल से बहार निकलना ।)

सीन-79

ईनडोर, लोकेशन, गोविंदमाथुर का घर, टाईम-दोपहर ।

(गोविंदराय माथुर के घर पहोचते ही ,
परम का कस्बे से कीसी का फोन आना ।)

परम

गोविंदराय माथुर के घर पहोंचना। घर के अंदर जाते फ्रीज मे से ठंडा पानी की बोटल निकालकर अपना मुहँ साफ करना ।
अचानक गोविंदराय माथुर के घर फोन की रिंग बजना । हैल्लो, फोन

मुर्खिया अमरसिंह

सामने से हाँ, परम तुम बात कर रहे हो,

परम

हाँ, मुखियाँ अमरिसंह जी, मे बोल रहा हुँ ।

मुखिँया अमरसिंह

परम बेटे
तुम तुरंत यहाँ कस्बे मे आ जाओ ।
एक बुरी खबर है ।

परम

कौन सी बुरी खबर मुँखिया जी,
जो भी हो , मुझे साफ-साफ बताओ ।

मुखिँया अमरसिंह

परम सुनो तुम्हारे देहरादुन जाने के बाद सुबह नव बजे एक मीनी बस मे और बडी वान मे चालीस पचास लोको का काफला अचानक से पाठशाला मे धुसकर सभी बच्चो और सारे शिक्षकगण को किडनेप कर लीया ।

सारे कस्बे के लोग पाठशाला के बहार बडे गेट पर खडे है ।

परम

मुखियाँ जी मे यहाँ से तुंरत आ रहा हुँ, पता चला यह सारे लोग कौन है ।

मुखियाँ अमरसिंह

बेटे तुम यहाँ आ जाओ उसके बाद तुम्हे सब मालुम हो जाएँगा ।
(परम का फोन रखकर तुंरत कस्बे के लिए निकलकना ।)

सीन-80

आउटडोर, लोकेशन-पाठशाला, टाईम-शाम ।

(परम का कंचनजंगा के नीचे कस्बे मे पहुँचना ।
मुखिँया अमरसिंह का परम का शुर से अंत तक की बात करना ।

परम

अपने कुछ सामान के साथ दौडकर पाठशाला के बहार पहुँचना ।
वहाँ कस्बे के बहुल लोग, बच्चो के सभी माता पिता मौजुद थे ।

बुजुर्ग रतनसिंह

परम को देखकर तुम आ गये बेटे,
परम चाचा पाठशाला मे और लोग कौन हे, पता चला ।

बुजुर्ग रतनसिंह

बेटे, परम यह सारे गुंडे डेविडजोन लेकर आया है ।

परम

डेवीडजोन उसकी ईतनी हिंमत मेरे बच्चो को किडनेप करेगा ।

मुखिया अमरसिंह

परम यह पुरी पाठशाला को चारो और से उनके गुंडो ने कब्जा कर लिया है ।

अब्दुल शेख

कीशन पहेलकवान (दोनो) परम अगर बच्चे नही होते उसके पास तो हम दोनो
किशन के सभी पहबेलवान उन सभी चालीस गुंडो को मार-मार कर भगा देगे ।

शंशाक

परम हम ने डेवीड जोन को हल्के मे लिया ।

मालुम न था । वह ईतना बडा प्लान बनाएगा ।
मेले मे अब्दुल, वह बासुरीवाला जिसकी आवाज जानी-पहचानी थी । वह और कोई नही डेवीड जोन था ।

अब्दुल शेख

काश, शंशाक मैने जल्दबाजी मे तुम्हे हाथ पकडकर ले गया न होता तो वहाँ उसे पकडा जा सकता ।

बच्चो के माता-पिता

परम जल्द ही कुछ करो, हमारे बच्चे , हमारे पास ला दो बहुत सारे गुंडे हथियार लेकर आए है । बच्चो ने खाना भी नही खाया ।
देखना, बच्चो की माताओ का रोना, अपने बच्चो को लेकर भयभीत और चिंतित होना ।

पाठशाला के अंदर डेवीड जोन माईक पर

कस्बे के सारे लोग, बुठे जवान, ईस सभी बच्चो को माताए से मुझे कोई दुश्मनी नही । ना ही ईन पाठशाला के बच्चो से मुजे जो जाना है । वह ईस कंचनजंगा पर्वत के सब से उँची चोटी के बारे जो रहस्य है । वह जो परम जानता है । मुजे परम चाहिए, और आप को अपने बच्चे, कोई काम या रिसर्च मे आधा-अधुरा नही छोडता ।
सुबह आठ बजे मुजे मेरे सामने परम मौजुद चाहिँए ।

परम(पाठशाला के बहार)

माईक पर डेवीडजोन, मे परम यहाँ पाठशाला के बहार खडा हुँ । यह तुम ठीक नही कर रहे हो ।
बहुत ही शर्म की बात है
तुम जैसा पढा-लिखा ईंसान बच्चो को किडनेप करेगा ।
तुम्हे जानना है, वह मे बताने के लिए तैयार हुँ ।

डेविड जोन(पाठशाला के अंदर)

परम तुम जो भी समजो । मेने भी सोच-समजकर, शांति से कोशीश की, काँचनजंगा के रहस्यो को जानने की शंशाक को भेजा था । उसने भी मेरे काम न करके तुम्हारे साथ हो गया ।

परम प्यार से तो तुम बताते नही मेरे पास यही आखरी रास्ता था ।
आज तक डेवीडजोन ने कोई भी रिसर्च आधा-अधुरा नही छोडा । कोई चालाकी या होशियारी नही पुलीस को बताने की गलती मत करना ।
वर्ना बच्चो को पढाँने वाले शिक्षक और शिक्षिका की जान से हाथ धोने पडेगे ।

परम (पाठशाला के बहारमाईकपर)

डेवीड जोन मे तुम्हारे हर एक शर्त मंजुर है ।
पर एक बात है, जो तुम्हे माननी होगी ।
शाम के सात बच चुके है । बच्चो ने कुछ भी खाया नही ।
तुम्हारे साथीयो को कहाँ बच्चो के लिए खाना बनाके रखा है । वह ले जाकर बच्चो का खाना खिला दो ।

डेवीडजोन(पाठशाला के अंदर माईकपर)

ओके, मेरे दो बंदे को भेजता हुँ, कोई होशीयारी मत करना ।
डेवीड जोन का चिलकुट और नंन्दु बोस के साथ तीन लोको को भेजना, बच्चो के लिए पाठशाला के बहार, खाना लाने के लिए, पाठशाला के शिक्षकगण का बच्चो को खाना खिला कर सुला देना ।

सीन-81

आउटडोर, लोकेशन-मुखिँया, अमरसिंह के घर के बहास

समय—रात ।

परम के साथ कस्बे के सभी लोगो का मुँखिया अमरसिंह के बडे घर बहार खुली जगह पर एकत्रित होना ।)

बुजुर्ग रतनसिंह

कस्बे के सभी लोगो को मेरा निवेदन है, आप सब के बच्चो को कुछ नही होगा । आप धैर्य रखे । हम सब मिलकर ईसका रास्ता निकाल लेगे ।

कस्बे के सबी लोग

चाचा हमे डर है। हमारे बच्चो को कुछ न हो जाये , बहुत छोटे है ।

मुँखिया अमरसिंह

डेवीड जोन यह सब करेगा यह हमने सपने मे भी नही सोचा ।
चालीस गुंडो को लेकर बच्चो के सहारे यह सब कुछ करेगा ।

किशन पहेलवान

परम तुम क्यु चुप हो, कुछ बोलो, क्या करना है ।

बच्चो के माता-पिता

परम क्या बोलेगा । जो हो रहा है , वह परम के कारण है ।
हमारे बच्चो, उस विदेशी डेवीड के पास है । कया जानना है, उसे किस रहस्य की बात कर रहा है । जो चाहता है, डेवीड वह उसे दे दो,
हम हमारे ब्वचे सही सलामत चाहिए ।
(सभी बच्चे के माता-पिता के एक साथ ईस बात को समर्थन देना ।

परम

बच्चो को कुछ भी होने नही दुँगा ।
यह मेरा आप सभी से वादा है ।
डेवीड जोन जिस रहस्य की बात कर रहा है । वैसा कोई रहस्य नही उस कंचनजंगा पर्वत के उपर ।

अब्दुल शेख

तो परम अब आगे क्या करना है ।
हमे बताओ ।

परम

जब संमुदर शांत होता है, तब ज्यादा खतरनाक भी होता है । उस डेवीड ने शांत संमुदर मे पथ्थर डालने की गलती की है ।
अब ईस संमुदर मे तुफान आयेगा । अगर मेरे बच्चो को हाथ लगाया तो ।
मेरे कारण यह मुसीबत आई है, तो मे ही आप सब को ईस मुसीबत से बहार ले आउँगा ।

किशन पहेलवान अब्दुल शेख

दोनो एक साथ हम तुम्हारा साथ देगे ।

परम

किशन पहेलवान तुम अपने पहेलवानो को ईक्ठ्ठा करो ।
अब्दुल तुम कस्बे को नोजवना को तैयार करो ।
आज रात कीसी भी तरह तुम सभी पाठशाल के अंदर धने वृक्षो के सहारे जाना है ।
डेवीडजोन को या उनके गुंडो को तनिक भी मालुम नहीं होना चाहिए ।
हमारी रणनीती की,

किशन पहेलवान अब्दुल

दोनो का अपने काम पर लग जाना ।

शंशाक

परम यह बात ध्यान रखना ।

सभी बच्चे डेविड जोन के पास है ।

परम

डेवीड जोन ने एसा किया , कीसी भी बच्चो को नुकशान या हानि पहुँचाई तो वह उसका आखरी दिन होगा । वह क्या जानना चाहता है . वह मुजे मालुम है । जब तक मे उनके पास वही जाता । तब तक बच्चो का वह कुछ नही करेगा ।

कस्बे के सभी लोग (एक साथ)

परम हमारे बच्चो को बचालो, कुछ होगा तो नही ।

परम

कस्बे के सभी लोगो से मे वादा करता हुँ ।
हमारे बच्चो और शिक्षकगण को कुछ भी नही होगा ।
आप सब लोग अपने-अपने घर जाओ ।
हम कुछ लोग ईस बारे मे सोच रहे है ।
(बुजुर्ग रतनसिंह, मुखियाँ अमरसिंह, शंशाक और परम का भी अपनी-अपनी जगह जाना ।)

सीन-82

आउटडोर, लोकेशन परम के घर की छत, समय आधीरात ।

(परम का अपने घर जाकर सोच मे डुबना ।

अंतरा से मिलना । ईस बात पर परम का घर की छत पर जाना ।
परम अपने घर की अलमारी से बोक्स निकाला ।
तुंरत घर की छत पर पहुँचना । उस चाँदी का बोक्स से दो मोती और एक अंगुँठी को अपनी पहली उँगली मे डालना ।
दो सुंदर मोती को हाथ मे लेकर चुँमना ।
(आसमान मे आधी रात को एक सुनहरा दिव्यप्रकाश फेल जाना । दो सुंदर पंखो को फैलाये हए श्र्वेतवस्त्रो से सज्ज अंतरा का परम के सामने उतरना ।)

अंतरा

परम कैसे हो,
ईतनी रात को हमे याद किया ।

परम

अंतरा कस्बे मे एक बडी मुसीबत आ चुकी है ।
जिस मुसीबत का जिम्मेदार मे खुद हुँ ।

अंतरा

परम क्या हुआ जो भी बात है, यह विस्तार से कहो ।
परम पाठशाला के बच्चो को बंधक बना लिया है , वह तुम्हारे रहस्यो के बारे मे जानना है ।

अंतरा

कौन है वह,

परम

वही जो सबसे पहेले कंचनजंगा की सबसे उँची चोटी पर जाने की कोशीश की थी । पठान अवतारसिंह के साथ जो विदेशी रिसर्च है । सुबस आठ बजे मिलना है ।

अंतरा

डेवीड जोन वही है । परम मैने तुम्हे पहेले ही कहाँ था ।
स्वार्थी और नीच बन चुका है ।
अपने फायदे के लिए वह कुछ भी कर सकता है ।

परम

अंतरा मे कीसी भी तरह ईस मुसीबत से बच्चो को बहार ले आउँगा । पर फीकर ईस बात की है ।
तुम्हारा सच कही सब के सामने गया तो,
तुम आसमान की परियो की दुनिया भी वास्तविकता मे हैं ।

अंतरा

सुनो परम तुम कल आठ बजे डेवीड जोन के पास जाओ । मेन दिये दो मोती और यह अंगुठी पहनकर लेकर जाना ।
अपनी दायी तरफ की जेब तो ह्दय पास बना होता है । वहाँ मेरे आसुँ से बने दो मोती रखना ।

परम

वह कीस लीए ,

अंतरा

परम हम प्रत्यक्ष तो सब के सामने नही आ सकते ।
तुम्हारे सिवा हमारी वास्तविकता कीसी को बता नही सकते । मगर परोक्ष हम से जो होगा । वह हम जरुर करेगे ।

परम

अंतरा काश मेने जिद नही की होती । मे भी डेवीडजोन, पठान अवतारसिंह और ग्यारह लोगो की तरह पागल होकर याददाश्त भुल जाता ।

अंतरा

जीवन है, तो रास्ते है, रास्तो मे अंच्छे बुरे लोग भी है, परेशानी, मुसीबत, दुख, सुख, सब्र, कर्मो की देन है ।
उसके सामने धैर्य, हिंमत, और सावधानी से करना ही होगा।
परम तुम सभी लोगो को अपने साथ समानता क्युँ कर रहे हो ।
परम तुम तुम्हारे नाम की तरह परम-पवित्र हो ।

परम

इतना मानती हो मुझे, ईस प्यार और मान के लिए शुक्रिया ।

अंतरा

हम अभी जा सकते ।

परम

मुस्कुराहट के साथ नही जा सकती,
मेरे कहेने पर रुक जाते तो यह मेरी खुशनसीबी होती ।
(परम के सामने अंतरा का अपनी आसमान की परियोँ की दुनिया मे जाने के लिए पँख फैलाना ।)

सीन-83
ईनडोर, लोकेशन, पाठशाला, टाईम-सुबह ।

(परम और डेवीड जोन का पहली बार
पाठशाला मे आमने-सामने मिलना ।)

परम
पाठसाला के बडे गेट के अंदर जाना ।

चीलकुट और नंदु
दोनो क परम के पास आकर कहना ।
तुम ही परम हो, ईस पाठशाला के मास्टर ।

नंदु
मास्टर बोले तो मास्टरजी मेरी पाठशाला मे मेरा मास्टर मुजे बहुत मारता था ।
होमवर्क न करने के कारण ।

परम
बहुत नही कम मारा था । इसलिए तुम आज गुंडे बन गये हो ।

नंदु
अब मास्टर बहुत बोलता है । चलो हमारे साथ डेवीड जोन के पास ।
(दोनो का परम को लेकर पाठशाला के अंदर जाना ।)

डेवीड जोन
आओ परम
सुबह से तुम्हारा ईंतजार कर रहा था ।

परम

सुनो तुम्हारे बारे मे कभी नही सोचा था । की तुम ईस तरह से बच्चो का सहारा लेकर मुज से मीलेगो । अगर तुम सीधे मेरे पास आकर आते मुजे किडनेप करते।

डेवीड जोन

बहुत खुब परम,
मेने कंचनजंगा पर्वत के बारे मे बहुत कुछ पढाँ है, सुना है, रिसर्च किया है ।
रिसर्च का आधा-अधुरा छोडना मेरी फीतरत नही ।

परम

अऱे बेवकुफ क्या जानना है किसलिए ।
ईसलिए की दुनियावाले तुम्हारे रिसर्च तुम्हारे नाम को याद रखे ।
ईस दुनियावालो के पास ईतना समय नही, उन्हे भुलजाने की आदत है ।

डेवीड जोन

ईस रिचर्च को जानकर ईतिहास के सुवर्ण पन्नो पे अपना नाम सुवर्ण अक्षरो से अंकित करना चाहता हुँ ।

परम

सुनो डेविड मे तुम्हारी बेवजह फिजुल बाते सुनना नही चाहता ।
तुम्हारे कहँने पर सभी बच्चो का पाठशाला के बहार भेज दो ।

डेवीड जोन

चीलकुट और नंदु तुम दोनो परम के कहने के अनुसार सारे बच्चो को पाठशाला के बहार उनके मा बाप के पास भेज दो । सिवाय दो बच्चो ।
(सारे बच्चो को पाठशाला के बहार भेजना)

परम

क्युँ, उन्हे भी सभी बच्चो के साथ बहार भेज दो ।

डेवीड जोन

तुम्हे मे पागल दिख रहा हुँ ।

तुम मुजे बहुत ही आसानी से सबकुछ बता दोगे । शंशाक दुबे की तरह, जुठी कहानी । तुम्हारी एक या दो कमजोरी मेरे पास होनी चाहिए ।

परम

कोन से दो बच्चो की बात कर रहे हो ।

डेवीड जोन

हँसते-हँसते हुए वो तुम्हारे दोस्त अब्दुल शेख की बच्ची तमन्ना बहुत मासुम और प्यारी है । दुसरा बच्चा जिसको तुम ने कुए मे गिरकर बचाया था ।

चीलकुट और नंदु

तमन्ना और रोशन को लेकर डेवीडजोन के पास खडे रहना ।

तमन्ना और रोशन

परम को देखकर डर डर कर कहँना ।
परम हमे अपने घर जाना है ।
ईस बुरे अंकल ने हमे अंधेरे कमरे मे बंध कर दिया था ।

परम

तुम जो चाहते हो , वह मे बताने के लिए तैयार हुँ । ईन छोटे बच्चो को घर जाने दो।

डेवीड जोन

अच्छा अच्छा ईन दो बच्चो को घर जाने दुँगा ।
परम अब तुम मुजे बताओ ।
कंचनजंगा पर्वत की सबसे उँची चोटी का, उस हिमशिला का जो भी रहस्य है । वह मुजे जानना है ।
(पाठशाला के अंदर गुंडो से गिरे परम का उन दो बच्चो को जंजीरो से बाँधकर देखना ।

परम

डेवीड जोन तुम्हे जो भी जानना है, वह सब सच मे तुम्हे बताने के लिए तैयार हुँ पर ईन दो बच्चो को कुछ भी नही होना चाहिए ।

सीन-84

आउटडोर, लोकेशन, पाठशाला के बहार, टाईम-दोपहर ।

(किशन पहेलवान और अब्दुल शेख दोनो का बच्चो को बचाने की कोशिस करना ।

अब्दुल शेख

किशन तुम्हारे सब पहेलवान पाठशाला के आँगन मे कल रात को चुप से चले गये।

किशन पहेलवान

बह सब अपनी-अपनी जगह बेठे हुए है । मेरे कहँने को ईंतजार कर रहे है ।

अब्दुल शेख

चलो किशन हम दोनो पाठशाला के अंदर तुंरत जाते है ।
एक रास्ता है, जो पाठशाला की दिवार के पास एक बडा बरगद का पेड है । हम वहाँ से अंदर जाएगे ।

किशन पहेलवान

वह रास्ता सही है । चला जल्द ही, वहाँ जाकर मेरे पहेलवानो को आगे क्या करना है, वह भी बताता है ।
(दोनो का पाठशाला के बहार पहुँचना । वहाँ से दोनो क अलग अलग दिशाओ मे जाना ।

अब्दुल शेख

पाठशाला को छत से चारो और देखना ।
डेवीड जोन के गुंडे पाछशाला की चारोऔर फेले हुए थे ।

किशन पहेलवान

लेटकर घास-पुस और जाडियो के सहारे पाठशाला के मेदान मे लेटे हुए पहेलवानो से मिलना ।

सभी पहेलवान

किशन क्या करना है । हमे बताओ ।

किशन पहेलवान

मेरे दोस्तो मेरे बंदो पाठशाला के बहार जो भी डेवीडजोन के गुंडे खडे हे उनका चालाकी एक-एक करके उनको पाठशाला के एक कमरे मे बंद करना है ।

सभी पहेलवान

अपनी सुज-बुज से काम पर लग जाना ।

अब्दुल शेख

जो पाठशाला की छत से होकर वहाँ पहुँचना जहाँ पे डेवीड जोन तमन्ना और रोशन को जंजीरो मे बांध रखा था और परम से बात कर रहा थ ।

(अपनी बच्ची को देखकर अब्दुल शेक का छत के उपर से डेवीड जोन पर कुदना ।

डेवीड जोन को पकडकर दो-चार मुक्के और लातो से पीटना ।

डेवीड जोन

अचानक से अपने पर हो रहे हमले से संभल न पाना । संभल कर अपने गुंडो से कहँना ।

पकडकर ईस अब्दुल के बच्चे को उसकी बच्ची के सामने मार-मार कर बेहोश कर दो ।

ईसकी ईतनी हिंमत, मुजे मारा ।

सात-आठ गुंडो का ।

अब्दुल शेख को पकडकर बहुत पीटना ।

अपनी अब्बु का तमन्ना मार खाकर देखकर भयभीत होकर रोने लगी । मेरे अब्बु को मत मारो । चिल्लाना दोडकर डेवीड जोन के हाथो को अपने दाँतो से काटना ।

डेवीड जोन

तमन्ना को पकडकर एक थप्पड लगाना ।

परम अब्दुल शेख

दोनो का गुंडो की पकड से छुटना डेवीड जोन को पकडकर बडी बेरहमी से मुँह और आँखो मे जोरदार पंच मार-मार कर कपडे फाड देना ।
सारे कमीने मेरी प्यारी बच्ची को मारा ।

डेवीड जोन

गुस्से से पागल होना सभी गुंडो को एक साथ बुलाकर परम और अब्दुल को जंजीरो से बाँध देना ।
(क्योकी डेवीड जोन ने तमन्ना और रोशन दोनो के गले पर चाकु रखा था ।)

परम

डेवीड तमन्ना को कुछ मत करना । हम कुछ भी नही करगे, अब्दुल शेख का अपने हाथो से रोकना ।

सीन-85
ईनडोर, लोकेसन-एक बडा सा
कमरा (होल-पाठशाला), टाईम-शाम ।

(डेवीड जोन का अपने कुछ दो-चार गुंडो को कहकर परम के साथ पाठशाला बडे होल मे ले जाना ।)

डेवीड जोन

देखो परम मेने तुम्हारे किए कितनी तैयारी की है ।

परम

होल मे चारो और देखना बहुत सारे लेटेस्ट ईलेकट्रोनीक उपकरण का मौजुद होना ।
यह सब क्या है, डेवीड

डेवीड जोन

परम वह सब मेड ईन जापान का एक उपकरण है ।
जो ईन्सान पर काम करता है । तुम्हारे सीन मे जो ह्दय है । सिर पे दिमाग है । यह उपकरण ईन दिलो-दिमाग का अभ्यास करता है ।
ईसलिए मे ईस उपकरण को लेकर आया हुँ ।

परम

बहुक सारी तैयारी के साथ आये हो चालीस गुंडो के साथ, ईस बडी सी मशीन लेकर क्या जानना है ।

डेवीड जोन

बहुत खुब परम
अब मेरी बात तुम्हारे समझ में आई ।

तीन गुंडे

बोस हम क्या करे,

डेवीड जोन

ईस बडे होल के सभी दरवाजे बंद करके बहार खडे अब्दुल और दो बच्चो पे नजर रखो ।

(तीन गुंडो का उस बडे होल के सभी चार दरवाजे बंद करना ।)

परम

यह उपकरण सच या झुठ तय करनेवाली मशीन है ।

डेवीड जोन

परम कुछ तो रहस्य है, जो तुम कंचनजंगा पर्वत से आने के बाद छुपा रहे हो ।
उस रहस्यो को जानना मेरा रिसर्च है ।

परम

मन ही मन सोचना ।
क्या किया जाये ।
यह डेविड जोन पुरी तैयारी के साथ आया ।
बहार दो बच्चे और अब्दुल शेख बचाना है ।
अपने हाथो को अपने शर्ट की दाये जेब मे डालना ।

डेवीड जोन

परम क्या सोच रहे हो ।
बस कुछ दस मिनिट मुझे तुम्हारे किए ईस मशीन को सेट करना होगा ।

परम

कुछ नहीं तुम्हे जो करना है, वह तुम करो, मे क्या कर सकता हुँ ।
हाथो मे दो मोती को लेकर आँखो पे लगाना फिर होठो से चुँमना ।
बाये हाथो की पहली उँगली मे पहनी अँगुठी को भी होठो से चुमना ।
(यह काम पता कर परम का चुपचाप खडे रहना डेवीड जोन के सामने ।)

डेवीड जोन

दस मिनिट अपने उकरणकी सिस्टम को चालु करने की कोशीश मे लग जाना की सिस्टम।
एक काँच से बडे चारो और बन्द केबीन के बीच रखी चेर पे बिठाना ।

परम

डेवीडजोन के कहने के अनुसार परम को उस काँच के केबीन मे जाना ।

डेवीडजोन

परम के सिर के आगे ओर पीछे गोल छोटे रबर के प्लग को फीट करना । जिस के पीछे वायर लगी थी । जो उस मशीन से जुडे थे ।
परम का शर्ट निकालकर दाई ओर ठीक हदय पर तीसला गोल रबर के प्लग फिट करना ।
बाकी के चार गोल रबर के प्लग को दाये-बाये हाथो पे और दाये-बाये पैरो पे लगाना ।
(सभी सात गोल रबर को पल्गो का ईस उपकरण से जुडे होना ।)
ईस ईलैदोनी का उपकरण का स्वीच ओन करने जाना ।
(ईस उपकरण की सारी नीली, पीली और ग्रीन लाईटो को चालु होना ।)

सीन-86

आउटडोर, लोकेशन-पाठशाला के बहार, टाईम-शाम ।

(पाठशाला के बहार खुले आसमान मे मैदान के बीच तीनो का अब्दुल शेख, तमन्ना, और रोशन का बंधे देखना । चीलकुट और नंदु का उनके साथीयो के साथ पहेला देना ।

किशन पहेलवान

अपने कुछ पहेलवानो के साथ पाठशाला के आँगन का यह दृश्य देखना । सुज-बुज से धीरे धीरे पाठशाला की दिवार के सहारे छुपकर अब्दुल शेख, दो बच्चो का कुछ दुर से देखना ।

नंदु

सबे चीलकुट मुझे जोरो से लगी है ।
चीलकुट क्या बे भुख ।

नंदु

अबे उल्लु दो नंबर मे जा के आता हु , दस पंदरह मीनीट लगेगा ।

चीलकुट

अबे ओई जल्दी जा यहाँ से बदबु आ रही है ।

नंदु

टोईलेट जाना य़ जैसे ही अंदर का दरवाजा बंद करना ।
बैसे ही बहार दरवाजा भी बंद होना ।

किशन पहेलवान

अब अंदर आराम करो ।

नंदु

अरे कौन है ।
खोलो ।

चीलकुट

थोडी देर के बाद ईतजार करना अरे यह अभी तक क्युँ नही आया ।
अबे जाकर देखो यह कहाँ अटक गया ।
दो गुंडो
पाठशाला के अंदर जाकर ढुँढना।

किशन पहेलवान

दोनो गुंडो को मार-मार कर हाथ-पैर बाँधकर कमरे मे बंद कर देना ।
(अब्दुल शेख और दो बच्चो के पास तीन गुंडे और चीलकुट का गन लेकर खडा देखना ।)

किशन पहेलवान

मौका देखकर चारो पर हमला कर गन और हथियारो को गिराकर चारो को मुक्के और लातो से मारना ।
दो-तीन पहेलना तीनो के हाथ-पेर बाँधकर अंधेरे कमरे मे बंद करना ।

किशन पहेलवान

चीलकुट का पकडकर जोरो जोरो से पीटना अब्दुल और बच्चो को जंजीरो से मुक्त करना ।

चीलकुट

मुझे मत मारो बताता हुँ
वह पाछशाला के बडे होल मे ले गया है ।

अब्दुल शेख

दो बच्चो को बहार खडे मुखिया अमरसिंह के पास छोडना ।
वापस पाठशाला के अंदर किशन पहेलवान के पास जाना ।

किशन पहेलवान

मेरे पहेलवानो तुम ईस कमरे मे बंधे गुडो पर नजर रखना ।
हम परम के पास जा रहे है ।
उसे बचाने

सभी पहेलवान

किशन तुम जाओ ।
हम सबी यहाँ मोजुद है ।

अब्दुल शेख-किशन पहेलवान

(दोनो)
पाठशाला के बडे होल तक पहुँचना ।
(वह पाठशाला का होल अंदर से बंद होना । मजबुत था । जिसे तोडा नही जा सकता । चारो-चार दरवाजे बंद थे । जो लोहे के बने थे ।)

सीन-87

ईनडोर– समय ,बडा सा होल-लोकेशन , शाम ।

(डेनीड जोन का परम से कंचनजंगा की सफर के बारे मे पुँछना ।)

डेवीड जोन

परम के हाथो मे ईन्जेक्सन लगाना । बेहोश करना ।
सुना है, की तुम अब्दुल शेख और किशन पहेलवान के साथ काँचनजंगा को सब से उँची चोटी पर जाकर आये हो ।
अपने सफर के बारे मे शुरु से बताओ ।

परम

हम सुबह चार बजे दो लोगो के साथ अब्दुल शेख और किशन पहेलवान तीनो कंचनजंगा के सबसे उँची चोटी पर जाने को तैयार हुए ।

डेवीड जोन

बताओ तुम लोग कैसे कंचनजंगा की सबसे उँची चोटी पर पहुँचे ।

परम

बहुत सारी आफतो से हुए ठंडी, बर्फीली हवाओ का तुफान का सामना कर हम तीनो उस जगह पर पहुँचे जहाँ से थोडे दुर एक बडी हिमशीला को देखना ।

डेवीड जोन

बोलो फिर आगे क्या हुआ ।

परम

वहाँ से बाकी का सफर मुझे अकेले तय करना था ।
अब्दुल शेख और किशन पहेलवान का कस्बे के नीचे वापर लौटना ।

डेवीड जोन

क्या तुम उस हिमशीला को छुआ । उसके आगे जा सके ।

परम

हिमशीला के सामने कुछ सोचने के बारे मे मेने उसे हिमशीला को छुआ । वैसे ही वह बडी हिमशीला ....।
(अचानक से उस होल की दिवालो के उपर लगी खिडकीओ मे से तेज हवाओ का तुफान आना ।)
उस तेज बहाव के हवाओ का तुफान आना । डेवीड जोन के ईलेकट्रोनीक उपकरण मे एक जोरदार ब्लास्ट होना ।
पुरे होल मे धुँआ, धुँआ हो जाना ।

डेवीड जोन

यह सबकुछ देखकर गुस्से से चिल्लाना ।
परम तुम भागने की कोशीश मत करना ।
थोडा सा धुँआ कम होने पर देखना ।
उस मशीन पे लगी चेर पर परम का गायब हो जाना ।

परम

डेवीड जोन पीछे से पकडकर मुँह और पेर मे मुक्के लगाकर पीटना ।
(दोनो के बीचकर जमकर लडाई होना । उस बडे से होल के बहार कस्बे के सभी लोगो का ईकठ्ठा होना । उस मशीन मे ब्लास्ट होने के कारण परम के लिए चींतिंत होना ।)

डेवीड जोन

(होल के अंदर)
एक बडी सी लोहे की मजबुत पाईप लेकर परम के सिर पर मारने के लिए आगे बँठना कुछ उपकरण के वायर डेवीडजोन के पैरो मे फँस जाना ।
अचानक से बेलेन्स बिगडने के कारण डेवीडजोन का गिरना ।
उसके चारो और उस ईलेकट्रोनीक उपकरण के वायरो मे करंट का चालु होना ।
उसी जगह लोहे की पाईप के साथ डेवीड जोन का गिरना ।

(450 वोल्ट के करंट से भले वायरो मे लोहे की पाईप लेकर गिरने के कारण डेवीडजोन को पुरे शरीर दाये-बाये हाथ-पैरो मे जोरदार करंट लगना । जोरो से चिल्लाना ।)

परम

यह सब देखकर दौडते हुए मशीन का मेईन स्वीच ओफ करना ।
खोजना ।
वहाँ पहुँच मे कुछ पाँच या सात मिनिट लगना ।
मेईन स्वीच चा बंद करना ।
डेवीड जोन के पास जाना ।

डेवीड जोन

पुरा मुँह टेडा हो जाना ।
हाथो मे, पेरो मे करंट लगने से लकवाग्रस्त हो जाना । कुछ बोल नही पाना ।
उठ नही सकना । चल नही सकना ।
(परम का उस बडे होल का दरवाजा अंदर से खोलना ।)

परम

तुरंत कस्बे के लोगो से कहँना ।
डॉ. गोविंद आहुजा को बुलाने के लिए कहँना ।
कुछ कस्बे के तीन-चार लोगो के सहारे डेवीड जोन को अस्पताल ले जाना ।
ईलाज के बाद उस पर बच्चो के किडनेपींग कैसे चलाना ।
कस्बे के सारे लोग परम तुम सही-सलामत होना ।
कुछ लगा तो नही ।

किशन पहेलवान

परम उन सारे गुंडो को पोलीस ने पक़ड लिया है ।
परम तुम्हे तो हाथ-और मुहँ से खुन निकल रहा है ।

अब्दुल शेख

पाठशाला के ओफिस से मेडिकल बोक्स लाना परम के मुँह और हाथो पर मलमपट्टी करना ।

(कस्बे के सारे लोग, बुजुर्ग रतनसिंह, मुखियाँ अमरसिंह चौधरी, सब छोटे-बडे बच्चो को सब व्यापारीगण का परम और उसके दो दोस्त किशन पहेलवान उसके पहेलवानो का, अब्दुल शेख का ईस मुसीबत से बचाने के लिए शुक्रीया करना ।
(ईस मुसीबत से सह कुशल बच्चो को, शिक्षकगणो को, बचाने मे जुडे सभी लोगो का परम के साथ सम्मान और नकड पुरस्करा प्रदान करना ।)

सीन-88

लोकेशन –परम के घर की छत, टाईम–चाँदनी रात ।

(परम का अपने घर की छत पे अंतरा से मिलना , एक दिन के बाद ।)

परम (चाँदनी रात में)

(ईस बडी मुसीबत से बहार निकलने के बाद अपने घर के बहार आँगन मे लकडी की खुरशी पर बैठकर परम का गहराई से सोचना ।
अगर अंतरा की दी गई दो अनमोल चीज एक अंगुठी और दो मोती डेवीडजोन या कीसी के हाथो मे लग जाते तो क्या क्या हो सकता था ।
यही सोचकर परम का उठकर अलमारी से चाँदी का बोक्स निकालकर अपने घर की छत पर जाना ।
अँगुठी को बाये हाथ की पहली उँगली मे पहनाना, दो मोती को आँखो से लगाकर होठो से चुमना ।
(आसमान मे एक सुनहरा दिव्यप्रकाश का फैलना । दो सुंदर श्वेतपंखो को फैलाते हुए सफेद वस्त्रो से सज्ज अंतरा का परम के सामने उतरना ।)

अंतरा

परम तुम्हारे बुलाने का ईंतजार कर रहे थे ।
अपनी सुज-बुज से तुमने कस्बे के लोगो, पाठशाला के बच्चो, पाठशाला के शिक्षकगण को डेविडजोन और उनके गुंडो से बचाया ।

परम

सिर्फ मेने नही , मेरे दो दोस्त, उनके साथीयो ने सब से मिलकत ईस मुसीबत का डटकर सामना किया ।

अंतरा

बस ईन सभी ने ही तुम्हारा साथ दिया ।

परम

अंतरा की आँखो को प्यार से देखकर कहँना । एक सुंदर सी दो श्वेत पँखोवाली खुबसुरत परी अंतरा ने भी साथ दिया ।

अंतरा

मैने कीस तरह से,

परम

तुम्हे सब मालुम है ।
यह भी मेरे मुँह से सुनना है । तो सुनो कैसे,
डेवीड जोन ने मुझे जब बेहोश किया । इसके बाद वह एक के बाद एक सवाल करता रहा ।
में उसको जवाब देता रहा ।
जब डेवीडजोन ने उस बडी हिमशीला के बारे मे पुछा । जैसे मे उस हिमशीला के बारे मे कहँन जाता ।
तब ही उस बंद होल मे एक तेज हवा का चलना । जैसे की अभी तुम यहाँ मेरे पास हो ।
मे बेहोश था पर दिलो-दिमाग से जागृत था ।

अंतरा

बुहत खुब, मेरी आने की आहट तुमे पहले से थी ।
ईतना प्यार करते हो, हम से ,

परम

आप के आसमान के चमकते तारो जितना अंतरा मे तुमसे प्यार करता हुँ ।

अंतरा

परम प्रत्यक्ष नहीं परोक्ष आने की बात की थी ।
ईसलिए तुम कुछ हिमशीला के बारे मे डेवीडजोन को बताते उसेके पहेल उसके सभी उपकरणमो हमने नाश कर दिया था ।

परम

एक बात तुमने बहुत पहेले सही कही थी ।
आज हमारी दुनिया मे ईन्सान बहुत स्वार्थी और नीच बना चुका है ।

अंतरा

क्या कर परम, ईन्सानो की अच्छाई-बुराई को हम साफ नहीं कर सकते जान नहीं सकते ।

परम

अपनी शर्ट की जेब से चांदी का बोक्स निकालना ।
अंतरा के आसुँ से बने दो मोती जिसमे थे ।
अपनी हाँथो की पहली उँगली से अगुँठी निकालकर चाँदी के बोक्स मे रखकर अंतरा को देना ।

अंतरा

परम यह दो चीज हमने बहुत प्यार से तुम्हे दी थी ।
तुम हमें वापस लौटा रहे हो..।
वही किंमत हे, हमारे प्यार ओर तुम्हारी नजरो मे ।
परम भीगी आँखो से नही अंतरा एसा नही है ।
तुमने जो बडे प्यार से दी गई अनमोंल सौगाद हम से संभल नही पायेगी ।
उसकी सुरक्षा मे अगर कोई भी लापरवाही होगी । तो यह गलत ईंसानो के हाथो मे लग जाएगी ।
आज डेवीडजोन जैसा कोई स्वार्थी ईसान फिर से यह सब कोशीश कर सकता है ।

अंतरा

यह बात तो सच है , तुम ईन्सानो को कुछ कहँ नहीं सकते ।
सोच को एक बार फिर से परम
यह दो चीज हमे वापस लौटने के बाद, हम कभी भी तुम से मिल नही पायेगे ।
दो-तीन दिन सोचने के बाद तुम यह फेसला कर सकते हो ।

परम

अंतरा मेने सोच लिया है ।
यह दो अनमोल चीज तुम्हे वापस लौटाना है ।

अंतरा एक बात कहनी थी
परम क्या बोलो ।

अंतरा

परम के पास जाकर दो पँखो को फैलाकर अपने दो सुंदर हाथो से परम को अपने गले से लगाना ।
जी भर कर प्यार करना ।
और कहँना ।
परम तुम अपने नाम की तरह परम पवित्र हो ।
अंतरा का परम से जुदा होना ।
(परम को दी दो अनमोल सोगात को परम के हाथो से वापल लेना ।
अंतरा की आंखे भीगी-भीगी होना । मगर परम का उस भीगी आँखो से आँसु गिरने से पहेल अपने हाथो से पोसना जिससे वह आँसु गिरने के बाद मोती न बन पाया ।

अंतरा

परम यह क्युँ किया ।

परम

अंतरा तुमने तो कहाँ था । की जब हमारे आँखो से आँसु गिरते है, तो वह सुंदर सच्चे मोती बन जाते है ।
ईसलिए भीगी आँखो को आँसु गिरने नही दिया ।

अंतरा

अपनी कही बाते मे खुद भुल गई ।
परम को आखरी बार जी भरकर देखना ।
अपनी दो श्र्वेतपँखो को फैलाये ।
अपनी आसमान की परीयो की दुनिया मे लौट जाना ।
परम
परम का कुछ देर चाँदनी रात मे नीले-आसमान मे चमकते तारो को देखना ।

✶✶✶✶✶✶✶